मुस्तफ़ा कमाल पाशा

غازى مصطفىٰ كمال پاشا

Borman Press Calcutta

लेखक—पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय।

महावीर ग़ाज़ी मुस्तफ़ा कमाल पाशाका
सचित्र जीवन-चरित्र ।

लेखक

पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय ।

प्रकाशक

रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर—

"वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०,"

३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

मार्गशीर्ष, स० १९७९ वि०

प्रथम संस्करण २००० प्रति] [मूल्य २।), रेशमी जिल्द २।॥)

वर्तमान युग स्वाधीन साधनाका युग है। इसमें संसारके सारे पर-तन्त्र देश अपनी-अपनी मोह-निद्राको भङ्गकर, सदियोंसे पड़ी गुलामीकी बेड़ियां तोड़कर, युद्धकी भेरी बजाते हुए, अपने उन शत्रुओंसे लड़ रहे हैं, जिन्होंने उनकी सार स्वरूपिणी स्वतन्त्रता अपहरण करने का पाप किया है।

स्वाधीनता या स्वतन्त्रता जीव, जाति और देशका मर्मस्थल है। इस पर हाथ दिया, कि प्रलय उपस्थित हो जायेगा! आप किसी आदमीकी हत्या कर डालिये, पर उसे परतन्त्र भूलकर भी न बनाइये। यदि बनायेंगे, तो वह जिस दिन भी अपने स्वरूपको समझेगा, जिस दिन भी अपने अधिकारोंको पहचानेगा उसी दिन आपका प्राण शत्रु हो उठेगा। आप उसे हरचन्द दबायेंगे, पर वह किसी तरह भी न दबेगा। यदि आप उससे अधिक शक्तिमान् हैं और इसलिये उसे प्राणदण्ड देंगे, तो वह मरकर भी आपको मार देगा। क्योंकि आपने उसे परतन्त्र बनाकर उसीसे शत्रुता नहीं की, वरन् सबको समान अधिकार प्रदान करनेवाले प्रकृति और परमात्मासे भी शत्रुता की है।

जो राजगण स्वार्थ मदसे मत्त होकर किसी जाति या देशके भोग्य अधिकारोंको स्वयं गपक बैठते हैं, उसकी स्वाधीनतासे स्वयं लाभ उठाते हैं, एक दिन उस जाति द्वाराही उनका नामोनिशान मेट दिया जाता है।

उस दिन यूरोपमें रणभेरी बजी थी। विश्व विजय की उच्चाकाङ्क्षाको छातीमें छिपाये जर्मन सम्राट्ने अखिल यूरोपसे युद्ध ठान दिया था। जिन राष्ट्रोंका उसकी शक्ति-सामर्थ्यपर अचल विश्वास था, वे भी अपने हितैषियोंके हित वाक्योंकी अवहेलनाकर उसके साथी हो लिये थे। किन्तु पासा उल्टा पड़ा! जो जाति संसारके मुँहसे कामिल जादूगर साबित हो चुकी थी, उसने अपनी चालोंसे जर्मनीको पछाड़ दिया! साथ ही साथ उसके साथी भी पराजित माने गये।

अब आयी पराजितोंसे क्षति-ग्रहणकी बारी। किन्तु विजेताओंने न्याय

का नक्कारा पीटते हुए भी, क्षति लेते समय अन्यायकीही पराकाष्ठा कर दी। ये करने गये थे क्षति पूर्ति, पर कर बैठे अपने स्वार्थकी उदर दरीकी पूर्ति।

पराजितोंमें मुसल्मान जगत्का धर्म गुरु तुर्कीभी था। विजेताओंने इससे अपनो क्षति पूर्ति करते समय, इसका सारा साम्राज्यही गपक लिया। तुर्क-सम्राट् सरल थे, इसलिये कूट नीतिके पुतले मित्र राष्ट्रोंकी चालोंको निरा न्याय समझकर उन्होंने उस नुक्सान-नामेपर स्वीकृति दे दी। किन्तु उनका यह काम तमाम तुर्कों को अनुचित जान पड़ा, अतएव वे उस स्वीकृति का विरोध करने लगे। विजेताओंने इस विरोधको विष दृष्टिसे देखा! किन्तु करही क्या सकते थे? साहस और शक्तिके पहलेसे लालेही पड़े हुए थे। आखिर जादूसे काम लिया गया। धन-बल हीन यूनानको दम-पट्टी देकर तुर्कोंसे भिड़ा दिया गया।

तुर्कोंमें बहुत दिन पहलेसेही एक युगावतारिक पुरुष राजतन्त्रमें दोष देख, प्रजातन्त्र स्थापन या शासन-सुधारके लिये क्रान्ति करनेका उपक्रम कर रहा था। इस पुरुषका नाम था "गाजी मुस्तफा कमाल पाशा।" कमाल पाशाने पहलेसेही प्रभूत शक्तिका सञ्चय कर रखा था, अतएव उन्होंने अपनी जाति और अपने देशका गौरव बनाये रखनेके लिये, आत्म त्यागका समय उपस्थित देख, शत्रुओंका बड़ी वीरताके साथ सामना किया। शत्रु न टिके और अधिकृत देशोंको छोड़ प्राण-लेकर भाग गये। कमालकी करामातसे तुर्को तुर्कियाकाही रह गया।

यदि आज तुर्क-त्राता गाजी मुस्तफा कमाल पाशा तुर्कीमें न रहे होते, तो तुर्क साम्राज्यके संसारसे नेस्तनाबूद होनेमें बाकीही क्या रहा था? उन्होंने जिस अद्भुत कौशल द्वारा अपने देश और अपनी जातिका गौरव बनाये रखा, वह संसारके समस्त परतन्त्र देशोंको स्वतन्त्र बननेका सुन्दर सबक है।

ऐसे महावीरकी महिमामयी जीवन-कथा लिखकर, स्नेहास्पद पण्डित कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्यायने हिन्दी जगत्का महान् उपकार किया है। बङ्गाली होकर भी हिन्दीके लिये उनका यह प्रयत्न वास्तवमें प्रशंसनीय है।

हमने इस पुस्तकको साद्यन्त पढ़ा है और पढ़कर हम यह कहे बिना नहीं रह सकते, कि कमालकी कथा लिखकर कार्त्तिक बाबूने अपनी कलमको कृतार्थही नहीं किया, वरन् साहित्यमें एक सुन्दर सामग्री उपस्थित की है।

कलकत्ता,
४—१२—१२

नरोत्तम व्यास।

निवेदन

आजसे कई वर्ष पहले गाज़ी मुस्तफा कमाल पाशाका नाम भारतवासियोंको विदित नहीं था और न टर्कीके लोगही यह बात जानते थे, कि इस सामान्य सैनिक अधिकारीमें, इस मामूली तुर्क युवकमें, पतनोन्मुख तुर्क-जातिको दासत्वकी गहरी गारमें गिरनेसे एकाएक बचालेनेकी शक्ति भरी हुई है; परन्तु जब समय आया,—परीक्षाका अवसर उपस्थित हुआ, तब उसी सामान्य मनुष्यने दुनियाको दिखा दिया, कि स्वतन्त्रता-प्रिय वीर तुर्क जाति अब भी सर्वथा निर्वीर नहीं हुई है— आज भी उसके अस्ताचल गमनोन्मुख भाग्याशुमालीको अपने पराक्रमसे पुनरावर्तित करनेवाला वीर विद्यमान है।

अस्तु, इस वीर तुर्क युवकका जीवन विषयक बातें जाननेके लिये भारतवासियोंके मनमें इच्छा उत्पन्न होना बिलकुल स्वाभाविक है। अत अपने देशवासियोंकी इसी इच्छाको पूर्तिके लिये हमने यह छोटीसी पुस्तक लिखनेका प्रयास किया है। इस काममें हमें लाहोरसे निकलनेवाले दैनिक 'आफताब' के विद्वान् सम्पादक मौलवी वजाहत हुसेन साहबकी उर्दू में लिखी "मुस्तफा कमाल पाशा"की जीवनीसे तथा हाफिज अब्दुस्समद साहब 'बनारसी'से बड़ी सहायता मिली है, जिसके लिये हम उन्हें हृदयसे धन्यवाद देते हैं। साथही सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र "भारत-

विषय-सूची

विषय— पृष्ठ

मुस्तफ़ा
कमालपाशा

स्थापना १

१७

८

पैगम्बर मुहम्मद

दक्षिण पश्चिम भाग,

फारस, सीरिया, अर्मे-

सुसङ्गठित

कोई सुव्यवस्थित या

निवासी स्वभावतः

घूमा करते थे।

वे पसन्द नहीं करते थे।

असबाब लादकर

अपने बाल बच्चोंको साथ लेकर, अधिकतर लोग देश विदेशोंमें भ्रमण किया करते थे। वे जहाँ जाते, वहीं तम्बू खेमे खड़े करके कुछ दिनोंके लिये ठहर जाते।

उस प्राचीन समयका इतिहास दुर्लभही नहीं, अप्राप्य भी है। संसारके सभी देशवासियोंका प्रारम्भिक इतिहास इसी प्रकार दुर्लभ है और सभी जातियोंकी प्रारम्भिक दशा प्राय ऐसीही रही है। चीन और यूनान आदि देशोंके कुछ भ्रमण शील इतिहास लेखकों तथा मुसलमान धर्मकी स्थापना कालके वृत्तान्तोंसे उस प्राचीन समयकी परिस्थितिका थोडा बहुत हाल जाना जाता है। उनके धर्मके विषयमें भी यद्यपि विशेष कुछ हाल नहीं मालूम होता, तथापि मुसलमान धर्मकी स्थापनाके कारणोंसे ही यह बात स्पष्ट रूपसे जानी जाती है, कि वहाँ मूर्त्ति पूजा, किसी-न किसी रूपमें, अवश्य प्रचलित थी। सम्भव है, हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि भारतवर्षीय धर्म सम्प्रदायोंके प्रचार और प्राबल्यके कारणही इन देशोंमें मूर्त्ति पूजाकी प्रथा प्रचलित हो गयी हो।

क्रमश जन संख्याकी वृद्धि, सभ्यताका विकास आदि स्वाभाविक तथा प्राकृतिक कारणोंसे लोग निश्चित रुपसे एक एक स्थानपर बसने लगे। कभी कभी जीवन निर्वाहके लिये आवश्यक वस्तुओंका संग्रह करने, व्यवसाय करने अथवा ऐसेही कामोंके लिये वहाँके लोग दल बाँध-बाँधकर निकलते थे। परन्तु अब घूमते फिरते रहनेपर भी वे अपना एक निश्चित और स्थायी

आवास स्थान बना चुके थे। क्रमशः बसनेवाले लोगोंमें मुखिया या सरदार होने लगे। ऐसे मुखिया या सरदार अपने दलवालोंमें सर्वापेक्षा अधिक शक्ति सम्पन्न और प्रभावशाली होते थे। प्रत्येक दलवाले अपने मुखियाकी बात मानते और उनके कहे अनुसार काम करते थे। ज्यों-ज्यों इन दलोंका परस्पर मेल होता गया, त्यों त्यों इनका आकार और बल भी बढ़ता गया। अन्तमें येही मुखिया राजा और शासकके रूपमें आ गये। बहुतसे दलोंके एकत्र मिल जानेसे समाज-संगठन तथा राज्योंकी स्थापना होने लगी और धर्म भाव भी बलवान् रूप धारण करने लगा।

इस्लाम-धर्मकी स्थापना

लोगोंमें तात्कालिक धर्मभाव (बुत परस्ती)की उत्तेजना संचलित होनेके कारणही पैगम्बर मुहम्मद साहबको, इस्लाम धर्मकी स्थापना और प्रचारमें, बड़ी-बड़ी कठिनाइयों और विघ्न बाधाओंका सामना करना पड़ा, परन्तु उसकी स्थापना हो चुकनेपर, कुछही दिनोंके अन्दर, अरब निवासियोंके जातीय चरित्र, चाल ढाल, रीति नीति, आचार-व्यवहार आदिमें बहुत परिवर्त्तन हो गया। साथही उनमें नव स्थापित इस्लाम धर्मका विशेष रूपसे समावेश हुआ। इसके पहले अरब, ईरान आदि देशोंके निवासियोंका कोई जातीय धर्म नहीं था। पैगम्बर मुहम्मद साहबनेही उन्हें एक धर्म सूत्रमें बांधा। अपने अनुयायियों को उन्होंने राज-नीति और धर्म नीतिकी एक मजबूत डोरीसे बांध-

कर एकत्र किया। उन्होंने अपनी इस एकीकरण प्रणालीको किसी स्थान विशेष या देश विशेषमें सीमाबद्ध करके नहीं रखा था। उन्होंने उसे संकुचित रूप न देकर बड़ाही व्यापक रूप दिया था। इस धर्मकी स्थापनाके साथही अरब वासियोंकी सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक अवस्था बहुत उन्नत होने लगी। अरब वासियोंके पूर्वजोंकी जो दल बन्दियाँ थीं, उनमें जो भेद भाव था, जो मत मतान्तरके झगड़े थे और जो विद्वेष-वैमनस्य चलता था, उसे मुहम्मद साहबने केवल दूरही नहीं कर दिया, बल्कि उनके स्थानपर एक राष्ट्रीय धार्मिक भाव स्थापितकर,वहाँके भिन्न भिन्न समाजों, सम्प्रदायों और जातियोंकी समस्त शक्तियोंको एक नवीन स्रोतमें बहा दिया। केवल अरबवालोंकोही नहीं, आस पासके उन अन्य देशवासियोंको भी, जिन लोगोंने इस्लाम धर्मको कबूल किया, मुहम्मद साहबने समानताकी दृष्टिसे देखा और समानताके समस्त अधिकार दिये।

समस्त इस्लाम धर्मावलम्बियोंमें मुहम्मद साहबने जिस ऐक्य सूत्रके बलसे एकता उत्पन्न की, वह आज भी हम कुरान शरीफ़में देख सकते हैं,———

" إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم "

अर्थात्—"इस्लाम धर्मपर विश्वास रखनेवाले सभी श्रेणीके मनुष्य परस्पर भाइ भाई हैं, इसलिये हे धर्मनिष्ठ! तुम ऐसी चेष्टा करो, कि तुम्हारे अन्दर फूटका बीज किसी प्रकार बसने न पाये।"

मुसल्मान-धर्ममें—मुसल्मान जातिमें—एक बड़ी विशेषता है। वह यह, कि जातिका जो व्यक्ति धर्म गुरु होता है, वही उस जाति या समाजका शासक और राजा भी हुआ करता है।

प्राचीन भारतवासियोंमें धर्माधिपतिका दर्जा शासनाधिपतिकी अपेक्षा भी ऊँचा माना गया था। स्वय राजा लोग भी उनकी पाद पूजा करते थे। परन्तु मुसल्मान धर्मकी स्थापनाके समयसेही उसका धर्म गुरु और शासक एकही व्यक्ति हुआ करता है। इसका कारण यह है, कि मुसल्मान धर्म का प्रचार करनेके साथ ही-साथ पैगम्बर मुहम्मद साहबने मदीनेमें एक सम्पूर्ण स्वतन्त्र राजनीतिक सम्प्रदायके कर्णधारका भार अपने ऊपर ले लिया था। तभीसे इस्लाम-धर्म एक राजनीतिक सम्प्रदायका धर्म समझा जाने लगा। धर्माधिपति जब किसीको इस्लाम धर्मकी दीक्षा देते थे, तब वे शासककी हैसियतसे उसे समाजकी शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित रखनेका उपदेश भी दिया करते थे। जो लोग मुसल्मान धर्मका अवलम्बनकर चुके थे, उनका कहना था, कि "ईश्वरके दूत यानी पैगम्बर और अन्यान्य धर्माधिकरणोंकी आज्ञाका पालन प्रत्येक मुसल्मानको सच्चे दिलसे करना चाहिये।"

खलीफाकी आवश्यकता

इस तरह देखा जाता है, कि अरब देशके आदि निवासियों जैसे असभ्य, विश्टृङ्खलित और धर्म ज्ञान शून्य मानव-समाजमें भी मुहम्मद साहबने कुछही वर्षों के अन्दर धार्मिक उत्साह

उत्पन्न कर, उनके समाजका स्वरूप ऐसा सुश्रृङ्खलित बना दिया, कि जिसकी आशा भी नहीं की जा सकती थी।

समाज संगठन हो चुकनेके बाद उनके तमाम अनुयायी उनके उपदेशोंको 'खुदा तालाका हुक्म' या 'ईश्वरदत्त आदेश' समझने लगे। कुछ कालके अनन्तर स्वाभाविक रीतिसे इस बातकी आवश्यकता हुई, कि उनके प्रत्येक काममें सहायता करनेके लिये एक सहकारी नियुक्त किया जाये। निश्चित हुआ, कि जो आदमी इस पदपर नियुक्त किया जाये, वह समाजके लोगोंके न्याय-अन्यायका विचार करे, सर्व साधारणके लिये ईश्वराराधनामें मुखिया या प्रधानका कार्य करे और इस्लाम-धर्मकी रक्षाके लिये उसके विरोधियोंसे संग्राम करे।

मुहम्मद साहबके जीवन-कालमें स्वयं मुहम्मद साहबकी आज्ञासेही सब काम काज होते थे; पर उनकी मृत्युके बादसे उनके स्थानपर रहकर उनके प्रतिनिधि-स्वरूप कार्य-संचालन करनेवाले खलीफा कहलाने लगे।

पैगम्बर साहबकी मृत्युके पश्चात् ऐसे योग्य व्यक्तिके चुनावका प्रश्न उठा, जो जनताको धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मार्गोंका प्रदर्शन करा सकता हो। इस प्रकारका प्रश्न मुहम्मद साहबके मनमें कभी उठा नहीं होगा, यह नहीं कहा जा सकता, बल्कि इसका प्रमाण पाया जाता है, कि उन्होंने जान-बूझकर इस प्रश्नको इस्लाम-धर्मावलम्बियोंके विचाराधीन छोड दिया था। मुसलमान जगत्‌में यह किंवदन्ती बहुत दिनोंसे प्रचलित

है, कि तुफैलका पुत्र अमीर एक बार मुहम्मद साहबके पास गया और उसने उनसे पूछा,—"जनाब! अगर मैं मुसल्मान धर्मका अवलम्बन करूँ, तो आप मुझे किस कोटिमें स्थान देंगे! क्या आप अपने पश्चात् इस धर्म-सम्प्रदायका शासनाधिकार मुझे प्रदान कर सकते हैं?" मुहम्मद साहबने अमीरके इस प्रश्नके उत्तरमें कहा था,—"यह कुछ मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति तो है नहीं, कि मैं इसे उठाऊँ और आपके हाथोंमें दे दूँ।" इस वाक्यसे उनके हृदयकी महत्ताका पूर्ण परिचय मिलता है।

८ जून सन् ६३२ ई०को पैगम्बर मुहम्मद साहब इन्तकाल कर गये। उनकी मृत्युके पश्चात् उनके इष्ट मित्रोंने किसी व्यक्तिको उनके उत्तराधिकारीके पदपर अभिषिक्त करनेके लिये एक सभा की। इस सभामें सर्व सम्मतिसे मुहम्मद साहबके अत्यन्त विश्वासपात्र हिज़रत आबू बकर सिद्दीक उनके उत्तराधिकारी निर्वाचित हुए।

यह मुसल्मानी सल्तनत, जो मदीनेमें कायम हुई, किस तरह तुर्कोंके हाथोंमें आयी, इसका कमसे कम संक्षिप्त विवरण जाने बिना, पुस्तकके मुख्य विषयकी ओर अग्रसर होनेसे, सब बातें स्पष्ट समझमें नहीं आ सकतीं। इसलिये यहाँ इस्लामी सल्तनतके इतिहासकी केवल बहिर्रेखाका दिग्दर्शन मात्र करादेना उचित और आवश्यक जान पड़ता है।

चार ऐतिहासिक कालांश

प्रथम कालांश

सन् ६३२ से सन् ६६१ तक — मुसलमान इतिहास लेखकोंने मुहम्मद साहबके पश्चात्की ऐतिहासिक घटनाओंको, चार कालांशोंमें विभक्त किया है। इनमें पहला कालांश सन् ६३२ ई० से आरम्भ होकर सन् ६६१ ई० में समाप्त होता है। इस कालांश में जो व्यक्ति खलीफा होता, वही धर्म-गुरु और राजा या शासक-का काम भी करता था। इन तीस वर्षोंमें पैगम्बर मुहम्मद साहबके पश्चात् चार खलीफा हुए—(१) आबू बकर सिद्दीक (२) उमर बिन खत्ताब (३) उस्मान् बिन अफ्फान और (४) अली बिन अबी तालिब। ये लोग खुलफा ए राशदीन कहलाते थे। इस्लामके इतिहासमें यह समय सर्वाधिक पवित्र और सर्वोच्च आदर्शतक पहुँचा हुआ था। परन्तु यह परिस्थिति बहुत दिनोंतक स्थायी रूपसे रह न सकी।

इस अवधिमें जितने खलीफा हुए, वे प्रत्येक धार्मिक प्रथा और धार्मिक क्रियाका यथारीति पालन करते रहे। वे दीना-दरिद्रीन प्रजाजनके समान जिन्दगी बसर करते थे। विला-सिता और भोगेच्छा उनके पास फटकनेतक न पाती थी।

अमीर-उमरा और अर्बिस्तानके बाहरवाले जब कभी खलीफाको देखने आते, तो वे खलीफा और सर्व साधारणकी वेश-भूषामें कोई अन्तर न देखकर बड़े अचम्भेमें पड जाते थे। इतिहास लेखकोंका कहना है, कि ये शहरके बाहर, एक एकान्त स्थानमें झोपड़ेके अन्दर रहते, जमीनपर केवल साधारणसी चटाई बिछा कर सोते-बैठते और मामूली कपड़े पहनते-ओढ़ते थे। उनकी यह सादगी और फकीराना चाल ढाल अबतक मुसलमान जगत्का आदर्श समझी जाती है। आज भी मुसलमान संसार अपने उन त्यागकी प्रतिमूर्त्ति स्वरूप धर्माचार्योंकी शत मुखसे प्रशंसा करता और आँसू बहाता है।

द्वितीय कालांश

सन् ६६१ से सन् १२५८ तक इस्लाम राज्यकी यह परिस्थिति मदीनेके अन्तिम खलीफा अली साहबके समयतक ही रही। उनके बादही अर्थात् सन् ६६१ ई० सेही अवस्था बहुत कुछ बदलने लगी। अब इस्लाम सत्ताका दूसरा कालांश आरम्भ हुआ। सन् १२५८ के अन्ततक इस कालांशकी अवधि मानी गयी है। इस अवधिमें इस्लाम जगत्को पथ प्रदर्शन करनेका भार अर्बिस्तानके एकाधिपत्य शासकके हाथोंमें आ गया। खलीफाका पद अब वंशगत अधिकारीको मिलने लगा। खलीफा पहले जिस प्रकार न्याय अन्यायके विचारक और परम स्वार्थ-त्यागी फ़कीर होते थे, अब वह बात न रही। इस वंशके पहले खलीफा

मोआवियाह बिन-अबी सुफियान थे *। सबसे पहले इन्होंनेही अपने जीवन कालमें अपना उत्तराधिकार खलीफाका पद अपने पुत्र मजीद बिन मोआवियाहको प्रदानकर खलीफा निर्वाचनकी प्रथाको सदाके लिये तोड़ दिया। इस समयके खलीफोंमें प्राचीन खलीफा उमरकी तरह सादगी और अलीकी तरह दयालुताका भाव न रहा। अब विदेशी मुसल्मानोंको समानताका अधिकार देना बन्द कर दिया गया! यद्यपि इस्लाम धर्मके सिद्धान्तोंमें यह बात मौजूद थी, कि कोई व्यक्ति, चाहे वह किसी देशका निवासी क्यों न हो, यदि उसने मुसल्मानी धर्म कबूल कर लिया है, तो उसे भी वे सब अधिकार मिलने चाहियें, जो अरब निवासियोंको प्राप्त होते हों।

प्रत्येक देश, जाति और राष्ट्रकी उन्नतिकी एक सीमा होती है। उस सीमातक पहुँचकर उसका पतनोन्मुख होना प्रकृतिका एक अटल नियम है। इतिहास इसका ज्वलन्त प्रमाण है। अरबोंकी उन्नति भी जब चरम सीमातक पहुँच गयी, तब वे भी धर्म विगर्हित कार्य करने लगे और लक्ष्य भ्रष्ट पथिककी तरह अग्रसर होने लगे। कहते हैं, "प्रभुता पाई काहि मद नाहीं। अरबिस्तानमें जिस विश्व व्यापक अद्वैत वादके प्रचारके लिये, मनुष्य-जातिको समानताके अधिकार देनेके लिये, भ्रातृ भावके विस्तारके लिये और शासनमें प्रजाको अधिकार देनेके लिये

* यह खानदान बनू उमया कहलाता है, इस खानदानके १४ शासक हुए। अन्तिम खलीफाका शासन सन् ७४४ ई० तक रहा।

दीन दुखियोंकी सहायताके लिये जगह जगह दातव्य औषधालय, विद्यालय और अन्न-सत्र आदि बनाये गये थे।

स्वतन्त्र विवेकके मनुष्योंका इन खलीफोंके यहाँ यथेष्ट आदर-सत्कार होता था। मानवी शक्तियोंके विकासके लिये खलीफाकी ओरसे यथेष्ट सहायता दी जाती थी। सीमान्त प्रदेशोंमें शत्रुओंको घुसने न देनेके लिये कड़ी किलेबन्दी रहती थी। अगर कभी कोई शत्रु सीमाके अन्दर प्रवेश करनेका साहस भी करता, तो उसका बड़ी दृढ़ताके साथ सामना किया जाता था और आक्रमणकारियोंको उनके बल तथा सुसंगठित सैन्य-दलसे हार खानी पड़ती थी।

मुसलमान जगत्‌ने इस समय केवल राजनीति विज्ञानमेंही उन्नति नहीं की थी, वह अध्यात्म विद्या, गणितशास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र आदिमें भी आगे बढ़ा हुआ था। इस समय प्राय सारा यूरोप अज्ञानान्धकारसे ढँका हुआ था। इस वंशके अन्तिम खलीफाका नाम 'अल मुस्तासम बिल्लाह' था और इस वंशके हाथोंमें सन १२६० के मध्यतक शासनाधिकार रहा।

परन्तु सन १२४३ से १२६० ई० तक इनका शासनाधिकार किसी सुव्यवस्थित रूपमें न था। वास्तवमें इस समय इस्लाम-साम्राज्यका प्राय सम्पूर्ण शासनाधिकार मिश्रके मामलुक सुल्तानों तथा मिश्र देशके कई अन्य राज वंशोंके हाथोंमें आ गया था।

अब्बासिया खानदानके खलीफोंने अपनी राजधानी 'बागदाद' नामक स्थानमें बनायी थी। आजकल बागदादको 'बगदाद' कहते

हैं, परन्तु वास्तवमें इसका नाम 'बागदाद' अर्थात् 'न्यायकी वाटिका' था। सन् १२५८ ई० में हलाकू नामक एक तुर्क सरदारने दल बल सहित बागदादपर आक्रमण किया। इसने कई दिनोंतक बागदादमें कत्लेआम जारी रखा, तमाम शहरको तहस-नहस कर डाला। बड़ी-बड़ी इमारतोंमें आग लगा दी। अन्तमें लूट मार करके जो कुछ हाथ लगा, उसे लेकर वह फिर अपने घर लौट गया। इतिहास लेखकोंका कहना है, कि इस भीषण आघातके कारण इस्लाम जगत्‌की जड़ हिल गयी। कुछ इतिहास लेखकोंका कहना है, कि हलाकूके इस आक्रमणसे इस्लाम साम्राज्य की जो भयङ्कर क्षति हुई, वह आज भी पूरी नहीं हो सकी है।

भारतका धन वैभव देखकर जिस प्रकार पठानों, मुगलों, तातारों और तुर्कोंने बार-बार आक्रमण किया और वे भारतकी शान्तिको भङ्ग करके, राजधानियों और तीर्थ-स्थानोंपर आक्रमण करके, जो कुछ हाथ लगा, उसे लेकर फिर अपने घर लौट गये थे, उसी प्रकार इस्लाम साम्राज्यका धन-वैभव भी विदेशियों और विजातियोंकी आँखोंमें गड़ने लगा था और कितनीही बार अपने लोभको संवरण न कर सकनेके कारण उन्होंने मुसलमान-साम्राज्य पर आक्रमण भी किया था, पर उनके आक्रमणोंसे मुसलमान जगत्‌का विशेष कुछ नुकसान नहीं हुआ था; परन्तु अन्तमें हलाकूके इस आक्रमणसे—जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है—मुसलमान साम्राज्यका मेरुदण्ड टूटसा गया। वह इस भयङ्कर आघातको सह न सका।

तृतीय कालांश

सन् १२६१ से इसके बाद इस्लाम साम्राज्यके इतिहासका तीसरा सन् १५१७ तक कालांश प्रारम्भ होता है। इसकी अवधि तीन सौ वर्षोंकी अर्थात् सन् १२६१ ई० से लेकर सन् १५१७ ई० तक मानी जाती है। इस कालांशके प्रारम्भमें खलीफोंके हाथमें शासनाधिकार केवल नाम मात्रका रह गया था। यद्यपि उस वंशका सर्वथा नाश नहीं हुआ था और न वे मुसलमान जगत् के आदर्श पदसे गिरे ही थे, तथापि सन् १२५८ वाले बागदादके कतलेआमसे उनकी सारी शक्ति क्षीण हो गयी थी। इस बीचमें मिश्रके मामलुक सुल्तानों तथा कई राजवंशों द्वारा मुसलमान-जगत्का शासन होता रहा। बेइबार्स* नामक माम-

*बेइबार्स प्रथम और बेइबार्स द्वितीय नामके दो मिश्री शासक हुए थे। बेइबार्स प्रथम "बाहरी मामलुक" नामक सम्प्रदाय विशेषका नेता था। सलाहोन नामक कोई मिश्री राजा था। ये बाहरी मामलुक सम्प्रदायवाले पहले उसी सलाहोनके उत्तराधिकारी राजाओंके शरीर-रक्षकका काम करते थे। यह तुर्किस्तानसे लाये हुए गुलामोंका एक दल था। बेइबार्सने धर्म द्रोहियोंको परास्त किया। इसके बाद इन्होंने कुतूज नामक एक राजाको मारकर उसकी गद्दी छीन ली। अन्तमें अपने अधीनस्थ सैनिकों द्वारा यह राजा बनाया गया। इसने शासन-दण्ड ग्रहण करके सबसे पहले सीरियामें होनेवाले एक अन्तरंग झगड़ेको दबाया, फिर इसीने चंगेजखांके पौत्रके आक्रमणसे मुसलमान-संसारकी रक्षा की। इसी बेइबार्स प्रथमकी बात यहां लिखी गयी है।

3268

लुक सुलतानको जब पता लगा, कि अब्बासिया खानदानके लोग अब भी जीवित हैं और अपने कुछ थोडेसे अधिकारोंके साथ सीरियामें मौजूद हैं, तब उन्होंने उनको बुलानेका विचार किया। उनकी इच्छा थी, कि अब्बासिया वंशके जो खलीफा आज भी जीवित हैं, उन्हें बुलाकर उन्हेंही पुन मुसल्मान साम्राज्यका शासन भार दिया जाये। वेही मुसलमान जगत्के सिरमौर माने जाने योग्य व्यक्ति हैं। वेइबार्सकी यह भी इच्छा थी, कि उन्हें खलीफाके पदपर अभिषिक्त कराके आप उनसे हार्दिक आशीर्वादोंके साथ विधिवत् सुलतानकी उपाधि ग्रहण करें।

अनन्तर सीरियासे अब्बासिया खानदानके खलीफा अहमद ताहिर बडी शान शौकतके साथ मिश्रकी तत्कालीन राजधानी कैरोमें बुलाये गये। उनके कैरो पहुँचनेपर वहाँके सुल्तान राजोचित वेश भूषा और सैन्य सामान्तोंके साथ उनकी अगवानीके लिये आगे आये। राज दरबारमें पहुँचनेपर वे बडे सम्मानके साथ उच्चासनपर बैठाये गये। खलीफा अहमद ताहिरने खतबा पढा और उन्हें मुसतन्सिर बिल्लाहकी उपाधि प्राचीन विधिके अनुसार दी गयी और वेही मुसलमान साम्राज्यके खलीफा माने गये। अनन्तर खलीफाने वेइबार्सको इस्लामके विरुद्ध लोहा लेनेवालोंके साथ सग्राम करनेका अधिकार प्रदान किया।

कुछ दिनों बाद किसी मुगलने इस्लाम साम्राज्यपर आक्रमण किया। खलीफा मुसतन्सिर बिल्लाह उसका प्रतिरोध करनेके

लिये आगे बढे, पर इस धर्मयुद्धमें वे मारे गये। उनकी मृत्युके पश्चात् येद्गार्सने उसी अब्बासिया वंशके एक और व्यक्तिको लाकर खलीफाकी गद्दीपर बैठाया और उनकी अधीनता स्वीकार की। वे धर्म गुरु और शासककी तरह पूज्य समझे जाने लगे, पर शासनाधिकार प्रत्यक्ष रूपसे मिश्रके मामलुक सुल्तानोंके हाथोंमेंही रहा। तीसरे कालांशमें खलीफाकी गद्दी मिश्र देशके कैरो स्थानमें रही और यह वंश 'अब्बासिया ए मिश्र' खानदान कहलाता था। इस वंशके १६ खलीफे हुए और सन् १५०६ ई० तक इनका शासन माना जाता है।

चतुर्थ कालांश

सन् १५१७ ई० से वर्त्तमान समयतक

इधर इस्लामकी शक्ति इस समय जिस प्रकार अत्यन्त क्षीण हो गयी थी, उसी प्रकार उधर टर्कीके राजाका बल बहुत बढ गया था। सन् १५१७ ई०में सलीम प्रथमने मिश्रके मामलुक सुल्तानोंको हराकर मिश्रपर अधिकार किया। मिश्र देशपर अधिकार करनेके बाद सलीम प्रथमने अब्बासिया ए मिश्र खानदानके अन्तिम खलीफा अल् मोतवक्केल अलेल्लाह इब्न उमर-उल हकीमके हाथोंसे यह उपाधि ग्रहण की,—"सुल्तानेस् सलातीन व हाकिमुल-उ हवाकीम, मालिकुलबहरेन व बररेन हामीदीन, खलीफा रसूल-अल्लाह, अमीर-उल मोमिनीन।"

इस प्रकार सलीम प्रथम उसमानिया खानदानके पहले

खलीफा हुए। ये जगद्विख्यात विजयी मुहम्मदके पौत्र थे, इन्होंने एशिया महादेशके जिन अंशोंमें रोमन साम्राज्य कायम हुआ था, उन्हें अपने अधिकारमें करके क्रिस्तानी शासनके बदले इस्लामी सल्तनत कायम की। उनके समयमें जितने मुसल्मान शासक थे, उनमें सुल्तान सलीम खाँ सबसे अधिक बलशाली थे। यद्यपि उन्होंने खलीफा होनेका अधिकार और उपाधि अब्बासिया-द मिश्र खानदानके अन्तिम खलीफाके हाथोंसे पायी थी, तथापि समस्त मुसल्मान जगत्में उनके खलीफा होनेपर एक बड़ी खलबली मची। कितने ही मुसल्मानोंकी यह आपत्ति थी, कि ये हमारे धर्म-गुरु खलीफाके पदपर नहीं बैठाये जा सकते हैं और साथही दूसरे पक्षवालोंका कहना था, कि ये खलीफा होनेके सर्वथा योग्य हैं और सब तरहसे खलीफाके पदके अधिकारी होनेका उनको हक है। लगातार दो तीन वर्षो तक यह झगड़ा चलता रहा और बड़े-बड़े आलिम फाज़िलों और उलमाओंकी बहसके बाद वे सर्व-सम्मतिसे खलीफा माने गये। तबसे अबतक किसीने टर्की सुल्तानके खलीफा होनेके विषयमें कोई प्रश्न नहीं उठाया।

सलीम प्रथमने खलीफाकी उपाधि पानेपर निर्वाचन प्रथानुसार मिश्र देशकी राजधानी कैरोके उलेमाको अपने यहाँ बुलवाया और उनके तथा टर्कीके उलेमाके द्वारा आयूबकी मसजिदमें खलीफा निर्वाचित किये गये। आज भी कुस्तुनतुनियामें इस प्रकारकी निर्वाचन प्रथा प्रचलित है। आज भी प्रत्येक सुल्तानको राज्याधिकार पानेपर खलीफा होनेके लिये उलमाकी

सम्मति और शेखुल-इस्लामसे हज़रत अली साहबकी पवित्र तलवार ग्रहण करनी पड़ती है। इसके साथही इस्लाम धर्मके संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद साहबके स्मृति चिह्न स्वरूप उनका अंगा, हज़रत अली साहबके स्मृति चिह्न स्वरूप उनके हाथकी तलवार और विजय पताका तथा कई और वस्तुएँ ग्रहण करनी पड़ती हैं। कहते हैं, बगदादके हत्याकाण्डके समयसे ये सब वस्तुएँ मिश्रकी राजधानी कैरोमें लायी गयी थीं और जब सलीम प्रथमने मिश्रपर अधिकार करके खलीफाकी उपाधि प्राप्त की थी, तभीसे ये चीज़ें टर्कीकी राजधानी कुस्तुनतुनियामें सुरक्षित रखी गयी हैं।

'लेन पोल' नामक एक विख्यात इतिहास लेखकका कहना है, कि सोलहवीं सदीके प्रारम्भमें, मिश्र विषयके बादसेही सलीम प्रथमकी सत्ताको फारसके सिया सम्प्रदायके मुसलमानोंने भलेही स्वीकार न किया हो, परन्तु भारतवर्ष, अफ्रिका, जावा, सुमात्रा, चीन, मलाया आदि सब देशों और द्वीपोंमें, जहाँ कहीं मुसल्मान थे, सबने उनकी सत्ता स्वीकार करली थी।

भारतवर्षमें रहनेवाले सारे मुसलमान राजाओंपर टर्कोंके सुल्तानका प्रभाव कितना शीघ्र और कितना जबर्दस्त पड़ा था, इसका एक ऐतिहासिक प्रमाण दे देना अनुचित न होगा। उधर सन् १५१७ ई० में सलीम प्रथमने खलीफाकी उपाधि प्राप्त की थी और इधर भारतमें मुगल साम्राज्य स्थापित हो चुका था। दूसरे मुगल सम्राट् हुमायूँ भारतका शासन करते थे। १५३३ ई० में हुमायूँ ने गुजरातके मुसल्मान राजा बहादुर

पर चढाई की। मुगल सम्राट्की चढाई करनेकी खबर पाकर बहादुरशाहने टर्कीके सुल्तान सुलेमानके पास अपनी रक्षाके लिये सहायता करनेकी प्रार्थना की। सुल्तानने बहादुरशाहकी सहायता के लिये अपनी नौसेनाके ८० युद्ध पोत भेज दिये थे। इस बातसे यही मालूम होता है, कि टर्कीके सुल्तानका प्रभाव भारतवासी मुसलमानोंपर बहुत अधिक पडा था और सुल्तान अपने शासनाधिकारकी सीमाके बाहरवाले मुसलमानोंको भी सहायता प्रदान करनेको प्रस्तुत रहते थे। इसी प्रकार इतिहासमें इस बातके भी कितनेही प्रमाण हैं, जिनसे मालूम होता है, कि टर्कीके सुल्तानका प्रभाव जावा, सुमात्रा आदि देशोंपर यथेष्ट पडा था।

इस तरह हम देखते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा जो इस्लाम साम्राज्य कायम हुआ था, उसकी राजधानी पहले मदीनेमें, फिर दमस्कमें, फिर बागदादमें, तब कैरोमें और अन्तमें कुस्तुनतुनियामें रही। इसी कुस्तुनतुनियाका साम्राज्य रूम साम्राज्य कहलाता है। इसके सुल्तान या खल्फा उसमानिया वंशके कहलाते हैं।

रूम-साम्राज्य

प्राकृतिक विभव

पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा स्थापित इस इस्लाम साम्राज्यको टर्कोंके सुलतानोंके हाथमें आये आज चारसौ वर्षोंसे भी अधिक हुए। टर्कोंके सुल्तानोंके हाथमें जिस समय मुसल्मान साम्राज्यका शासन सूत्र आया था, उसके कुछ काल बाद यूरोपके भिन्न भिन्न देशोंके शासकोंकी ओरसे एशिया आदि महादेशोंके भिन्न भिन्न देशोंमें कितनेही आदमी व्यापार वाणिज्यके लिये भेजे जाने लगे थे। पहले पहल पश्चिमी यूरोपवाले अफ्रिका महादेशके किनारे किनारे होकर महीनोंकी लम्बी समुद्र यात्रा करके हिन्दुस्थानमें आते थे। यहाँका धन वैभव देखकर वे बराबर यहाँ आने-जाने और व्यापार करने लगे। परन्तु आने जानेका मार्ग इतनी दूरका था और ऐसा कठिन था, कि वे दूसरा मार्ग ढूँढने लगे। होते होते उन्होंने भूमध्यसागरका रास्ता ढूँढ निकाला। पीछे स्वेजकी नहर कटवाकर यह मार्ग सरल बनाया गया। तबसे वे इसी मार्गसे आने जाने लगे। इस जलमार्गसे आते जाते समय जहाँ जहाँ बड़े बड़े नगर मिलने लगे, वहाँ वहाँ भी पश्चिम यूरोपवाले अपने व्यापारी अड्डे बनवाने लगे।

इधर पूर्वीय यूरोपवाले अर्थात् रूसवाले भी अपने व्यापार विस्तारके साथ-साथ साम्राज्य विस्तार करने लगे। होते होते इन यूरोपीय देशोंका व्यापार मध्य एशियाकी ओर भी बढ़ने लगा। रूसवाले अपना व्यापार-वाणिज्य उत्तर सागरकी राहसे जाकर नहीं कर सकते थे; क्योंकि उधर शीत इतना अधिक पड़ता है, कि उत्तर सागरका जल बारहों महीने बर्फ बना रहता है। इसलिये वे भी उन्ही जल मार्गों से आने-जाने लगे, जिन मार्गोंसे होकर पश्चिम यूरोपवाले आया जाया करते थे।

व्यापार-मार्ग

इस तरह रूस और पश्चिम यूरोप अर्थात् ग्रेट ब्रिटेन, पुर्त्तगाल आदि देशवालोंके बीच व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता उत्पन्न हुई और क्रमश इस प्रतिद्वन्द्विताके फल-स्वरूप रूस और ग्रेट ब्रिटेन आदि देशोंमें परस्पर विरोध-वैमनस्यका भाव जमने लगा। पश्चिम और मध्य यूरोपवालों तथा रूसियोंका मध्य एशियाके साथ व्यापार-वाणिज्य करनेका एकमात्र जल मार्ग कृष्णसागर है। मध्य यूरोपसे विस्तृत डैन्यूब नदी भी आकर इसी समुद्रसे मिलती है। अत सारे पूर्वी और पूर्व-दक्षिण यूरोपका वाणिज्य इसी मार्गसे हो सकता है। कृष्णसमुद्रको सागर कहनेकी अपेक्षा बहुत बड़ी झील कहना अधिकतर उपयुक्त होगा। यह यूरोप और एशियाकी भूमिसे प्राय घिरा हुआ है। इसका उत्तरी तट यूरोपीय रूसके दक्षिणी प्रान्तोंसे घिरा हुआ है।

रूसके सबसे अधिक उर्वर प्रदेश इसी समुद्रके तटपर हैं। रूसी गल्ला ओडेसा आदि इसी तटके बन्दरोंसे संसारके अन्य देशोंमें जा सकता है। संसारसे माल मँगानेका मार्ग भी रूसके लिये यही है। यहीं रूसकी मुख्य जल सेना भी है। इसके पश्चिमी तटपर रूमानिया और बुलगेरिया है। दक्षिण पश्चिम और पश्चिमी तट यूरोपीय टर्की और एशियाई टर्की कहाता है। पूर्वी तट आरमीनिया तथा ट्रास काकेशस प्रान्तसे घिरा है। कहना नहीं होगा, कि चारों ओरके इन देशोंका वाणिज्य इसी समुद्रकी राह हो सकता है।

प्राकृतिक दुर्ग

इस इतने बड़े और महत्वके समुद्रको बाहरी भूमध्यसागरसे मिलानेवाली दो तङ्ग जल प्रणालियाँ हैं और दोनोंही यूरोपीय तथा एशियाई टर्कीके बीचसे गयी हैं। इन दोनों प्रणालियोंके दोनों तटोंपर अच्छी पहाड़ियाँ हैं। इनके कारण इन तटोंपर राज्य करनेवालेके लिये अल्प सेना और कुछ पहाड़ी तोपोंकी सहायतासे कालासमुद्रका सारा व्यापार बन्दकर देना बायें हाथ-का खेल है। पानीके बम अगर इन प्रणालियोंमें डाल दिये जायें, तो बड़े बड़े भयङ्कर लड़ाऊ जहाज भी भीतर आनेका साहस नहीं कर सकते। इन तटोंके अधिकारी कृष्णसागरके तटवर्त्ती समस्त यूरोपीय देशोंका वाणिज्य चौपट कर सकते हैं, उनकी जल-सेनाको चूहेकी तरह पिंजड़ेमें बन्द कर दे सकते हैं। न वे

अपनेको आप बचा सकते हैं और न बाहरी
पहुँचाकर बचा सकती हैं।

इन जल प्रणालियोंके नाम बासफोरस
हैं। बासफोरस प्रणाली कृष्ण-सागरको
है। इसके यूरोपीय तटपर कुस्तुनतुनिया
स्कुटारी है। कुस्तुनतुनिया और
कर कोई जहाज बासफोरस दरवाजा पार
मारमोरा समुद्र भी कृष्णसागरकी तरह है,
झील है, जो चारों ओरसे, इन दो जल प्रणा
पीय और एशियाई तुर्कोंसे घिरा हुआ है।
सागरमें जानेकी राह दर्रे दानियाल है। यह
फोरसकी अपेक्षा लम्बी और तङ्ग है।
भयङ्कर पहाड़ोंसे भरा हुआ गैलीपाली
तटपर एशिया तुर्कोंके चानक आदि, सैनिक दु
स्थान हैं। इन जल मार्गोंके अधिकाश तटपर बहुत
सुल्तानोंका अधिकार और नियन्त्रण रहा है।
राष्ट्र इसी कारण रूम साम्राज्यपर बडी तीव्र
कितनीही बार कितनेही यूरोपीय राष्ट्रोंने इसे व
करनेकी चेष्टा भी की, पर कोई फल न हुआ।
कारणोंमें यह भी एक कारण है,कि यदि कोई
पर अधिकार करना चाहता,तो अन्य यूरोपीय रा
लेकर उसके विरुद्ध खड़े हो जाते और फिर उस

पुन श्रीवृद्धि करने लगा। प्रधान वज़ीर मुहम्मद और उसके लड़के कोपरीलीकी सहायतासे सुल्तानने पुन क्रीड, पोडोलिया और यूक्रेनपर अधिकार किया। सन् १६८३ ई० में रूमके सुल्तानने फिर एक बार अपने राजनीति-कुशल वज़ीर और उसके पुत्र कोपरीलीकी सहायतासे आस्ट्रियाकी राजधानी वियेनापर अधिकार किया, पर वहाँ स्थायी रूपसे शासन स्थापित न रह सका। मुस्तफा द्वितीय नामक सुल्तानको—जिसने सन् १६९५ से सन १७०३ ई० तक शासन किया—विवश हो कर कैरोलोविजको सन्धि करनी पड़ी, जिसके अनुसार रूम साम्राज्यको मोरिया वेनिसको, पोडोलिया पोलैण्डको और आजोव रूसको वापस कर देना पड़ा तथा आस्ट्रियाको भी उसका बहुतसा स्थान लौटा देना पड़ा। रूसके पीटर दी ग्रेटके समसामयिक सुल्तान अहमद तृतीयने, जिनका शासन सन् १७०३ से सन् १७३० ई० तक रहा, रूसियोंसे आजोव ले लिया। इससे यह मालूम होता है, कि उनके शासन कालमें टर्कोकी राजनीतिक अवस्था उन्नतिपर थी। परन्तु अहमद तृतीयके समय सेही रूम-साम्राज्यको रूसियोंके दबावका अनुभव होने लगा था।

इधर रूसवाले दबाते हुए उत्तरसे बढ़े चले आते थे और उधर आस्ट्रिया वालोंसे उनकी जो लड़ाइयाँ हुई, उनका परिणाम भी टर्कोंके लिये बड़ा भयङ्कर हुआ। अन्तमें सुल्तानको पासा-रोविजमें आस्ट्रियनोंसे सन्धि करनी पड़ी और इस सन्धिमें उन्हें आस्ट्रियाको वालाचिया बोसनिया, सर्वियाका बहुतसा अंश

तथा बेलग्रेड दे देना पडा। यह सन्धि सन् १७१८ में हुई थी।

इसके आधी सदी बाद अर्थात् सन् १७६८ ई० में अकेला रूसियोंके साथ रूम-साम्राज्यको संग्राम करना पडा। यह संग्राम लगातार ६ वर्षोंतक अर्थात् सन् १७७४ ई० तक होता रहा। इस संग्राममें यद्यपि सुल्तान रूमको रूसियोंको उनके कई विजित प्रान्त दे देने पडे, तथापि इससे उनकी विशेष कुछ क्षति न पहुंची। इसके १३ वर्ष बाद रूसियों और आस्ट्रियनोंने अपनी मिलित शक्तिसे रूम साम्राज्यपर आक्रमण किया। इन दोनोंकी अभिलाषा अंग्रेज इतिहास लेखकोंकी दृष्टिमें यह थी, कि रूम-साम्राज्यको सम्पूर्ण-तया मटियामेट कर दिया जाये, परन्तु आस्ट्रियनोंकी सामरिक शक्ति क्षीण हो जानेके कारण उसने पहलेही संग्रामसे हाथ खींच लिया। रूस अकेलाही लोहा लिये मैदाने जङ्गमें डटा रहा। सन् १७९२ ई०में रूसियोंके साथ सुल्तानने सन्धि कर ली। इस सन्धिके अनुसार सुल्तानको रूसका क्रीमिया प्रान्त तथा दक्षिणी रूसके और भी कई प्रान्त लौटा देने पडे।

अंतरंग कलह

इस प्रकार हम देखते हैं, कि रूम साम्राज्यको लगातार वर्षोंतक प्रबल शत्रुओंका सामना करना पडा। इन संग्रामोंसे रूम साम्राज्यकी भीतरी परिस्थिति बहुत कुछ खराब हो गयी। साम्राज्यके अन्तर्गत अन्तरङ्ग झगडे उठ खडे हुए। बाहरी आक्रमण कारियोंके षड्यन्त्रसे हो, अथवा शासकोंकी अयोग्यतासे हो,

गयी थी, उसपर सहसा पानी फिर गया। कुप्रबन्धके कारण साम्राज्यका खर्च इतना बढ़ गया था, कि सन् १८७५ में साम्राज्यका खजाना खाली हो गया। यह बात बाहरवालोंको भी मालूम हो गयी और रूस—जो अबतक तीखी नजर गड़ाये मौका देख रहा था—फिर टर्कीके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। रूम साम्राज्यके प्रजावर्गने खयाल किया कि रूसके इस प्रकार बार-बार आक्रमण करनेका मुख्य कारण सुल्तानकी कमजोरी तथा प्रधान मन्त्रीकी अयोग्यता है। कुछही दिनोंमें प्रजावर्गका यह खयाल इतना दृढ होगया, कि उसने सुल्तान अजीजको ३० मई सन् १८७६ को गद्दीसे उतरनेके लिये बाध्य किया और उनके गद्दीसे उतरनेपर सुल्तानके पदपर मुराद पञ्चम अभिषिक्त किये गये।

इसके प्राय एक वर्ष बाद रूसने फिर रूमपर आक्रमण किया। इस बार भी तुर्कोंको विवश होकर रूसवालोंसे सन्धि करनी पड़ी। यह सन्धि सन् १८७८ ई० को ३ री मार्चको सैन स्टेफानोमें हुई थी। इस सन्धिके अनुसार सुल्तानको रूमानिया और सर्वियाको पूर्ण स्वतन्त्रता देदेनी पड़ी। इस समय अब्दुल हमीद द्वितीय सुल्तान थे।

रूसको इस प्रकार बलवान् होते देख, और बराबर पूर्वकी ओर अग्रसर होनेकी चेष्टा करते देख, इङ्गलैण्डने टर्कीको सहायता करना स्वीकार किया, क्योंकि इसमें उसका भी स्वार्थ था। इङ्गलैण्डके सहायता देनेको खड़े होनेपर रूसने हाथ रोक लिया।

की इस कामना विरोध भी नहीं किया। परन्तु सन् १८९७ के अप्रेल महीनेमें जब यूनानवालोंने जबर्दस्ती तुर्की से युद्ध , तब तुर्कोंकी उस सञ्चित शक्तिका दुनियाको पता लगा। मपाशाने बड़ी आसानीसे यूनानियोंको हरा दिया। केवल सप्ताहोंमेंही इन्होंने यूनानियोंसे प्रायः सम्पूर्ण थेसाली ले, अपने में कर लिया, परन्तु मध्य तथा पश्चिम यूरोपवालों को बचा लिया। अन्तमें सन् १८९७ ई० की ४थी दिस को कुस्तुनतुनियामें सन्धि हुई।

अन्तरंग विप्लव

इसके बाद रूम साम्राज्यको अन्तरङ्ग कलहका सामना करना , शासनका प्रबन्ध बिगड़ जानेके कारण साम्राज्यके अन्त स्वदेशकी दुरवस्था देखकर कितनेही नवयुवकोंमें स्वदेश का भाव जागृत हो आया। उन्होने 'नवीन तुर्क" नाम देकर संघ स्थापित किया। इस संघमें रूम साम्राज्यके नयी रोशनी कितनेही अधिकारी भी सम्मिलित होगये। रूम सरकारने १९०२ ई० में इन्हें बागी समझा और उनके साथ वैसाही किया, जैसा बगावत फैलानेवालोंके साथ किया जाता -वे दबा दिये गये।

इसके कुछही दिनों बाद बल्गेरियावालोंने मैसेडोनियाको लेनेके लिये आन्दोलन करना शुरू किया। परन्तु बड़े के तुर्कोंके पक्षमें होनेके कारण सन् १९०५ ई० में यह आन्दो

शान्त होगया। सन् १९०६ ई० में फ्रान्सके साथ टर्कीका झगडा आरम्भ हुआ। इसका कारण यह था, कि टर्कीने ट्रिपोलीके जेनत नामक ओएसिस पर * अपना अधिकार स्थापित करना चाहा था। फारसको पश्चिमी सीमापरके कई स्थानोंको भी टर्कीने अपने अधिकारमें करना चाहा। इसके कारण फारस-वालोंसे भी टर्की की लडाई होने लगी।

सन् १९०८ ई० से "नवीन तुर्क" संघवालोंने सलोनिकाको अपना केन्द्र स्थान बनाया। टर्कीकी सेनामें भी कुशासनके कारण विद्रोहकी अग्नि सुलग चुकी थी। "नवीन तुर्क" संघवाले तत्का-लीन रूम साम्राज्यकी सरकारको शासनसे अलगकर नयी सरकार—नया मन्त्रि मण्डल—बनानेके लिये उतावले होरहे थे। होते-होते २४ जुलाई सन् १९०८ ई० को नयी सरकार कायम हो गयी और पुरानी सरकार शासनधिकारसे हटा दी गयी। १७ वीं दिसम्बरको "नवीन तुर्क" संघके प्रधान नेता अहमद रजाके सभापतित्वमें एक विराट् सभा हुई। इसी सभामें नयी पार्लि-यामेण्टका उद्घाटन हुआ।

पर यह व्यवस्था भी स्थायी रूपसे न रही। चारही महीने बाद अर्थात् २४ अप्रेल सन् १९०९ को मैसीडोनियावालोंकी फौजने बलपूर्वक कुस्तुनतुनियामें प्रवेश किया। २६ ता को मन्त्रिमण्डलने शासनकार्यसे इस्तीफा दे दिया। २७ तारीखको राष्ट्रीय सभा-

* मरुभूमिमें कहीं-कहीं कनोंके निकल आनेसे जो स्थान उपजाऊ हो जाता है, उसे ओएसिस कहते हैं।

की एक गुप्त बैठक हुई। इस सभामें अब्दुलहमीदको सुलतानके पदसे अलग कर देना सर्व-सम्मतिसे निश्चय हुआ। उनके छोटे भाई मुहम्मद पञ्चम सुल्तान बनाये गये। सन् १९१० के अप्रेल महीने तकके लिये कुस्तुनतुनियामें 'मार्शलला' जारी किया गया। अप्रेलमें इस फौजी कानूनकी अवधि फिर एक वर्षके लिये बढा दी गयी। इस समय तमाम रूम साम्राज्यमें बडी भारी खलबली मच गयी थी—अवस्था डाँवा डोल होरही थी।

सन् १९११ ई० का वर्ष टर्कीके लिये बडाही बुरा था। मार्चके महीनेमें कुस्तुनतुनियामें फिर फौजी कानून जारी किया गया। इसी साल्के सितम्बर मासके अन्तमें इटालीने टर्कीके सुल्तानके पास एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था, कि "ट्रिपोलीमें तुर्कों ने बडा उपद्रव मचा रखा है। तमाम अशान्ति और अराजकता फैल रही है। इसलिये यदि ऐसाही हाल रहा, तो हम ट्रिपोलीपर सामरिक अधिकार कर लेंगे।" इसपर सुल्तानने जो जवाब दिया, वह सन्तोष जनक नहीं समझा गया। अन्तमें २६ सेप्टेम्बरको टर्की और इटलीके दर्म्यान युद्ध छिड गया। ट्रिपालीकी सीमाओंपर सैनिक बैठा दिये गये और ५ वीं अक्तूबरको इटालियन सेना ट्रिपाली नगरमें प्रवेश कर पागयी। इसके बाद इटालियनोंने और भी कई बन्दरगाहोंपर आक्रमण किया।

टर्कीकी हीनावस्था

यूरोपीय महासमर

इस प्रकार हम देखते हैं, कि टर्कीकी अवस्था क्रमश अत्यन्त शोचनीय होती चली आती है। चारों तरफ बलवान् शत्रु अपना जबर्दस्त पाँव जमाये आगे बढ़े चले आते हैं। उत्तरसे रूसी भालू रूस सम्राट् जारके आदेशानुसार टर्कीको निगलनेके लिये चला आरहा है। पश्चिमसे इटली और ग्रीसवाले उसका गला दबाये जारहे हैं। दक्षिणसे समुद्र-तट वर्ती स्थानों तथा बन्दरगाहोंपर भी उसके प्रबल शत्रु अपना अधिकार जमाते चले जारहे हैं। कोई राष्ट्र उसका सच्चा सहायक नहीं दिखाई देता। सभी अपना अपना मतलब गाँठनेको तैयार हैं।

ऐसी अवस्थामें सन् १९१४ ई० में यूरोपीय महायुद्ध छिड गया। इस युद्धमें प्राय सभी यूरोपीय राष्ट्रोंने भाग लिया। टर्कीका कुछ अंश यूरोपमें है और कुछ अंश ऐशियामें है। इसलिये वह भी इस महायुद्धमें शामिल हुए बिना नहीं रह सका। जर्मनीने उससे सहायता माँगी। यद्यपि टर्की पहले पहल इस युद्धमें शामिल होनेको प्रस्तुत न था, तथापि उसे कई अनिवार्य कारणोंसे शरीक होनाही पडा।

मुसल्मान धर्मावलम्बी लोग रहते थे, वहाँ वहाँ समर कालमें टर्कीके समाचार न पहुँचने देनेकी बडी कडी व्यवस्था की गयी थी। तो भी लडाईके बन्द होतेही टर्कीके समाचार आगकी चिनगारियोंकी तरह तमाम दुनियामें फैल गये।

सन् १९१८ के अक्तूबर महीनेमें टर्कीने युद्धसे हाथ खींच लिया। मित्रराष्ट्रोंने इसके बाद तरह तरहके उपायोंसे कुस्तुनतुनियापर भी अधिकार कर लिया। समस्त मुसल्मान जगत्में बडी खल बली मच गयी। तमाम लोग यही खयाल करने लगे, कि अब दुनियासे रूम साम्राज्यका अस्तित्वही मिट जायेगा।

इसके बाद १० वीं अगस्त सन् १९२० को रूम साम्राज्यके कई प्रभावशाली प्रतिनिधियोंने एक सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। यह सन्धि सेवर्समें होनेके कारण सेवर्सकी सन्धि कहलाती है।

इस सन्धिपत्रपर तुर्क प्रतिनिधियोंने जब सही की, उस समय रूम साम्राज्यके अधिकारियोंमें मत भेद हो गया। कुछ लोगोंने इस सन्धि पत्रकी शर्तोंको उचित, न्यायसंगत और स्वीकार करने योग्य समझा और कुछ लोगोंने इसको सम्पूर्ण आपत्ति-जनक, पक्षपातपूर्ण और स्वीकार न करने योग्य समझा। इस मतभेदके कारण इस सन्धि पत्रकी शर्तोंको फिरसे संशोधित करनेका प्रश्न उठा। फ्रान्स और इटलीने भी उन शर्तोंमें संशोधन और परिवर्तन करनेके लिये जोर दिया, परन्तु अँगरेजोंको यह बात मजूर न थी। होते होते कुछ थोडे परिवर्तनोंके साथ उसी सन्धि पत्रपर रूम

साम्राज्यके प्रतिनिधियोंने हस्ताक्षर कर दिया, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है।

अब लोगोंकी धारणा विश्वासके रूपमें परिणत हो गयी। प्रायः समस्त मुसलमान-संसारका यह दृढ़ निश्चय हो गया, कि अब रूम साम्राज्यका स्वातन्त्र्य सूर्य सदैवके लिये अस्त हो गया। मुसलमानोंके हृदयसे समस्त आशा भरोसा, उत्साह साहस, धैर्य-स्थैर्य सब कुछ दूर हो गया।

तथापि कुछ ऐसे विवेचनाशील, विचारशील और दूरदर्शी लोग थे, जो अब भी—इस दुर्दिनमें, स्वातन्त्र्य सूर्यको अस्ताचल गमनोन्मुख देखकर भी—यह विश्वास नहीं करते थे, कि रूम-साम्राज्य सदाके लिये नष्ट हो जायेगा। वे जानते थे और अच्छी तरह इस बातको समझते थे, कि 'खञ्जरके सायेमेंही बचपनसे जो पला है, वह देश कभी सदाके लिये पराधीनताकी—परतन्त्रता-की—गारमें गिरा नहीं रह सकता। जो तुर्क जाति सदासे इतनी स्वतन्त्रता प्रिय रहती चली आयी है, वह कभी, किसी प्रकार भी, गुलामी कुबूल करके—पराधीन हो करके नहीं रह सकती। वे जानते थे, कि टर्कीकी इस शोचनीय अवस्थामें वह सर्वथा निर्वीर नहीं हो गया है और आशा करते थे, कि आजही इसका कोई लाल ऐसा खड़ा हो जायेगा, जो स्वदेशको इस गिरती हुई हालतसे बचा लेगा और उसकी देख भाल करेगा।

ऐसा विचार रखनेवाले लोग मित्र राष्ट्रोंकी शक्तिको और उनकी कठिनाइयोंको अच्छी तरह समझते थे। मित्र-राष्ट्रों किन-

किन उपायोंसे टर्कोंको दबाया चाहते थे, इन बातोंको वे लोग बड़े गौरसे देख रहे थे और जिन लोगोंने रूम साम्राज्यके प्रतिनिधि हो कर सेवर्सके सन्धि पत्रपर हस्ताक्षर किये थे, उनकी कमज़ोरियोंको भी दूरदर्शी लोग भली-भाँति जानते थे। इन्हीं कारणोंसे वे लोग उस सन्धि पत्रको एक रद्दी कागजके टुकडेसे अधिक मूल्यवान् नहीं समझते थे।

गाजी मुस्तफा कमाल पाशा।

Burman Press, Calcutta

टर्कीका उद्धार-कर्त्ता

जन्म और बाल्यकाल।

टर्कीके गम्भीर विवेचक, दूरदर्शी आशावादी लोग जिस सच्चे देशोद्धारक वीरकी प्रतीक्षा कर रहे थे, वह अन्तमें कार्यक्षेत्रमें उत्तरहो तो गया। या सुप्रसिद्ध मुसल्मान लेखक और राजनीतिज्ञ याकूब कदरीके शब्दोंमें टर्कीका यह सच्चा सपूत सचमुच 'तुर्क जातिके पुनरुद्धारके इस नवीन युगके लिये ईश्वरका एक नया अवतार है'।

इस तुर्क युवकका नाम 'अल गाजी मुस्तफा कमाल पाशा' है। आज समस्त संसार इस तुर्क वीरके नामसे पूर्णतया परिचित है। सारा मुसल्मान-जगत् आज इनकी ओर आशा और विश्वास की दृष्टिसे देख रहा है। इनके पूर्वज रूमेलियाके रहने वाले थे। इनके पिता टर्की सरकारके चुंगी विभागमें एक साधारण कर्मचारी थे। वे अपने कार्यवश सपरिवार सलोनिकामें रहते थे। वहीं सन् १८८० ई० में मुस्तफा कमालका जन्म हुआ। पिता माताका लाड प्यार और आदर-यत्न पा, बालक कमाल दिन दिन बडा होने लगा।

प्राय सभी आदमी बाल्यकालमें चचल स्वभावके होते हैं;

परन्तु बालक कमालमें उतनी चंचलता नहीं थी। वह आरम्भ सेही अपने भविष्य जीवनके गम्भीर कार्यों की सूचना देनेके लिये ही मानों, स्थिर, गम्भीर और धीर-भाव धारण किये रहता था। बालक किसी छोटीसी चीज़के लिये भी जो उसको भा जाती है, मचल पड़ते हैं ; पर बालक कमालमें यह बात न थी। वह उसी समयसे सामान्य वस्तुओंकी स्पृहा नहीं रखता था।

शिक्षा-प्राप्ति

पिता माताने जब देखा, कि वह पाठाभ्यास करने योग्य हुआ है, तब उसे सलोनिकाके एक प्राथमिक शिक्षा दी जानेवाली पाठशालामें भर्ती करा दिया। पढ़ना लिखना सीखनेमें उसका विशेष अनुराग उत्पन्न हुआ।

बालक कमालके पिता उसे अत्यन्त छोटी अवस्थामेंही छोड़, इस संसारसे विदा हो गये। वे न तो ऐसे ऊँचे पदाधिकारीही थे और न मोटी तनख्वाहही पाते थे, जो अपनी मृत्युके पश्चात् अपने परिवारवालोंके लालन पालनके लिये कोई मोटी रकम छोड़ जाते। इस निराश्रय, नि सहाय अवस्थामें बालक कमालके पढ़ाने लिखानेका भार कौन लेता ? परिवार वालोंके खाने पीनेका खर्च किसी तरह तो चल भी सकता था, पर उस बालकको पढ़ाने लिखानेका खर्च कहाँसे चलता !

परन्तु 'जापर जाकर सत्य सनेहू,सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू' के अनुसार बालक कमालके अध्ययनके मार्गमें रुकावटें होनेपर

भी उसने उसे प्राप्त करके छोडा। पढने लिखनेमें उसका इतना दृढ अनुराग था, उसमें ऐसे ऐसे आकर्षक गुण विद्यमान थे, कि जो कोई उसके संसर्गमें आ जाता, वही उसे प्यार करने लगता। अध्यापकोंने उसकी अध्ययन शीलता देख, उसे नि शुल्क शिक्षा देनेकी व्यवस्था कर दी। कमालकी बुद्धि बडी प्रखर थी। पाठशालामें अपने साथ पाठाध्ययनमें प्रतियोगिता करनेवालोंसे वह हमेशा ऊपर रहकर भी उनके साथ अपनी सच्ची सहानुभूति रखता और उन्हें अपना मित्र बना लेता था।

शस्त्रास्त्रोंकी शिक्षा

प्रारम्भिक शिक्षाशालाका अध्ययन समाप्त होने भी न पाया था, कि एक दिन उनके किसी सहपाठीसे लडाई हो गयी। अध्यापकने इसपर उन्हें मारा पीटा। दूसरेही दिनसे इन्होंने पाठशाला जाना छोड दिया।

इसके बाद कमालने माताकी आज्ञाके विरुद्ध छिप छिपकर मोनास्तरकी माध्यमिक सैनिक शिक्षा शालामें अध्ययन करना आरम्भ कर दिया।

प्रत्येक विश्वविद्यालयकी भिन्न भिन्न परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेवाले विद्यार्थियोंकी उम्रकी एक सीमा होती है, अर्थात् अमुक परीक्षामें सम्मिलित होनेके लिये विद्यार्थीकी उम्र कम से कम कितनी होनी चाहिये, इसका एक निर्द्धारित नियम रहता है। बालक कमाल प्राय सभी प्रकारकी सैनिक परीक्षाओंमें निर्द्धारित

उमू पूरी होनेके पूर्वही सम्मिलित हुआ और सदा परीक्षोत्तीर्ण होता गया। इस प्रकार प्रारम्भिक शस्त्र विद्याका अध्ययन समाप्तकर नवयुवक कमाल शस्त्र विद्याकी उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके अभिप्रायसे कुस्तुनतुनियाके सैनिक महाविद्यालयमें भर्ती हुए।

इनकी माताकी वडो इच्छा थी, कि कमालको मुसलमान धर्म गुरु और उपदेशक वनायें, परन्तु कमालकी इच्छा वीर योद्धा वनकर सच्चा युग धर्म गुरु वननेकी थी। अपनी इस इच्छाको पूण करनेके लियेही इन्होंने सामरिक शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ किया। यहाँ इन्होंने वडे आग्रह और चावके साथ शस्त्रास्त्रोंका प्रयोग तथा युद्धके लिये सैनिक कवायद सीखी। यहीं इन्होंने ग्रेजुयेटकी उपाधि प्राप्त की।

विशेपताएं

प्राय एक वर्ष हुआ, मैडेम रथीं जार्जेस् गालिस नामक सुप्रसिद्ध लेखिका मुस्तफा कमाल पाशाके पास गयी थीं। कमाल पाशाके व्यक्तित्वकी विशेपताका वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है, कि कमाल पाशामें कितनीही विचित्रतापूर्ण शक्तियाँ होनेकी बातें सुननेमें आती हैं।

वे अपनी अत्यन्त वलवती इच्छाको भी अपने हँसते हुए, शान्त और चित्ताकर्षक चेहरके अन्दर इस तरह छिपाये रख सकते थे, कि किसीको उनका मनोभाव मालूमही नहीं हो

सकता था। उनके साथी समाजी सभी उन्हें इतना मानते और उनकी अधीनता इस प्रकार स्वीकार करते, मानों वे उनके कोई अफसर हों, परन्तु वे खुद किसीपर हुकूमत करनेका भाव नहीं दिखलाते थे। इसका प्रत्यक्ष कारण उनमें सर्वाधिक योग्यताका होना था।

वे खुद नेता होनेका भाव नहीं रखते थे, तो भी लोग उन्हें अपना नेता समझते थे। अध्ययन कालमें वे जिधर जाते, उधरही उनके पीछे पीछे उनके साथी-सहपाठी लगे रहते और उनके साथ साथ फिरा करते थे। वे जिससे जो कहते, उसे माननेको वह तुरत तैयार हो जाता था।

विज्ञान और गणित शास्त्रमें वे अपना सानी नहीं रखते थे। कहते हैं, इनके गणिताध्यपकका नाम भी मुस्तफा था। वे बालक मुस्तफाकी गणित शास्त्रमें असाधारण व्युत्पत्ति और योग्यता देखकर बड़े प्रसन्न रहते थे। एक दिन गणितका एक उलझन सुलझा देनेपर वे इनपर इतने प्रसन्न हुए, कि उन्होंने मुस्तफाके नामके साथ 'कमाल' शब्द जोड़ दिया। उसी दिनसे ये मुस्तफा कमाल कहलाने लगे।

मुस्तफा कमाल कभी कभी बड़ीही रस पूर्ण कविताओंकी रचना किया करते थे, परन्तु उनकी कविताओंमें शृङ्गार, हास्य आदि मधुर रसोंका समावेश नहीं होता, बल्कि वीर और करुण रसही अधिकांशमें पाया जाता है। उनके हृदयमें स्वदेशके प्रति जो अगाध प्रेम था, उसीके आवेशमें आकर वे कविता लिखा करते

थे। स्वेच्छाचारी राजाके अत्याचारोंके विरुद्ध वे बड़ीही उत्ते जनापूर्ण कविताएँ लिखा करते थे। अध्ययन कालमेंही स्वतन्त्रता विश्वजनीन प्रेम तथा जीवन और मरणके सङ्गीत गा-गाकर उत्साह हीन, निराश तुर्कोंके हृदयोंमें आशा और विश्वासका सञ्चार करते, सोये हुओंको जगाते और मृतवत् पड़े हुओंमें जान डालते हुए फिरा करते थे।

प्रौढ़ावस्था प्राप्त होनेतक साधारणत सभी मनुष्योंमें कुछ न कुछ अनुकरण प्रियता दिखाई देती है। इस अनुकरण प्रियतासेही कहीं कहीं लाभ दिखाई देता हो, पर वह लाभ बहुतही सामान्य है, बल्कि इसकी मात्रा बढ़ जानेसे प्राय सर्वथा हानिही होनेकी सम्भावना रहती है। इससे मनुष्यका जितना लाभ होता है, उसकी अपेक्षा कई गुनी अधिक हानि यह होती है कि मनुष्य क्रमश केवल दूसरोंका अनुकरणही करने लग जाता है और अपने स्वतन्त्र विवेकसे काम नहीं लेता। इस प्रकार वह अपनी खास शक्तियोंको विकसित तो करही नहीं सकता, साथ ही उसकी उपयोगिताको भी भूल जाता है। कमाल पाशाके विषयमें उनका कोई घनिष्ठ से घनिष्ठ मित्र भी यह बात दावेके साथ नहीं कह सकता, कि उन्होंने कभी—किसी बातमें—किसी का अनुकरण किया हो। बाल्यकालसेही स्वाधीनचेता होनेके कारण उनकी बुद्धि इतनी स्वतन्त्र-गामिनी थी, कि उनपर कभी किसी का प्रभावही नहीं पड़ता था। जबतक उनकी स्वतन्त्र विवेक बुद्धि किसी बातको तर्क-युक्तियों द्वारा ठीक न समझ लेती, तब

तक वे उसे दूसरे किसीकी बातोंसे प्रभावान्वित होकर ठीक मान लेनेको तैयार नहीं होते थे।

विभिन्न-संवाद

मुस्तफा कमाल पाशाके अध्ययन कालिक जीवनके विषयमें अबतक भिन्न भिन्न विलायती समाचार पत्रोंके कई विभिन्न लेखकों और संवाददाताओं द्वारा जो बातें जानी गयी हैं, उनमें कुछ पार्थक्य दिखाई देता है। कुछ लोगोंका कहना है, कि 'जब वे सलोनिकामें अध्ययन कर रहे थे, तब किसी दिन अपनी कक्षाके एक सहपाठी विद्यार्थीसे लड पडे। इसपर जो अध्यापक इनके क्लासमें पढा रहा था, उसने इन्हें काफी सजा दी और इन्होंने भी उसी दिनसे स्कूलमें जाना छोड दिया और उनका पढना बन्द हो गया।'

दूसरी ओर मैडेम गालिस जो १० १२ महीने पहले मुस्तफा कमाल पाशासे मिलने गयी थीं, लिखती हैं, कि 'सलोनिकाके स्कूलका अध्ययन समाप्त करनेपर इन्हें इनकी तीव्र बुद्धि और योग्यताके लिये छात्र वृत्ति मिली और उसीकी सहायतासे वे मोनास्टिरकी माध्यमिक शिक्षाशालामें शिक्षा प्राप्त करने लगे।'

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त लेखिकाका यह भी कहना है, कि 'मुस्तफा कमालमें एक विचित्र आकर्षिणी शक्ति है और क्या स्कूलमें, क्या घरमें सर्वत्र वे अपनी इस अद्भुत आकर्षिणी शक्तिसे

काम लेते हैं।' सुतरां किसी सहपाठीसे उनकी लड़ाई भिड़ां होनेकी बात अस्वाभाविक जान पड़ती है।

इसी प्रकारके और भी कई विचित्रता पूर्ण समाचार प्रकट हुए हैं, पर हमें वर्त्तमान मुसल्मान-जगत्के एकमात्र आधारस्तम्भ तुर्कोंके त्राता, गरीबोंके रक्षक, दीनजनोंके सहायक, अत्याचारियोंके संहारक और शान्तिके विधायक गाजी मुस्तफ़ा कमाल पाशाके महान और विशद जीवनसे जो शिक्षा ग्रहण करनी है, उसमें इन सामान्य पार्थक्योंसे कुछ आता-जाता नहीं है। अतएव हम इन सामान्य बातोंकी ओर यदि ध्यान न भी दें तो कोई विशेष हानि नहीं है।

ऐसी बातें लिखीं और वे समाचार पत्रोंमें प्रकाशित भी कर दी गयीं, उनका अन्तमें जब भण्डा-फोड हुआ, तब चारों या कम-से-कम उनमेंसे तीनकी सचाईका तो दुनियाको पता लग गया।

सारांश यह, कि इस तरहके कितनेही भ्रान्ति-उत्पादक तथा झूठे समाचार संवाद पत्रोंके संवाद-दाताओंकी गलतीसे प्रकाशित हो जाते हैं। परन्तु सत्यका सूर्य मिथ्याके बादलोंकी आड़में तभीतक छिपा रह सकता है, जबतक सत्यताको प्रकट करनेवाली तेज हवाका झकोरा उसे उड़ाकर दूर न हटा दे।

अबतक मुस्तफा कमाल पाशाके जीवनके विषयमें जो संवाद भारतवर्षमें आये हैं, उनके भेजनेवाले सर टौन शेड, मि० चेयर प्राइस, मैडेम यवीं जार्जेज गालिस और कुस्तुनतुनियाके एक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्रके सम्पादक और कोलम्बिया युनिवर्सिटीके ग्रेजुयेट मुहम्मद अमीन साहब आदि कई बड़े-बड़े नामी और यशस्वी लेखक हैं।

मुस्तफा कमाल पाशाके आश्चर्य्यजनक कार्य्योंका समाचार पाठ करके उनके जीवनके विषयमें जाननेकी इच्छा प्रत्येक मनुष्य को हो सकती थी। यह बिल्कुल स्वाभाविक था। अत जिन सज्जनोंके द्वारा हम भारतवासियोंको मुस्तफा कमाल पाशाके जीवनके विषयके ये संवाद प्राप्त हुए हैं, वे हमारे धन्यवादकेही भाजन हैं। उनको भिन्न भिन्न रिपोर्टों में सामान्य विभिन्नता आगयी है सही और उस विभिन्नतासे अनायासही भ्रान्ति भी उत्पन्न होती है; पर यह भ्रान्ति भी समय आनेपर आपही आप

जायेगी और दुनियाके आगे मुस्तफा कमालके सच्चे
ेत्र खिंच जायेगा।

शरीरका गठन

मुस्तफा ेका शरीर सुन्दर और सुडौल है। इनका
शरीर न तो स्थू ेन अत्यन्त कृश। सब अंग हृष्ट
पुष्ट और पेशियाँ गठी ु चेहरेपरकी हड्डियाँ उभरी हुई हैं।
आँखें नीली और नुकीली ह। इनके बाल साफ-सुथरे, कोमल
और भूरे रङ्गके हैं। मूछें छोटी और सुन्दरता पूर्वक छँटी हुई
हैं। इनका कद न बहुत छोटाही है, न बहुत लम्बा, शरीरके
मुताबिक और मझोला है। भुजाएँ लम्बी और उँगलियाँ
पुष्ट हैं।

बनूँ। दुनिया देख रही है, कि वे जैसा बनना चाहते थे, आज सचमुच वैसेही बन गये हैं।

स्वदेश-प्रेम

जब वे कुस्तुनतुनियाके सैनिक विश्वविद्यालयमें भर्ती हुए, तभीसे उन्हें अपने देशकी राजनीतिक परिस्थितिका ज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त होने लगा। शासनके दोष दिखाई देने लगे। शासकोंकी बद-इन्तज़ामी और लापरवाहीसे देश किस भयङ्कर सङ्कटके समीप पहुँचता चला जारहा है, यह बात भी उन्हें मालूम होने लगी।

मनुष्यके हृदयपर किसी बड़े से बड़े नेता और उपदेशकके उपदेशोंसे या बड़े से बड़े विद्वान् द्वारा लिखित पुस्तकोंके अध्ययनसे जो असर नहीं पड़ता, वह स्वानुभव द्वारा पड़ता है। स्वदेश प्रेम और स्वदेशका उद्धार करनेका भाव भी मनुष्यके हृदयमें अपने ऊपर कष्टों और मुसीबतोंके आनेसे जिस मात्रामें उद्दीपित होता है, उस मात्रामें किसी बड़े भारी स्वदेश प्रेमीके व्याख्यानोंसे नहीं होता। कमाल पाशा बाल्यकालसे मुसीबतोंकी गोदमें पले हुए थे, इसलिये देशकी परिस्थितिको वे भली भाँति समझ रहे थे।

क्रांतिकारी विचार

क्रमशः जब इन्हें अपने देशकी दुरवस्थाका और उसपर आने-

घाले भावी सङ्कटका सम्यक् ज्ञान हो गया, तब उसका प्रतिकार करनेके लिये उपाय सोचने लगे। ऐसी अवस्थामें मनुष्यको स्वभावत जो क्रान्तिकारी उपाय सूझता है वही इन्हें भी सूझा। उन्होंने क्रान्ति-सम्बन्धी कई पुस्तकें भी पढी थीं। कई जब्त की हुई पुस्तकोंके साथ साथ 'वतन' नामक एक नाटक भी पढा था। इस पुस्तकका इनपर बडा असर पडा। अन्तमें अपने देशमें भी क्रान्ति करनेपर वे आमादा हो गये और अपने अभीष्टकी सिद्धिके लिये क्रान्ति करनेका क्षेत्र तैयार करनेमें लग गये।

इस समय सुल्तान अब्दुल हमीद खाँ द्वितीयका शासन था, यह हम पहलेही कह आये हैं। प्रजावर्ग शासकों और अधिकारियोंकी स्वेच्छाचारितासे आरो आ गया था। प्रजापीडक साम्राज्यवादी शासक अपने विरोधियोंका दमन करनेके लिये जो उपाय करता है, सुल्तान अब्दुल हमीदने भी वैसेही उपाय रच रखे थे।

क्रान्ति और जन सत्ताके इस वर्त्तमान युगमें वे अपनी एक छत्र शक्तिको कायम रखना चाहते थे। सुल्तान अब्दुल हमीद भी, उन अहम्मन्य सत्ताधिकारियोंकी तरह, जो वर्त्तमान युगके बढते हुए प्रवाहकी ओरसे अपनी आँखें मूँदकर गये-गुजरे जमानेके स्वप्न देखते हैं, यह समझते थे, कि वे अपने गुप्तचरोंकी सहायतासे टर्कीमें क्रान्ति और जन-सत्ताकी लहरको रोक लेंगे। परन्तु जब किसी देशमें स्वदेश प्रेमकी जागृतिकी नदीमें स्वतन्त्रताकी बाढ़िया आजाती है और लोकमतका प्रबल प्रभञ्जन उसे आन्दोलित कर

देता है, तब फिर उसे रोकनेके लिये कौन आगे बढ़नेकी हिम्मत कर सकता है ? जो कोई उसके मार्गमें विघ्न डालनेके लिये आ खडा होता है, वह करारेपरके वृक्षकी तरह जड मूलसे उखड कर सदाके लिये विनष्ट हो जाता है। रूसके अत्याचारी जारकी जो दशा हुई, वह संसारकी आँखोंके सामने इस बातका एक प्रत्यक्ष प्रमाण है—एक तरोताजा नजीर है।

अस्तु ; सुल्तान अब्दुल हमीदने भी इस प्रतिघातिनी शक्तिको अन्यान्य स्वेच्छाचारी शासकोंकी तरह दबा देनेकी चेष्टा की थी। तमाम टर्कीमें उनकी खुफिया पुलिसका जाल फैला हुआ था, तथापि क्रान्तिके भावोंको फैलानेवालोंके उद्योगको दबानेमें वह असमर्थही रहा।

क्रान्तिकारी कमाल

अध्ययन-कालके कार्य

मुस्तफा कमालका कुस्तुनतुनियाके विद्यालयका अध्ययन अभी समाप्त नहीं हुआ था। ग्रेजुयेट होने और डिप्लोमा पानेमें अभी और कुछ दिन बाकी थे। इसी समय मुस्तफा कमालने अपना क्रान्तिकारी विचार दृढ कर लिया और उसके अनुसार काम शुरू कर दिया। उन्होंने यह संकल्प कर लिया कि षड्यन्त्र करके टर्कीकी वर्त्तमान सरकारको पलट दिया जाये।

उद्देश्य स्थिर हो जानेपर उन्होंने कार्यमें हाथ लगाया। सबसे पहले उन्होंने अपने कई मित्रोंसे अपना इरादा जाहिर किया। इनके साथी समाजी और मित्रोंपर पहलेसेही इनकी धाक जमी हुई थी। वे इनकी बडी इज्जत करते थे। अतः इनकी बातें मान गये।

सबकी रायसे एक गुप्त संस्था स्थापित की गयी। इस संस्थाके द्वारा सर्व-साधारणमें स्वतन्त्रता और प्रजा-सत्ता आदि का भाव जागृत करनेके लिये, लोकमत अपने पक्षमें बनानेके लिये, प्रजा और राजाके अधिकार स[illegible] लिये, प्रजाके स्वत्वपर शासकोंकी दस्त[illegible] लिये

और प्रजा सत्तात्मक शासन स्थापित करनेके उपाय बतानेके लिये एक समाचार पत्र प्रकाशित किया।

इस गुप्त संस्थाके सभापतित्व तथा उसके मुख पत्रके सञ्चालक और प्रधान सम्पादकका कार्य भार मुस्तफा कमालने स्वय ग्रहण किया। कुछ दिनोंतक यह कार्य बड़े जोरो से चलता रहा। सर्वसाधारणमें इस समाचार पत्र द्वारा एक नवीन जागृतिका भाव आने लगा।

इधर मुस्तफा कमाल अपनी कार्य सिद्धिके लिये अपना कार्य बड़ी योग्यता और सफलताके साथ कर रहे थे। उधर सुल्तान-के गुप्तचर इस गुप्त संस्था और उसके मुख पत्रके संचालकों और लेखकोंको खोजमें फिर रहे थे। मुस्तफा कमाल इन खुफियोंका हाल अच्छी तरह जानते और सदा अपने कार्य बड़ी सतर्कता और सावधानताके साथ करते थे। कमाल अगर चालाक और सतर्क थे तो, ये खुफिये भी बड़े कौंइयाँ थे! उन्होंने पता लगाकरही छोड़ा। पर पहले कोई गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

कुछ दिनों बाद सरकारकी ओरसे स्कूलके अधिकारियोंके नाम एक चेतावनी आयी, कि 'स्कूलके कुछ लड़के राज विद्रोहात्मक कार्यमें सम्मिलित हो रहे हैं, अतएव उन लड़कोंका पता लगाया जाये और पता लगनेपर उन्हें दण्ड दिया जाये।' साथही भविष्यमें ऐसा आचरण करनेवाले विद्यार्थियोंको कठोर दण्ड देनेकी धमकी भी दी गयी थी।

यह सब कुछ हुआ, परन्तु मुस्तफा कमालका काम इन धमकियों और चेतावनियोंसे भला कब रुकनेवाला था? उन्होंने और भी सतर्कताके साथ अपना काम जारी रखा। उनके अदम्य उत्साह और अबाधित गतिमें कौन रुकावट डाल सकता था!

अध्ययनके पश्चात्

रूमकी राजधानी कुस्तुनतुनियाके सैनिक विश्वविद्यालयने मुस्तफा कमालको सेना नायकका पद प्रदान किया। सेनामें वे "लेफ्टिनैण्ट" बनाये गये। इस समय उनकी अवस्था केवल २२ वर्षों की थी। सेनामें प्रवेश करनेपर भी इन्होंने अपना गुप्त आन्दोलन जारी रखा। अपने अध्ययनकालमें इन्होंने जो गुप्त समिति स्थापित की थी, अब स्तम्बोलमें उसका सदर मुकाम कायम करके काम करना शुरू किया।

खुफिया विभागवाले पहलेसेही इनके पीछे पड़े हुए थे। उन मेंसे एक इनके साथ हो लिया और बराबर इनके साथ रहकर सब कामोंको अच्छी तरह देख लिया। इसी खुफियाने इन्हें तथा उस गुप्त समितिके कई अन्यान्य सदस्योंको एक दिन गिरफ्तार करा दिया।

कहते हैं, जिस दिन इन्हें विश्व विद्यालयका 'डिप्लोमा' अर्थात् सैनिक शिक्षामें उत्तीर्ण होनेका प्रमाण-पत्र मिला, ठीक उसी दिन यिल्डीजसे एक सरकारी पत्र भी मिला। इस पत्र द्वारा मुस्तफा कमाल यिल्डीज बुलाये गये और वहीं उनपर मामला

चलाया गया। इनके राजद्रोही साबित होनेपर ये जेलमें ठूंस दिये गये। यहाँ ये एक काल कोठरीमें बन्द कर दिये गये। इसी काल कोठरीमें इन्हें लगातार तीन मासतक रहना पड़ा।

इस परिस्थितिमें यदि मुस्तफा कमालके बदले और कोई आदमी होता, तो सम्भव था, कि वह अपना विचार बदल लेता। पर मुस्तफा कमालका मस्तिष्क इन कठिनाइयोंसे डाँवा-डोल होनेवाला न था। वे जैसी दृढ़ताके साथ पहले काम करते थे, अब भी—कारागारमें आबद्ध होनेपर भी—उसी प्रकार-की स्थिरमतिसे अपने पूर्व निर्दिष्ट अभीष्टकी सिद्धिकी ओर अग्रसर होनेको प्रस्तुत थे।

निर्वासित अवस्थामें

अस्तु, तीन महीनेतक काल कोठरीमें आबद्ध रखकरही टर्की सरकार शान्त नहीं हुई। उसने सन् १९०२ में उन्हें देश निर्वासनका दण्ड देकर सीरियाके एक एकान्त प्रदेशमें भेज दिया और समझ लिया, कि अब बला टल गयी। परन्तु युवक कमाल जैसे "कार्यं वा साधयेम् शरीरं वा पातयेम्" की नीतिके अनुसार चलनेवाले दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्यके सहायक जगदीश्वर हुआ करते हैं।

वहाँ, उस एकान्त सुदूर विदेशमें भी, मुस्तफा कमाल अपने उद्देश्यसे विरत नहीं हुए। वहाँ भी उन्हें अपनेही समान उद्देश्यों का एक आदमी मिल गया। यह आदमी भी राजनीतिक अप

राधी बताकर निर्वासित किया गया था। बस, फिर क्या था! दोनों समान धर्मा समान कर्मा, मिलकर दिन-रात अपने उद्देश्यों की पूर्त्तिकी तदबीर सोचने लगे। दोनोंने मिलकर अपने विचारों को प्रचारित करनेके लिये एक समिति स्थापित की। मुस्तफा कमाल पहलेसेही सीरियाको अपने विचारोंके प्रचारके लिये अच्छा क्षेत्र समझते थे। इस प्रकार उन दोनोंने मिलकर जो गुप्त समिति वहाँ स्थापित की, उसका नाम "स्वतन्त्रताका समिति" रखा गया।

इस संस्थाका काम बड़ी तेजीसे होने लगा। इसके सदस्योंकी संख्या बड़े धड़ल्लेसे बढ़ने लगी। कुछही दिनोंमें प्रायः समस्त सीरियामें इस समितिके सदस्य होगये। बेरूत, जफा जेरूजलम आदि बड़े-बड़े शहरोंमें इस संस्थाकी शाखाएँ स्थापित हो गयीं। संस्था यथाविधि रूपसे अपना काम करने लगी।

पुनः सलोनिकामें

अब कमाल सलोनिकाको अपनी अभीष्ट सिद्धिका एकमात्र सर्वोत्तम क्षेत्र समझकर वे सलोनिकामें आकर काम करनेका विचार करने लगे। उन्होंने देखा, कि सीरियाके युवकोंमें वह बल नहीं है, जो सलोनिकाके युवकोंमें है। यद्यपि सीरियामें उनके मतका प्रचार पूर्ण [illegible] सलोनिकामें आना उन्होंने परम [illegible]

इस समय सलो[illegible]

के हाथोंमें था। शुक्री पाशा एक सच्चे देशभक्त, सच्चे मुसलमान और बुलन्द खयाल आदमी थे। वे मुस्तफा कमालके स्वदेश प्रेम और स्वातन्त्र्य प्रियताको अच्छी तरह जानते थे और मन-ही मन उनकी प्रशंसा करते थे। मुस्तफा कमालने उनके पास गुप्त रीतिसे एक पत्र भेजा। इस पत्रमें इन्होंने अपने सब विचारोंको स्पष्ट रूपसे लिख भेजा। साथही अपने भावी कार्य-क्रमका भी विवरण संक्षेपमें लिख दिया था।

शुक्री पाशाको इस पत्रके देखनेपर जैसाही आश्चर्य हुआ, वैसाही उनका हृदय मुस्तफा कमालकी जबर्दस्त दलीलोंपर मुग्ध होगया! मुस्तफा कमालने अपने प्रत्येक कार्य और विचारको औचित्यपूर्ण सिद्ध करनेके लिये जो अकाट्य युक्तियाँ पेश की थीं, उन्हें देख, शुक्री पाशा हैरतमें आ गये।

मुस्तफा कमालने अपने उद्देश्यकी पूर्त्तिके लिये उस पत्र द्वारा गवर्नरकी सहायता भी माँगी थी। शुक्री पाशापर इनके इस पत्रका अत्यधिक प्रभाव पड़ा, परन्तु चूँकि वे विवश थे, इसलिये इस पत्रका कोई लिखित उत्तर न देनाही उन्होंने उचित समझा। साथही उन्होंने अपने एक विश्वासी वृद्ध मित्र द्वारा मुस्तफा कमालको यह कहला भेजा, कि वे अप्रत्यक्षरूपसे उनकी सहायता करनेको हर तरहसे तैयार हैं।

इस आश्वासन वचनको पाकर मुस्तफा फिर सलोनिकाके लिये रवाना हो गये। कुछ दिनों बाद वे पैलेस्टाइन और मिस्रकी ओरसे होते हुए सलोनिका पहुँचे। वहाँ पहुँचनेपर इन्हें

वहाँके गवर्नरसे तो विशेष कुछ सहायता नहीं मिली, पर इतना अवश्य हुआ, कि ये कुछ दिनोंतक वहाँ गुप्त भावसे रह सके। प्रायः आठ महीनेतक इनपर किसीकी दृष्टि नहीं पड़ी।

जिस समय ये सैलोनिका पहुंचे, उस समय वहाँ टर्कीकी सरकारको बदलदेनेके लिये बड़े जोरोंका आन्दोलन चल रहा था। कुछ राज विद्रोही नवयुवकोंकी सहायता पाकर इन्होंने यहाँ भी अपना काम जारी कर दिया ; पर इस बार भी ये अधिक दिनोंतक अपना कार्य न कर सके। क्योंकि गुप्त भावसे कबतक रह सकते थे ? अन्तमें भेद खुलही गया और इन्हें सैलोनिकाका काम स्थगित रखकर वहाँसे हट जाना पड़ा।

परन्तु इसी समय इनके कई मित्रोंके बीच विचावमें पड़ जानेके कारण इनके अपराध क्षमा कर दिये गये और इन्हें फिर अपना सेना-नायकका पद भी मिल गया। अब ये कुस्तुनतुनियामें रहने लग गये। यहाँ ये "अन्जुमने इत्तहाद व तरक्की" अर्थात् "ऐक्य और उन्नति" नामक संस्थामें मिल कर कार्य करने लगे। कहते हैं, कमाल पहले इस संस्थाके विरुद्ध थे, पर अपना काम बनते देख, वे अपना पूर्व विरोध भूलकर इसी संस्थाके साथ सम्मिलित होकर कार्य करने लगे। परन्तु मुस्तफा कमाल अपने लक्ष्यसे, कभी—किसी अवस्थामें भी—च्युत होनेवाले न थे। एक बार वे जिस कामको करनेके लिये खड़े होजाते, उसे पूरा करके ही छोड़ते थे।

इसी "अन्जुमने इत्तहाद व तरक्की," नामक संस्थाकी सहाय

तासे सन् १६०८ ई० की राज्य क्रान्ति हुई थी। यह राज्य क्रान्ति "रक्त शून्य-क्रान्ति" कहलाती है। इस क्रान्तिमें, अनवर पाशा, जमाल पाशा और 'फतही बे' भी सम्मिलित थे। इस क्रान्तिका परिणाम यह हुआ, कि सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय सुल्तानके पदसे अलग कर दिये गये और एक प्रकारको राष्ट्रीय पालामेण्टकी संस्थापना हुई। अब्दुल हमीदके छोटे भाई मुहम्मद खामिस (पाँचवे) सुल्तान बनाये गये।

यद्यपि इस क्रान्तिके द्वारा राष्ट्रीय पार्लमेंटको स्थापना हो गयो, तथापि उससे मुस्तफा कमालके विचार पूर्ण नहीं हुए, उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं हुआ। इसका कारण यह था, कि अब टर्कीके शासनकी बाग-डोर सुल्तानके हाथोंसे निकलकर अनवर पाशाके हाथमें आगयी।

मुस्तफा कमालका जो अभीष्ट था, वह सिद्ध नहीं हुआ और अनवरने शासन-सूत्र अपने हाथोंमें लेलिया। इस कारण स्वभावत अनवर पाशा और मुस्तफा कमाल पाशामें बनती नहीं थी। अनवर प्रधान युद्ध सचिव हुए। वे जो चाहते, कर देते। अनवरको तूती इस प्रकार बोलती देख, मुस्तफा कमाल अत्यन्त दु खित हुए। पर वे निराश होनेवाले जीव न थे, अत वे अपने उद्योगसे विरत नहीं हुए।

सेनापति कमाल

योग्य सेना-नायक

एक योग्य सेनापतिमें जितने गुणोंकी आवश्यकता होती है, वे सब मुस्तफा कमालमें पूर्ण मात्रामें विद्यमान हैं। सेनापर शासन करते समय उसे किस प्रकार अपने कर्तव्यका ज्ञान कराया जाता है, स्वदेश प्रेमकी उत्तेजना किस प्रकार प्रत्येक सनिकके हृदयमें भर दी जाती है, किस प्रकार प्रत्येक सैनिक द्वारा अपने नायककी आज्ञाका पालन कराया जाता है और सेनाके अन्दर क्या क्या दोष होते हैं तथा उन्हें दूर करनेके लिये कैसे उपायोंका अवलम्बन करना चाहिये—ये सब बातें कमाल बहुतही अच्छी तरह जानते हैं।

इसीसे इनके अधिकारमें जब जो कुमुक या सेना विभाग दिया गया, तब सबसे पहले इन्होंने उसे सब प्रकार योग्य और कार्य कुशल बनानेपर विशेष लक्ष्य रखा। जब सबसे पहले इन्हें सेना-विभाग शिक्षा देनेके लिये मिला, तब इन्होंने पहले उसके समस्त दोषोंको निकाल डाला और तब उससे काम लिया। सन् १९०८ की राज्य क्रान्तिके समय मुस्तफा कमालने अपने सैनिकों द्वारा जो आश्चर्य्य जनक कार्य कर दिखाये, उन्हें देखकर टर्कीके

सेनापति कमाल।

Burman Press Calcutta.

बड़े-बूढ़े सेनापतियोंने भी दाँतों उँगली काटी थी। इनकी योग्यता, दृढ़ता और धीरताको देखकर इनके विरोधियोंको भी इनकी प्रशंसा करनी पड़ी थी।

सन् १९१० में टर्कीके समर-सचिवकी आज्ञा पाकर ये फ्रान्स गये थे। वहाँ इनके मित्र फतही थे टर्कीकी ओरसे सैनिक राजदूत थे। मुस्तफा कमाल वहाँ सैनिक परामर्श-दाता होकर गये थे। इस पदपर भी उन्होंने अपनी योग्यता प्रदर्शित की थी। मैडेम गालिस उनकी स्मरण शक्तिकी प्रशंसा करती हुई कहती हैं, कि 'ये उस समय केवल तीन महीनेतक फ्रान्सकी राजधानी पैरिसमें रहे, परन्तु इन्हें आज भी फ्रान्सके लोगोंकी रहन सहन, उनके खयाल आदिकी बातें खूब याद हैं।' सेना नायकके लिये यह भी एक अत्यावश्यक गुण है।

तराबलीसके कार्य

यूरोपीय महायुद्धके आरम्भ होनेके प्राय ३ वर्ष पहले अर्थात् सन् १९११ ई० में इटलीने तराबलीस (ट्रिपोली) पर चढ़ाई की। तुर्कोंकी सरकारने अर्बों और वहाँ रहनेवाले तुर्कोंकी रक्षाके लिये अपने यहाँसे कुछ सेना और कई सैनिक अफसर भेज दिये। इन फौजी अफसरोंमें मुस्तफा कमाल भी एक थे। उस समय ये मुस्तफा कमाल बे कहलाते थे।

मुस्तफा कमालने देखा, कि टर्कीसे जितने सैनिक आये हैं, उनकी संख्या बहुत कम है। साथही जो अफसर आये

हैं, वे भी अधिक दिनों तक यहाँ नहीं रह सकते। इसलिये उन्होंने यह विचार किया, कि अर्बोंकी ही एक अच्छी शिक्षित सेना तैयार कर दी जाये। यह विचार कर उन्होंने अर्बोंको एकत्र करना आरम्भ कर दिया और कुछही दिनोंके अन्दर अर्बोंकी इस नव संगठित सेनाको कवायद सिखायी, नवीन अस्त्र शस्त्रोंका प्रयोग सिखाया और युद्ध-नीति की शिक्षा दी।

इस प्रकार बहुतही अल्प समयके भीतर, उन्होंने अशिक्षित अर्बोंकी इस सेनाको वर्त्तमान सामरिक शिक्षा देकर ऐसा सुशिक्षित और सुसगठित बना दिया, कि सब लोग उसे देखकर हैरतमें आ गये। इनकी इस अद्भुत संगठन शक्तिको देख, टर्कीकी सरकार तथा अन्यान्य यूरोपीय देशोंने मुक्त कण्ठसे इनकी योग्यताकी प्रशसा की।

जबतक यहाँकी सेना अशिक्षित रही, तबतक तो इटली वाले अर्बोंको दबाते गये और बहुतसे अशोंपर अपना अधिकार जमाते गये, परन्तु जब वही सेना मुस्तफा कमाल द्वारा सुशिक्षित बना दी गयी, तब इटलीको पद पदपर कठिनाइयोंका सामना करना पडा। यहाँतक कि अन्तमें उसे पीछे हटना पडा और कई अधिकृत स्थानोंको खाली भी कर देना पडा।

दर्रे-दानियालके कार्य

सन् १९१४ में यूरोपीय महासमर आरम्भ हुआ। जर्मनी बीच-बीचमें टर्कीकी सहायता करता आरहा था। इस लिये जब

उसने टर्कीसे इस युद्धमें सहायता माँगी, तो टर्कीको उसकी सहायता करनी ही पड़ी।

मुस्तफा कमाल पहलेसेही इस युद्धमें टर्कीके शरीक होनेके विरुद्ध थे, क्योंकि वे इससे रूम साम्राज्यकी कोई भलाई नहीं देखते थे। वे टर्कीका निरपेक्ष रहनाही श्रेयस्कर समझते थे।

इस समय अनवर पाशा टर्कीके प्रधान युद्ध सचिव थे। वे रूमको लेकर जर्मनीके पक्षसे महायुद्धमें शरीक हुए। मुस्तफा कमालने उन्हें बहुत मना किया। जब उन्होंने मुस्तफा कमालकी बात न मानी, तो उन्होंने बड़े कड़े शब्दोंमें उनके इस कार्यका विरोध किया।

बलकान युद्धके बादही फनही 'वे' सेनापतिका काम छोड़कर सोफियामें टर्कीके राजदूत होकर चले गये। मुस्तफा कमाल भी उनके साथ सामरिक परामर्श दाता होकर सोफिया गये थे। तबसे अबतक वे सोफियामें ही थे।

मुस्तफा कमालने जब देखा, कि मेरे विरोध करनेका कुछ फल न हुआ, तब उन्होंने अपने पदसे इस्तेफा दे दिया और कुस्तुनतुनिया लौट आये। यहाँ आनेपर अनवर पाशाने, उन्हें दर्रेदानियालमें सेना संगठन करने और मोर्चाबन्दी कायम रखनेकी आज्ञा देकर दर्रेदानियालके युद्ध क्षेत्रमें भेज दिया।

इस विषयमें कुछ अंगरेजी पत्रोंके संवाद-दाताओंका कहना है, कि अनवर पाशा, मुस्तफा कमालको देख नहीं सकते थे। वे चाहते थे, कि किसी तरह मुस्तफा कमाल मर कट जाये। इसीसे

दर्रे दानियालकी कठिन किले बन्दीके कामपर उन्होंने मुस्तफा कमालको उनकी इच्छाके विरुद्ध भेज दिया। परन्तु कुछ मुसलमान पत्र सम्पादकों और विद्वानोंका कहना है, कि यह बात बिलकुल गलत है। वे कहते हैं, कि अनवर पाशा और कमाल पाशामें भलेही किसी विशेष बातका मतभेद हो, पर वे एक दूसरेके दुश्मन नहीं हैं। अनवर पाशाने मुस्तफा कमालको दर्रे दानियालके उस कठिन मौकेपर इसलिये भेजा था, कि वे यह बात अच्छी तरह जानते थे, कि सिवा कमालके और कोई उन कठिनाइयोंका सामना नहीं कर सकता है।

दर्रे-दानियालके इस युद्धमें जर्मन-जेनरलों और अनवर पाशाकी एक राय रहती थी, पर कमालकी राय इनसे नहीं मिलती थी। जर्मन जेनरलों और अनवर पाशाकी राय थी, कि मित्र राष्ट्रोंकी सेनाको आगे बढ़ने दिया जाये और जब वे बीचमें आजाये, तब उनपर घेरकर आक्रमण कर दिया जाये। परन्तु कमाल ऐसा करना उचित नहीं समझते थे। वे अपनी बातपर अड़ गये और उन्हें शुरूमें ही रोक दिया।

जर्मन सैनिक अधिकारियों और अनवरके लाख कहनेपर भी वे अपनी बातसे न टले। इसपर जर्मन अधिकारी तथा अनवर उनसे बिगड खड़े हुए, परन्तु उनकी अधीनस्थ सेनाने उनका साथ न छोड़ा। वे बराबर उन्हींकी बात मानते रहे।

मुस्तफा कमालने यहाँ अनारकोटा स्थानमें अँगरेज फौजको इस बहादुरीके साथ हराया, कि अनवर और जर्मन अधिकारी

लोग हैरतमें आगये। इस युद्धमें इन्होंने यह एक विशेषता दिखायी, कि इनकी ओरके बहुतही कम सैनिक काम आये और अँगरेज फौजको बुरी तरह हार खानी पड़ी।

इस युद्धमें उन्होंने अपने सैनिकोंकी जानें बड़ी खूबीके साथ बचायीं और उनकी निगरानी बराबर इस तरह करते रहे, जैसे पिता अपने पुत्रकी देख भाल करता है।

इसी कारण तमाम सैनिकोंमें उनकी प्रशंसा फैल गयी। सब सैनिक सदा मुस्तफाकोही चर्चा करने लगे। पहले मुस्तफा कमालने यह बात छिपा रखी; परन्तु उनके कुछ न कहनेपर भी भला यह बात छिप कैसे सकती थी? तमाम तुर्की संवाद पत्रोंमें उनकी इस वीरताकी बातें प्रकाशित हो गयीं। तभीसे मुस्तफा कमालको अँगरेजी संवादपत्र "डिफेण्डर-आफ-दी डार्डेनलीज" अर्थात् "दर्रे-दानियालके रक्षक" कहने लगे।

इस युद्धमें मुस्तफा कमालके अधीन १६०००० सैनिक थे। जो सेना नायक इतने सैनिकोंको सुचारु रूपसे अपनी आज्ञाके वशवर्त्ती बनाये रख सकता है, जो इस प्रकार शत्रुओंको हराकर भी अपनी प्रशंसाकी परवा नहीं करता है, वह कोई मामूली सेनापति नहीं गिना जा सकता।

रूसियोंसे युद्ध

आत्म प्रशंसी जर्मन सेनाध्यक्षों तथा अनवर पाशाने जब देखा, कि दर्रेदानियालकी जैसी कठिन लड़ाईमें और अपनी जिद्द कायम

रखकर भी मुस्तफा कमाल विजयही प्राप्त किये जारहे हैं, तब उन्हें वहाँसे हटाकर टर्कीके उत्तरी भागमें, ककेशियन सीमापर रूसियोंके साथ लड़ने भेज दिया।

परन्तु कमालकी तकदीरने वहाँपर भी उसका साथ न छोड़ा! छोड़ती कैसे? जो आदमी अपनी तदवीरोंसे अपनी तकदीरको, जिधर चाहे उधर घुमा देनेकी ताकत रखता है, उसके पास तो तकदीर बेचारी हाथ बाँधे खड़ी रहती है!

वहाँ पहुँचकर उन्होंने बड़ी सफलताके साथ रूसियोंका सामना किया। वहाँ जाकर उन्होंने मुसलमान फौजका अच्छी तरह सङ्गठन किया और पीछे हटते हुए रूसियोंको और भी पीछे हटाकर अपना पाया मजबूत कर दिया।

पद-त्याग

महायुद्धके समय जर्मन प्रधान सेनापति वान फालकेनहेन तुर्कों की सहायताके लिये टर्की आया हुआ था। इसने शाम में तुर्कोंकी रक्षाके लिये सेनापतिका पद ग्रहण किया। इसकी युद्ध नीति मुस्तफा कमालको पसन्द न थी। वह जिस चालसे चलता था, उसका परिणाम टर्कीके लिये अच्छा न था, यह बात मुस्तफा कमाल अच्छी तरह जानते थे। वान फालकेनहेनने अँगरेजोंसे बागदाद पुन छीननेका हठ किया। अनवर पाशाने उसकी बात मान ली। यह देख, कमालसे रहा न गया। उन्होंने पहले इसका विरोध किया, बहुत तरहसे उन्होंने समझाया, पर

अनवरने उनकी एक भी न मानी। उन्हें फिर एक बार अपनेको नीचा देखना पड़ा। उनके मनमें बड़ी ग्लानि उत्पन्न हुई। उन्होंने अपने पदसे इस्तीफा दाखिल कर दिया।

अनवर पाशाने, जो इस समय टर्कीकी सरकारका हर्त्ता कर्त्ता हो रहा था, मुस्तफा कमालके पद-त्याग पत्रका भी कुछ खयाल नहीं किया। बल्कि उन्हें अलप्पोमें आकर रहनेका हुक्म दे दिया। यह भी एक प्रकारका निर्वासन दण्ड था।

भविष्य-वाणी

२० सितम्बर सन् १६१७ ई० को अलप्पो स्थानसे ग्राण्ड वजीर तलात पाशा और समर-सचिव अनवर पाशाके पास मुस्तफा कमालने जो रिपोर्ट भेजी थी, उसमें उन्होंने टर्कीको परिस्थितिका इस प्रकार वर्णन किया था —

"इस महासमरमें टर्कीके शरीक होनेके कारण टर्कीकी आन्तरिक परिस्थिति दिन ब दिन खराब हुई चली जा रही है। शान्तिप्रिय और साधारण प्रजाजन टर्कीको सरकारसे अत्यन्त, असन्तुष्ट हो रहे हैं और वे सरकारसे कोई सम्बन्ध रखना नहीं चाहते। बाहरवाले, जो रूम साम्राज्यके अन्दर आकर बस गये हैं, वे भी बेतरह ऊब उठे हैं। उनके बाल-बच्चों और बूढ़ोंको भोजन मुहय्या नहीं किया जारहा है। प्रजाजन सरकारकी इस बदइन्तजामीसे उसके विरुद्ध खड़े होनेको तुल गये हैं।

"असैनिक सरकारका दृढ़ होना नितान्त आवश्यक हो रहा

है। जो परिस्थिति हो रही है, उसे सम्पूर्ण अराजकता कहना भी अनुचित नहीं होगा। अर्थ-सङ्कटको यातने समस्त प्रजा जनकी मति डाँवा डोल होरही है। यदि अब भी युद्ध जारी रखा गया, तोपरिणाम बहुतही बुरा होगा। टर्कीकी सल्तनत सदाके लिये मटियामेट हो जायेगी। उसका नाम भी मिट जायेगा।"

"अँगरेज लोग फिलस्तीनमें ईसाई राज्य स्थापित कर लेंगे, जिसका फल यह होगा, कि मिश्र, स्वेज नहर और लाल समुद्र पर भी उनका यथेष्ट अधिकार और प्रभाव रहेगा। हमारी समस्त उपजाऊ जमीन और तीर्थ स्थानोंपर उनका अधिकार कायम हो जायेगा और अन्तमें टर्की समस्त इस्लाम-जगत्से अलग कर दिया जायेगा।"

मुस्तफा कमालने यह भविष्य वाणी उस समय की थी, जब कि संसारके किसी बड़े से बड़े सेनापति या दूरदर्शी व्यक्तिको भी यह परिणाम दिखाई नहीं दिया था। मुस्तफा कमालने ये बातें इस तरह कही थीं, मानों उन्हें ये परिणाम स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। मित्र राष्ट्रोंकी विजय मानों उनको आँखोंके आगे नाच रही थी, वे परिस्थितिको खूब अच्छी तरह समझ रहे थे। वे देख रहे थे, कि किस तरह टर्कीकी शक्ति दिन व दिन क्षीण होती चली जाती है।

मुस्तफा कमाल बराबर इस बातपर जोर देते रहे, कि हमारे तीर्थ स्थानोंके सैनिक तुर्क सेनापतिके अधीन रहें। सायही वे जर्मनीके सेनापति वान फालकनहेनके उद्देश्यका भी बीच

बीचमें भण्डाफोड करते रहे। वे नहीं चाहते थे, कि जर्मन सेना-पतियों द्वारा तुर्कोंके उर्वर प्रदेशों और तीर्थस्थानोंकी रक्षा हो; क्योंकि ऐसा होनेसे भविष्यमें टर्कीके लिये बुरा परिणाम होनेकी सम्भावना थी।

ग्राण्ड ड्यूकसे सामना

जब ये रूम साम्राज्यके पूर्वीय स्थानोंकी, रूसियोंके हाथोंसे रक्षा करनेके लिये भेजे गये थे, तब इन्होंने रूसियोंके अधिकारसे मौच और बिटलिस नामक स्थान ले लिये थे। वहाँ रूसी सेना ग्राण्ड ड्यूक निकोलास द्वारा परिचालित होती थी। ग्राण्ड ड्यूक बड़े जबर्दस्त सेनापति समझे जाते हैं, पर उन्हें भी मुस्तफा कमालके आगे हार खानी पडी।

स्वतन्त्र सेनापति

स्वातन्त्र्य-प्रियता

मुस्तफा कमाल अपनी स्वदेश भक्ति, अपने स्वदेश-प्रेम और अपनी योग्यताके लिये समस्त तुर्कोंके हृदयमें घर कर चुके थे। तमाम तुर्क उन्हें अपना वास्तविक नेता मानने लगे थे और अपनी वीरताके लिये वे पहलेसे ही प्रसिद्धि पा चुके थे।

अलप्पोमें अपनी सरकार द्वारा निर्वासित होकर वे चुपचाप बैठ रहनेवाले जीव नहीं थे। वहाँ उन्होंने कुछ नौजवान तुर्कोंकी सहायतासे जर्मनोंके बारूदखानेपर एक दिन हमला किया, क्योंकि शीघ्रही वे आक्रमणकारी अङ्गरेजोंसे भिड़ना चाहते थे।

इस प्रकार उन्होंने यह दिखा दिया, कि वे न तो जर्मनोंकी सहायता चाहते हैं और न मित्र राष्ट्रोंसेही पनाह माँगना चाहते हैं। वे चाहते थे, कि तुर्कोंकी रक्षाके लिये स्वय तुर्क ही लड़ें। तुर्कीके बाहरवालोंका तुर्कीके अन्दर आना भी वे अच्छा नहीं समझते थे।

वे चाहते थे, कि तुर्क अपनी स्वाधीनताकी रक्षा आपही करें; और वे किसीकी नकल करना न सीखें, न किसीपर भरोसा ही करें।

वर्लिन-यात्रा

मुहम्मद पाँचवे, कुछ दिन पहले, जब वे टर्की के युवराजकी हैसियतसे वर्लिन गये थे, तब मुस्तफा कमाल भी उनके साथ हो लिये थे। मुस्तफा कमालने उन्हें अपना परिचय दिया और प्रधान मन्त्री तलात पाशा और समर-सचिव अनवर पाशाके अधिकार परिमित कर देने और स्वेच्छाचारिता रोकनेके लिये कहा था।

फिलस्तीनकी रण-यात्रा

इधर मुस्तफा कमाल अलगही अपना कार्य बडी तत्परताके साथ कर रहे थे। तुर्कोंमें वास्तविक स्वदेश प्रेमकी शिक्षा देते फिरते थे और इस तरह अपनी स्वतन्त्र शक्ति बढा रहे थे। उधर जर्मनीकी सामरिक शक्ति क्रमश क्षीण होती चली जाती थी। अनवर पाशा, तलात पाशा और जर्मन सेनापतिकी एक भी न चलती थी। निरुपाय होकर उन्होंने मुस्तफा कमालकी सहायता पानेके लिये एक और उपायका अवलम्बन किया।

जर्मन सेनापति और अनवर दोनोंने अनवरके पास पत्र भेजे और उन पत्रोंमें उनके स्वदेश प्रेमकी बडी लम्बी-चौडी प्रशंसाएँ कीं और उन्हें फिर लौट आनेका आग्रह किया। अलप्पोसे लौट आनेपर वे फिलस्तीनके रण क्षेत्रमें भेज दिये गये।

पर इस समयतक फिलस्तीनपर अँगरेजोंके पैर जम चुके थे। अब वहाँ थोडीसी सेनाके साथ जाकर कमाल क्या कर

सकते थे। तो भी उन्होंने जो कुछ किया, जिस बुद्धिमत्ता और दूरदर्शितासे काम लिया वह सर्वथा प्रशंसनीय है। उन्होंने जेनरल एलेनबीकी धधकती हुई आगकी तरह सेनाके मुखमें अपने थोड़ेसे सैनिकोंको डालकर भी बचा लिया और शत्रुसेनाको आगे बढ़नेसे रोक दिया। क्या यह विजयकी अपेक्षा कुछ कम सफलताकी बात है?

यहाँसे लौटते समय वे बड़ी प्रसन्नताके साथ बागदादकी ओर चले। अब वे कई सेना विभागोंके प्रधान बना दिये गये थे। रणपांकुरा कमाल अपनी सेनाओंको लेकर विजयके गौरवसे गौरवान्वित होकर जा रहा था। भविष्यमें भी विजय प्राप्त करनेकी आशासे उस वीरका हृदय चौगुना होरहा था। एक दिन रास्तेमें, एक जगह अपनी सेनाका पड़ाव डालकर वे ठहरे थे। इसी समय उन्हें उनके किसी अत्यन्त विश्वासी मित्रका एक पत्र मिला। इस पत्रमें महासमरके बन्द होनेकी बात लिखी थी। अब मुस्तफा कमालने बागदादमें जाकर मित्र राष्ट्रोंकी सेनासे युद्ध करना उचित न समझा। यहाँसे वे कुस्तुनतुनिया लौट आये और ये ठीक उसी दिन कुस्तुनतुनिया पहुँचे, जिस दिन मित्र राष्ट्रोंकी सेनाने कुस्तुनतुनियामें जाकर पैर रखा था।

महासमरका अन्त

लगातार छ वर्षोंतक घनघोर युद्ध होनेके बाद मित्र राष्ट्रोंके प्रबलतम शत्रु जर्मनीकी सामरिक शक्ति अत्यन्त क्षीण हो गयी।

इधर मित्र राष्ट्रोंकी शक्ति भी क्षीण हो चली थी, परन्तु उसे अमेरिकासे बडी भारी सहायता मिल गयी थी। अत उसने जर्मनीको धर दबाया, साथही अन्तरग कलहोंके उठ खडे होनेसे वह और भी घबरा उठा।

इधर रूसमें सोवीट सरकारकी स्थापना हो चुकी थी। अत एव वहाँकी दुनियाही बदल गयी थी। उसने मित्रराष्ट्रोंका साथ छोड दिया। आस्ट्रिया पहलेसेही हतबल हो चुका था। टर्की जर्मनीका साथ दे रहा था, पर यहाँ भी राष्ट्रवादी तुर्क जर्मनीकी सहायता करनेके विरोधी हो रहे थे।

ऐसी अवस्थामें महासमरका बन्द होना आश्चर्यजनक नहीं था, बल्कि उसका जारी रहना ही आश्चर्यजनक था। अन्तमें ११ वीं नवम्बर सन् १९१८ ई० को उस दीर्घकाल व्यापी महासमरका एक प्रकार अन्त हुआ। जर्मनीको मुँहके बल गिरना पडा। साथही साथ टर्कीका भी भाग्य फूटा।

तुर्कराष्ट्र वादियोंके नेता मुस्तफा कमाल जिन कारणों, जिन बातों और जिन हानियोंका अनुमान कर टर्कीको युद्धमें शामिल होनेसे रोकते थे, आज सबकी आँखोंमें बिना सुझायेही वे सब बातें सूझ पडने लगीं। पर अब सूझ पडनेसे क्या होता है?

मित्र राष्ट्र जर्मनीसे अपनी क्षति पूर्ति करनेके लिये कहने लगे। जर्मनी हार खानेपर भी क्षति पूर्ति करनेको तैयार नहीं हुआ। वह सीधी बातसे राहपर आनेवाला न था। अब भी

वह अपनी लाल लाल आँखें दिखलानेसे बाज नहीं आया। कुचला हुआ और बर्छोंसे छिदा हुआ साँप मौतके पास पहुँचकर भी जिस प्रकार फुँफकार मारना नहीं छोडता है, जर्मनी भी उसी तरह फुँफकार मार और फन पीट रहा था।

आस्ट्रिया हार मानकर बैठ गया था अत उससे जो कुछ बन पडा था, उसे मित्र राष्ट्रोंको दे दिलाकर वह सिर झुकाकर चुप हो गया था।

बाकी रह गया, बूढा, पुराना टर्की—वह टर्की, जिसपर तमाम यूरोपीय साम्राज्यवादी राष्ट्र बहुत दिनोंसे आँख गडाये देख रहे थे! आज वह भी काबूमें आगया है। फिर भला उसे छोड देना कैसा न्याय है?

उसके भी जो प्रदेश मित्र राष्ट्रोंके हाथ आगये थे, अब उनके बाँट बखरेका सवाल खडा हुआ। मित्र-राष्ट्रोंमें ब्रिटिश सरकारके हाथही बढिया माल लगा था। फ्रान्स और इटलीको भी अगर मक्खन नहीं, तो कमसे कम मठा तो जरूर मिला। फिर क्या था?

मुस्तफा कमाल इस समय कुस्तुनतुनियामें ही थे। वे पहलेसेही—कुस्तुनतुनियापर मित्र राष्ट्रोंके पाँव जमतेही—उनका अभिप्राय समझ गये थे। जो आदमी टर्कीके युद्धमें शरीक होने का परिणाम इतने दिनों पहले कह सकता था, जब कि उसका भविष्य बिल्कुल अन्धकारमें था, वह भला मित्र-राष्ट्रोंका यह भाव कैसे नहीं समझता?

अतएव उन्होंने झट इनका मतलब ताड लिया और सुलतान

को खुद समझाया, पर उन्होंने मुस्तफा कमालकी बात न मानी। वे मानही कैसे सकते थे, जब कि उनका मन्त्रिमण्डलही कमालके विपक्षमें था।

मुस्तफा कमालने इसी समय कुछ दिनोंके लिये अपने कामसे छुट्टी लेली। धूर्त्त अँगरेज जासूस मुस्तफा कमालकी हरकतों-पर नज़र रखने लगे। वे हर समय यह देखते, कि कमाल क्या कर रहे हैं, उनका क्या उद्देश्य है, वे कहाँ जाते हैं और किससे मिलते हैं। उन लोगोंने जो कुछ देखा सुना, उससे अँगरेज लोगोंको बड़ी चिन्ता होने लगी। उनलोगोंने देखा, कि यदि यह तुर्क युवक यहाँ रहेगा, तो सब बना बनाया खेल बिगाड़ देगा। इसलिये उन लोगोंने एक और तरकीब निकाली। तुर्की सरकारके प्रतिनिधियोंसे उसे किसी उपायसे कुस्तुनतुनियासे बाहर हटा देनेके लिये कहा।

उनकी यह तदवीर कारगर होगयी। दामद फरीदके मन्त्रि मण्डलने देखा, कि इस मौकेपर इसे हटानेसे यह योंही नहीं हटेगा। यह सोचकर उसने मुस्तफा कमालको पूर्वीय सेनाओं-का इन्सपेक्टर बनाकर भेज दिया।

१५ वीं मई सन् १९१९ ई० को मुस्तफा कमाल सामसौन पहुँचे। इनके पहुँचनेके ठीक २४ घण्टे पहले यूनानियोंने स्मर्नामें प्रवेश किया था। मुस्तफा कमालने ज्योंही यह बात सुनी, त्योंहीं उन्हें बड़ा क्रोध चढ़ आया। उन्होंने यूनानियोंसे युद्ध करने और उन्हें भगानेका निश्चय कर लिया। साथही उन्होंने

यह भी स्थिर कर लिया, कि यदि तुर्की सरकार इस विषयमें हस्तक्षेप करेगी, तो मैं उसकी बात न मानूँगा।

अनातूलियाके कार्य

उधर तुर्कोंकी सरकारसे मित्र राष्ट्रोंने सन्धिकी शर्तों पर हस्ताक्षर करा लिया। ब्रिटिश साम्राज्यने महायुद्धके समय बार-बार जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, उन्हें उसने अब भुला दिया। इधर मुस्तफा कमाल पूर्वीय टर्कीकी सेनाओंके इन्सपेक्टर बनकर एशिया माइनरमें पहुँचे थे।

वहाँ वे अपना कार्य बडी तत्परताके साथ करने लगे। क्षणिक सन्धिके बादसे अबतक तमाम टर्कोंमें कितनीही छोटी-बडी सैनिक संस्थाएँ राष्ट्रके स्वत्वोंकी रक्षाके लिये संगठित हो चुकी थीं। एशिया माइनर—अनातूलियामें पहुँचकर मुस्तफा कमालने देखा, कि यूनानियोंने स्मर्नापर अपना प्राय सम्पूर्ण अधिकार जमा लिया है—वे क्रमश और भी बढे जारहे हैं।

मित्र राष्ट्रों द्वारा टर्कीके इस शोचनीय परिस्थितिमें पहुँचनेपर यूनानियोंने इस प्रकार लाभ उठाना शुरू किया था। मुस्तफा कमाल और राष्ट्रवादी तुर्कोंसे यह अन्याय नहीं देखा गया।

इधर मित्र राष्ट्र टर्कीसे मेल कर रहे थे और उधर एक नया शत्रु यूनान इस प्रकार अन्याय युक्त लाभ उठाना चाहता था। मित्र राष्ट्रों और यूनानियों—दोनोंने मिलकर इस मौकेपर एक अद्भुत नाटक खेलना शुरू किया। मित्र-राष्ट्रोंसे ग्रीसवाले कहते—

"तुम मुझे छोड दो। देखो, मैं टर्की को यूरोपके याहर निकाल देता हूँ या नहीं।" उधरसे मित्र राष्ट्र जवाब देते,—"खबरदार! ऐसा कभी मत करना, नहीं तो——।" इस प्रकार मित्र-मन्त्रि-मण्डल और यूनानी एक अपनी वीरता और दूसरा अपने न्यायका स्वाँग रच रहा था।

उधर मुस्तफा कमाल तमाम अनातुलियामें उन समस्त छोटी मोटी सैनिक संस्थाओंको एकत्र करनेके काममें लगे हुए थे। उन्हें इस काममें यथेष्ट सफलता भी प्राप्त हुई। तमाम राष्ट्रवादी तुर्क सैनिक-संस्थाएँ उनके अधीन आ गयीं। फिर क्या था? अब मुस्तफा कमालने अबाधित गतिसे यूनानियोंपर भयङ्कर आक्रमण करनेका निश्चय किया।

राष्ट्रवादी तुर्कोंका सहयोग

क्षणिक सन्धिकी घोषणा होनेके बाद जब टर्की सरकारके प्रतिनिधियोंने क्षणिक सन्धिके स्वीकार करनेकी सही कर दी और तुर्कीकी राजधानी कुस्तुनतुनिया मित्र राष्ट्रोंके अधिकारमें आगयी, उस समय कुस्तुनतुनियामें जो राष्ट्रवादी तुर्क नेता थे, वे या तो खुद कुस्तुनतुनिया छोडकर बाहर चले गये या मित्र राष्ट्रों और तुर्की सरकार द्वारा निकाल दिये गये।

अधिकारियोंने समझा, कि इनके यहाँसे चले जानेसे सब गोलमाल मिट जायेगा। ये अगर यहाँ रहते, तो बडा गोलमाल मचाते। परन्तु राष्ट्रवादी तुर्कों ने इससे भी लाभही उठाया।

तमाम राष्ट्रवादी कुस्तुनतुनियासे निकल कर मुस्तफा कमालके पास अनातूलियामें आये। उनका सच्चा सहयोग पाकर मुस्तफा कमालका बल और भी बढ गया।

मुस्तफा कमाल पहलेसेही यूनानियोंको कई जगह शिकस्त दे चुके थे और अब उनका बल बढ जानेपर उन्होंने बडी सफलता के साथ यूनानियोंपर महा भयंकर धावा बोल दिया। अब तमाम अनातूलियामें उनका प्रभुत्व जम गया और प्राय समस्त तुर्क जाति उनकी ओर आशा भरी निगाहसे देखने लगी।

संगठन-कार्य

टर्कीकी समस्त जनता—जो अब बडी बडी कठिनाइयोंसे घिर रही थी, त्राहि त्राहिकी पुकार मचा रही थी और अपनी रक्षाके विविध उपाय ढूँढ रही थी—सहसा मुस्तफा कमाल को इस प्रकार अपना रक्षक, सहायक और त्राता पाकर उनसे आ मिली।

ऐसी परिस्थितिमें मुस्तफा कमाल समय नष्ट करनेवाले न थे। उन्होंने एक तरफ यूनानियोंको दबाना और दूसरी तरफ अपना सङ्गठन कार्य करना आरम्भ कर दिया। जिस बातको वे बहुत दिनोंसे सोच रहे थे, जिस कामको करनेके लिये वे व्याकुल हो रहे थे, आज वही बात, वही काम, उनके सामने स्वय उपस्थित हो गया है। उन्होंने तुरन्त राष्ट्रवादियोंका सङ्गठन-कार्य आरम्भ कर दिया।

राष्ट्र-वादियोंकी कांग्रेस

कुछही दिनोंके अन्दर उन्होंने ऐसा उत्तम सगठन कर दिया, जिसे देखकर मित्र राष्ट्र भी भीतर ही भीतर घबराने लगे।

जुलाई सन् १९१९ ई० में मुस्तफा कमालकी रायसे तुर्क राष्ट्रवादियोंकी काग्रेसकी अर्जेरूममें एक असाधारण बैठक हुई। इसमें राष्ट्रवादियोंने टर्कीकी सरकारसे पृथक् होकर अपने देशकी रक्षाके उपायोंपर विचार किया। रिफत बे, अली फौआद और मुस्तफा कमालने कार्य क्रम स्थिर किया। यह कार्यक्रम केवल सभामें एकत्र होकर लेकचर देने, प्रस्ताव पास करने और सभा मण्डपके बाहर आतेही सब भुला देनेका कार्यक्रम नहीं था। यह देशके जीवन और मरणका कार्यक्रम था। हजारों सैनिकोंके खूनकी दरिया बहानेका कार्यक्रम था।

मुस्तफा कमालके सामने इस समय कई अत्यावश्यक विचारणीय प्रश्न उपस्थित थे। एक तरफ अगर यूनानियोंको खदेड़ भगाने और आर्मेनियोंको दबा रखनेका प्रश्न था, तो दूसरी ओर मित्र राष्ट्रोंकी प्रबल शक्तियोंके साथ सामना करनेका प्रश्न था। साथही यदि वे इस परिस्थितिमें चुप रह जाते, तो टर्कीकी चिरकाल व्यापिनी शान्ति और स्वतन्त्रता सदाके लिये दूर हो जाती। इसके अतिरिक्त टर्कीकी सरकार भी मित्र राष्ट्रोंके वशवर्ती हो चुकी थी। उससे कुछ सहायता पाना तो दूर रहा, उलटे वह राष्ट्रवादियोंके विरुद्ध खड़ी होनेको तैयार थी। ऐसी परि-

स्थितियोंसे घिरकर भी अपना मस्तिष्क ठीक रखना और अपने निश्चित मार्गसे विचिलित न होना, कोई मामूली बात न थी। परन्तु मुस्तफा, कमाल जो कुछ निश्चय कर लेते थे, उससे विमुख होना तो वे जानतेही न थे।

इसी अर्जेरूमकी कांग्रेसके साथ-साथ टर्कों की राष्ट्रीय पार्लमेण्ट—तुर्कों की कौमी सरकारको भी नींव डाली गयी। तुर्कों की नयी सरकार कायम होनेकी घोषणा भी कर दी गयी।

सिवासकी कांग्रेस

इसके केवल कई महीने बाद राष्ट्रवादियोंकी इस नयी कांग्रेस या पार्लमेण्टकी एक और बैठक सिवासमें हुई। अर्जेरूमकी कांग्रेसमें जो बातें तय हुई थीं, वहाँ उन्हीं बातोंकी विस्तार पूर्वक आलोचना की गयी।

इसके सिवा यहाँ यूरोपीय साम्राज्यवादी राष्ट्रोंकी दुरङ्गी चालोंकी भी बडी कड़ी और तीव्र आलोचना की गयी। अमेरिकाके राष्ट्रपति प्रेसिडेण्ट विलसनकी १४ शर्तों के मित्र-राष्ट्रों द्वारा पालन न किये जानेकी बात भी कही गयी और साथही अमेरिकाको निरपेक्ष बताया गया।

तुर्की के तमाम तीर्थस्थानों और अधिकारियोंके पास मुस्तफा कमालने अपनी अपील भेजी। समस्त बाहरी राष्ट्रोंके पास भी अपनी स्वतन्त्रताका घोषणापत्र भेजा।

इन अपीलोंमें, जो मुस्तफा कमालने टर्कोंकी विलायतोंमें

भेजी थीं, यह बात स्पष्ट रूपसे समझा दी गयी थी, कि राष्ट्रवादी तुर्क एक सरकारके कायम रहते हुए, भी एक नयी सरकार कायम करना क्यों चाहते हैं ? स्मर्नापर यूनानियोंका अधिकार करना और उससे होनेवाली भयङ्कर हानियों और उनके द्वारा किये गये अत्याचारोंका हाल, उन्हें दण्ड देनेकी आवश्यकता, दामद फरीद्-की सरकारकी गलतफहमी और उसके अनुचित कार्य आदि सब बातें इन अपीलोंमें समझा दी गयी थीं। साथही वर्त्तमान परिस्थितिमें तुर्कों को अपनी स्वतन्त्रता कायम रखनेका उपाय क्या हो सकता है, यह भी बताया गया था।

सुल्तानसे अन्तिम अपील

इन राष्ट्रवादी तुर्कों ने १५ जुलाई १९१९ को सुल्तानके पास एक अत्यन्त आवश्यक अपील भेजी। इस अपीलमें मुस्तफा कमालने लिखा था —

"तुर्क राष्ट्रवादियोंने अपने, देशकी अपनी कौमकी आजादीको कायम रखनेके लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेका निश्चय किया है। परन्तु अपना कार्य आरम्भ करनेके पूर्व, अपने स्वदेशकी रक्षाके लिये, स्वदेशके नामपर हम आपसे यह प्रार्थना करना चाहते हैं, कि आप स्वय इस विषयमें हस्तक्षेप करें और अपने शत्रुओंके बिगड़े हुए दिमागको राहपर लानेके लिये खड़े हो जायें अथवा आपका जो विचार हो, उसे तार द्वारा हम लोगोंको सूचित कर दें, ताकि हम अपना कर्त्तव्य निश्चय कर लें।

"हम लोग आपके प्रत्युत्तरकी प्रतीक्षामें 'तार घर'के पास ठहरे हुए हैं। आप कृपाकर शीघ्र हमारी बातोंका जवाब दीजिये। यदि हमारी उचित और न्यायसंगत आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं की जायेंगी, तो हम वर्त्तमान सरकार और मन्त्रिमण्डलके उत्तर दायित्वका खयाल छोड़ देंगे और अपना कार्य आरम्भ कर देंगे। साथही हमलोग यह भी समझ लेंगे, कि हमलोग जो कुछ करेंगे, उसके लिये टर्कीकी सरकारही जिम्मेवर है।

"हमलोग तमाम दुनियाको यह दिखा देंगे, कि उसमानिया सल्तनत या तुर्क कौममें कितना साहस, कैसी शक्ति और कितनी जबर्दस्त स्वदेशभक्ति भरी हुई है।"

जब यह अपील तार द्वारा सुल्तानके पास भेजी गयी, तब जो लोग तार देनेके लिये आये थे, वे बड़ी देर तक सुल्तानके उत्तरकी प्रतीक्षामें तार घरमेंही पड़े रहे। परन्तु सुल्तान तो इस समयतक मित्रराष्ट्रोंके हाथमें आ गये थे। जवाब कौन देता? अत निश्चित समय बीत गया। सुल्तानका कोई जवाब नहीं आया। बस, फिर क्या था? 'या नसीब या किस्मत, या तख्त या तख्ता!'—यही अन्तिम निश्चय हो गया।

सरकारी हुक्म

टर्कीकी सरकार मित्र राष्ट्रोंके हाथोंमें थी। वे जो चाहते, करते। पर मुस्तफा कमालपर उनका कोई प्रभाव नहीं था।

तथापि वे मुस्तफा कमालके कार्योंको देख देखकर आश्चर्यमें आते और भीतर ही भीतर घबराते थे।

उन्होंने सुल्तानके द्वारा मुस्तफा कमालपर यह आज्ञा जारी करायी, कि मुस्तफा कमाल या तो कुस्तुनतुनिया लौट आयें या सेनाध्यक्षका पद छोड दें।

अबतक मुस्तफा कमाल धर्माचार्यके खयालसे सुल्तानका सम्मान करते थे, परन्तु अब उन्होंने उस सम्मानके भावको धारण करना व्यर्थ समझा; क्योंकि अब वे सुल्तान या मुसल्मान-धर्मके गुरु नहीं,—बल्कि गैर मुसल्मान राष्ट्रोंके हाथोंके कठपुतले हो रहे थे। उन्होंने सुल्तानकी वह आज्ञा न मानी।

मुस्तफा कमालके अधीन जो सैनिक थे, वे भी उन्हींकी तरफ रहे। उन्होंने अब मुस्तफा कमालकोही अपना धर्म और कर्म गुरु समझा। इसके कारण भी यथेष्ट थे। वास्तवमें इस समय मुस्तफा कमालही मुसल्मानोंके युग धर्मके रक्षक और आचार्य-का काम कर रहे थे।

राष्ट्रीय समझौता

इसी समय तुर्क राष्ट्रवादियोंकी इस नवीन संस्थाके २० सदस्योंने एक "राष्ट्रीय समझौते" का मसौदा बनाकर टर्कीकी पार्लमेण्टमें पेश करनेके लिये दामद फरीदके पास भेजा। टर्की पार्लमेण्टमें जो सदस्य थे, उनमें अधिकतर लोग मुस्तफा कमा-लकी रायसे मिले हुए थे। यह देखकर उन लोगोंने समझा, कि

राष्ट्रवादियोंका यह समझौता टर्कीकी पार्लमेण्ट शायद स्वीकार कर लेगी। यही सोचकर उन लोगोंने टर्कीकी पार्लमेण्टको भी तोड़ दिया और उसके कितनेही मेम्बरोंको माल्टामें निर्वासित कर दिया।

कुस्तुन्तुनियाके कितनेही पत्र-सम्पादक, नेता और व्याख्याता आदि फिर भी इस समय कुस्तुनतुनियासे निकाल बाहरकर दिये गये। इस प्रकार जितने लोग निकलते थे, सब आ आकर मुस्तफा कमालके साथ मिलते गये।

इस प्रकार मुस्तफा कमालका दल क्रमश बढ़ताही गया।

अंगोरा सरकार

नगरका दृश्य

जेरूसम और सिवासमें राष्ट्रवादी तुर्कों की जो कांग्रेस हुई, उसके निश्चयके अनुसार अङ्गोरामें तुर्कोंकी राष्ट्रीय पार्लमेण्ट संगठित की गयी। एक पत्र संवाद दाताने वर्तमान अङ्गोराका एक अत्यन्त रोचक वर्णन किया है, जिसे यहाँ दे देना अनुचित नहीं मालूम होता। सवाददाताका कहना है —

"अङ्गोरा एशियाई-टर्कीका एक बहुत पुराना नगर है। वह पहाड़ोंपर, समतलसे ५०० फीटकी ऊँचाईपर बसा हुआ है। उसका पुराना नाम अन्सीरा था लेकिन अब उसे अङ्गोरा कहते हैं। यहाँके निवासी प्राचीन प्रथाओंके अनुयायी हैं। एशिया-माइनरके अन्य नगरों, यथा ट्रेबीजोन्द और समासौनपर यद्यपि यूरोपीय सभ्यताका काफी प्रभाव पड़ा है, परन्तु अङ्गोरा ज्यों-का त्यों ही बना हुआ है।

अङ्गोरामें घुसतेही सबसे पहले उसके कब्रिस्तान नजर आते हैं। ये कब्रिस्तान अत्यन्त प्राचीन और विशाल हैं एवं नगरके चारों ओर फैले हुए हैं। एक अर्द्ध गोलाकार रूपमें बढ़ते हुए अन्तमें पहाड़की चोटियोंमें विलीन हो जाते हैं। इन

कब्रिस्तानोंसे घिरा हुआ नगर एक छोटे गाँवकासा दिखाई देता है, जिसके मस्तकपर एक दुर्ग शोभायमान है। इस दुर्गकी, सफेद-सफेद मीनारें नगरकी प्राचीनता और रमणीयताको प्रकट करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। नगर लगभग १००० वर्षका पुराना है।

"यह प्राचीन रोमन और यूनानी नगरोंके खण्डहरोंपर बसा हुआ है, जिनके चिह्न अब भी कहीं कहीं दृष्टि गोचर होते हैं। जहाँ कहीं, स्तूप, खम्भे तथा गढ़े हुए पत्थर मिलते हैं, उन सब पर प्राचीन रोमन अथवा लैटिन लेख खुदे हुए हैं; अभी हालमें ही नगरके जिस हिस्सेमें आग लग गयी थी, उसमें एक रोमन मन्दिरको छोडकर और कुछ नहीं बचा। यहाँ यूरोपीय पोशाकमें बहुत कम लोग मिलते हैं।

"बाजारोंमें बडी भीड रहती है। खच्चरोंके कारण गलियोंमें और भी अधिक गडबड बढ जाती है, क्योंकि कोई भी तुर्क बिना खच्चरके नहीं चलता। एक ओर सौदागर, कारीगर, नाई, नानबाई इत्यादि आवाज लगा लगाकर लोगोंको अपनी-अपनी ओर खींचते हैं, दूसरी ओर लुहार लोग खच्चरोंके नाल तैयार करनेके लिये घन कूटते हैं। कहींपर कुछ लोग बेलनसे ऊन फैलाते मिलेंगे, तो कहींपर कुछ सफेद सफ़ेद पदार्थों का हलवा तैयार करते मिलेंगे। एक स्थानपर छोटेसे बाजारमें नीलाम होता देख पडेगा, जिसमें एक हृष्ट पुष्ट तुर्क जोरसे चिल्लाता हुआ फर्श नीलाम करता मिलेगा।

"बाजारमें कहीं कहीं सैनिकोंके झुण्ड मिलेंगे। उनकी पोशाक सब प्रकारकी होती है—जर्मनी, अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, रूसी इत्यादि। इसी प्रकार उनके जूते भी विभिन्न प्रकारके होते हैं। कोई कोई तो अनेक कारतूसोंकी पेटियाँ बाँधे मिलेंगे, परन्तु सबके मुखसे आप यूनानियोंको मार भगानेकी बात बिना सुने न रहेंगे।

"व्यापार वणिज्य अत्यन्त साधारण रूपमें होता है। यद्यपि कुछ लोग विलायती सामान भी बेचते पाये जायेंगे, परन्तु अधिकतर दूकानदार भोजन सामग्री, मोजे, जीन, पीतलके बर्तन और सस्ते गहने बेचते मिलेंगे। इनके यहाँसे विशेषत सैनिक लोगही सौदा खरीदते हैं। पश्चिमीय सभ्यताकी संस्थाओंने अभी अपना अड्डा इस शान्त, प्राचीन और पवित्र नगरमें नहीं जमा पाया।

"यहाँपर क्लब, पुस्तकालय, पुस्तक भण्डार अथवा थियेटर नहीं हैं। सार्वजनिक मतका सगठन यहाँपर गलियों और तन्दूरों परहोता है और मौलवी लोगही सर्वसाधारणके प्रतिनिधि समझे जाते हैं। इन मौलवियोंका प्रभाव और बल अभीतक ज्यों का त्यों ही है। सन्ध्या होतेही बाजारों और गलियोंमें निस्तब्धता छा जाती है। इस निस्तब्धताको गलियोंमें घूमनेवाले कुत्तेही भङ्ग करते हैं।"

इसी शान्तिप्रिय छोटेसे नगरमें राष्ट्रवादियोंकी पार्लामेण्टका बदस्तूर दफ्तर बनाया गया। महासभाका यह दफ्तर बहुत बडा नहीं है, तथापि वह परम पवित्र है, क्योंकि वह स्वतन्त्रताकी वेदी है— तुर्कों के लिये एक महान् तीर्थ स्थान है।

अर्जेरूमके गवर्नर

२५ फरवरी १९२० के रूटरके एक तारसे जाना जाता है, कि इस सुप्रीम नेशनल ऐसेम्बलीकी स्थापनाके बाद तुर्क राष्ट्र वादियोंने मुस्तफा कमाल पाशाको अर्जेरूमके गवर्नरके पदपर अभिषिक्त किया है।

राष्ट्रवादियोका बल

इस समय तुर्क कौम परस्तोंका बल कितना बढ़ गया था, यह लण्डनके 'टाइम्स' पत्रके एक सवाददाताके उस पत्रसे मालूम होता है, जो उसने ८ मार्च सन् १९२० को लिखकर प्रकाशनार्थ भेजा था। उस पत्रमें मि० वेस्टनने तुर्क राष्ट्रवादियोंके बल, मुस्तफा कमाल पाशाकी अद्भुत सगठन शक्ति और राष्ट्रवादियोंकी एकताकी आलोचना करते हुए लिखा था, कि आजकल टर्कीकी असल हुकूमत कुस्तुनतुनियामें नहीं, अंगोरा या सिवासमें है। उन्होंने यह भी लिखा था, कि यदि ब्रिटिश मन्त्रि मण्डल या मित्र-राष्ट्र टर्की की सरकारसे किसी बातका निबटारा करना चाहते हैं, तो वे पहले मुस्तफा कमालसे निपट लें।

इस पत्रसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है, कि कुछही दिनोंके अन्दर राष्ट्र वादियोंका प्रभाव और बल बहुत बढ़ गया था और बाहर वालोंको भी इसका अच्छी तरह अनुभव होने लगा था।

राष्ट्रीय कोष और सेना

अंगोरा सरकारके पर-राष्ट्र सचिव बक़ समी बे जब हालमें "लण्डन कानफरेन्समें" सम्मिलित होनेके लिये विलायत गये थे, तब लण्डनसे निकलने वाले "इस्लामिक न्यूज" नामक संवाद-पत्रके सम्पादक उनसे मिले थे। उनके पूछनेपर समीबेने कहा था, कि "अंगोरा सरकारकी आर्थिक अवस्था अच्छी है, परन्तु व्यय भी यथेष्ट है। अभी ५॥ करोड पौण्डकी (अर्थात् ८२ करोड ५० लाख रुपयेकी) आय है।"

सेनाका परिमाण पूछनेपर उन्होंने कहा था, कि—"वहाँ बालक, युवा और वृद्ध सभी सैनिक कार्य करना सीख रहे हैं और सदा सैनिक सहायताके लिये तैयार रहते हैं। अभी दो लाख वेतनिक और अवैतनिक सैनिक हैं, जो अपने प्राणोंको त्यागनेके लिये सदा प्रस्तुत रहते हैं। आशा है, शीघ्रही ऐसे सैनिकोंकी संख्या ढाई लाख तक पहुँच जायेगी; क्योंकि जहाँ जहाँ सैनिक भर्ती करनेके अड्डे कायम किये गये हैं, वहाँ-वहाँ नित्यही बीसों सैनिक स्वेच्छासे, स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीय स्वतन्त्रताकी बलवती प्रेरणासे प्रेरित होकर भर्ती हो रहे हैं।

शस्त्रागारपर आक्रमण

क्षणिक सन्धिके बादसेही राष्ट्रवादी तुर्कोंने असाधारण उत्साह और शक्तिके साथ काम करना आरम्भ कर दिया। वीर,

स्वतन्त्र तुर्क कौम, जो बराबरसे आजादीकी हवामें साँस लेती चली आ रही थी, आज उसे गुलामीकी जञ्जीरमें बाँध रखना भला कैसे सम्भव था ? इन लोगोंने सबसे पहले मित्र राष्ट्रोंके गैलीपोलीवाले शस्त्रागारपर छापा मारा।

यद्यपि इस स्थानपर पहलेसेही मित्र-राष्ट्रोंका सैनिक पहरा था और वे पहलेसे सतर्क भी थे, तथापि राष्ट्रवादी जवान उसपर छापा मारकर सफल-मनोरथ हो गये ! यह कुछ कम आश्चर्यकी बात न थी, उनके इस पहले कामने मानों उनका भावी विजयकी सूचना उसी समय दे दी थी।

शस्त्रागारपर छापा मारकर यहाँसे ये लोग ८० हजार बन्दूकें, ५ लाख कारतूस और तैंतीस मेशीन-गनें उठा तथा बहुतसा युद्ध सामान ले आये।

ब्रिटिशोंकी धारणा

११ मार्च सन् १९२० ई० को लार्ड कर्ज़नने अपने एक भाषणमें कहा था, कि ब्रिटिश सामरिक अधिकारियोंका ख्याल है, कि मुस्तफा कमाल पाशाकी सेनाका जो परिमाण बताया जाता है, वह बेहद ख़याल्तसे भरा हुआ है। इस समय लण्डनमें सर्व साधारणकी धारणा थी, कि मुस्तफा कमाल पाशाका सामना करनेके लिये यूनानी फौजही काफी है। तुर्क राष्ट्रवादियोंकी शक्ति, जो चारों ओर बिखरी हुई है, अकेली किस किस तरफ जायेगी और किस किसका सामना करेगी ?

सम्बन्ध-विच्छेद

१२ मार्च १९२० को मित्र राष्ट्रोंके उन सैनिक अधिकारियोंने, जो इस समय कुस्तुनतुनियामें पाँव जमा चुके थे, यह निश्चय कर लिया, कि कुस्तुनतुनियाकी डाक और तारकी इमारतोंपर अधिकार कर लिया जाये, ताकि टर्की सरकार और मुस्तफा कमाल पाशामें परस्पर संवादोंके आदान प्रदानकी सम्भावना भी न रहे।

इसी निश्चयके अनुसार १७ मार्च १९२० को मित्र राष्ट्रोंने कुस्तुनतुनियाकी तमाम डाक और तारकी इमारतोंपर अधिकार कर लिया और इस प्रकार मुस्तफा कमाल और टर्कीकी सरकार का सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

राष्ट्रवादियोंपर इल्जाम

टर्कीके बाहर रहनेवाली मुसल्मान जनताके हृदयमें इन तुर्क राष्ट्र वादियोंके प्रति, जिसमें सहानुभूतिका भाव जागृत होने न पाये, इसकी भी यथेष्ट चेष्टा की गयी। संसारके आगे राष्ट्रवादी तुर्कोंपर कितनेही इल्जाम लगाये गये। टर्की सरकारने भी मित्र राष्ट्रोंकी आवाजके साथ अपनी आवाज मिला दी। इस प्रकार सबने मिलकर एक स्वरसे कहा,—"ये राष्ट्रवादी तुर्क अपने धर्माचार्य्य खलीफाकी आज्ञाओंका भी पालन नहीं करते। सुतरां वे धार्मिक न्यायानुसार प्राणदण्ड पाने योग्य हैं, साथही

चौमुखी लड़ाई

इधर मित्र राष्ट्रोंने १७ मार्च सन् १९२० ई० को कुस्तुनतुनिया नगरके ऊपर बाकायदा कब्जा कर लिया था उधर यूनानियोंको स्मर्नापर अधिकार किये बहुत दिन हो गये थे। टर्की के शाम प्रान्तके बाहर सलेशियामें कई जगहोंपर फ्रान्सीसी फौजें छावनियाँ डाले पड़ी हुई थीं। कुस्तुनतुनिया और इसके चारों ओर ब्रिटेनवालोंकी फौजें थीं। इधर अर्मेनियावाले आक्रमण और लड़ाई करनेके लिये आगकी साँसें ले रहे थे। तुर्की की सरकारने भी, जो अब केवल नाममात्रके लिये खड़ी थी, इन राष्ट्रवादी तुर्कों के दमनके लिये मित्र राष्ट्रोंके कहने सुननेसे एक सैनिक दल बना लिया था।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि मुस्तफा कमाल चारों ओरसे विकट शत्रुओंसे घिरे हुए थे। उनकी शक्ति, ऐसी भयङ्कर परिस्थिति और उनके अधिकारोंको देखकर कोई यह विश्वास नहीं कर सकता था, कि मुस्तफा कमाल अपनी आजादीको कायम रखनेमें सफलता प्राप्त करेंगे। परन्तु जो यह सोचे हुए थे, कि "कार्य वा साधयेयम् शरीर वा पातेयम्" वे भला कब अपने

६ नवम्बर १६२० के एक तारसे पता चलता है, कि बोल-शेविक अर्मेनियनोंकी ओर बढ़ रहे हैं और राष्ट्रवादी तुर्कोंकी फौजें अलेगजेण्ड्रियाकी ओर अग्रसर हो रही हैं।

इसके बाद जेनेवाके एक तारसे मालूम होता है, कि राष्ट्र-वादी तुर्कोंने अर्मेनियाकी राजधानी अरीवानपर अधिकार कर लिया है। १० और ११ नवम्बरके कई तारोंसे मालूम होता है, कि अर्मेनियनोंने तुर्कोंके साथ सन्धि करनेकी प्रार्थना की है। अन्तमें दिसम्बरके आरम्भमें मुस्तफा कमाल पाशाकी सरकार-के साथ अर्मेनियनोंने सन्धि करली।

फ्रान्सीसियोसे युद्ध

अर्मेनियावाले सन् १६२० ई० के अन्ततक परास्त कर दिये गये। राष्ट्रवादी तुर्कों की विजय हुई। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये, कि तुर्कों की या अंगोरा सरकारकी सारी शक्ति इस सालके अन्दर अर्मेनियनोंको भगानेमेंही खर्च होती रही। इसी समयमें तुर्क फौजोंने फ्रान्सवालोंसे भी लड़ाई शुरू कर दी थी।

११ मार्च १६२० के लण्डनके एक तारसे मालूम होता है, कि सलेशियामें फ्रान्सीसियोंकी जो फौजें छावनी डाले पड़ी हैं, शायद उनपर भी राष्ट्रवादी तुर्क आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं।

४ अप्रेलका तार है, कि सलेशियाकी परिस्थिति अच्छी नहीं दिखाई देती। फिर २८ अप्रेलके पेरिसके एक तारसे जाना जाता है,

मुस्तफा कमाल पाशाकी फौजोंने फ्रासीसियोंके सैनिक पडावोंको घेर लिया है। इसके बाद युद्ध होने लगा। युद्धमें फ्रासीसी दब गये और वे भागनेको उतावले होने लगे। पहले फ्रासीसियोंने यह चेष्टा की, कि अपना बचाव करते हुए, पीछे हट जायें; पर वे यह भी न कर सके

अन्तमें फ्रासीसियोंने मुस्तफा कमाल पाशासे लडाई रोकनेके लिये प्रार्थना की। मुस्तफा कमालने कुछ शर्तोंपर लडाई रोकना मजूर किया। फ्रासवालोंने उनकी शर्तों को स्वीकार कर लिया और लडाई बन्द कर दी गयी।

परन्तु विजेता राष्ट्र होकर एक सामान्य पराजित जाति द्वारा अपनी हार माननेको भला वह इतनी आसानीसे कैसे तैयार हो सकता था? सम्भव है, अपना मतलब सिद्ध करनेके लिये ही उसने मुस्तफा कमालकी शर्त्तें स्वीकार कर ली हों। पीछे जब उसे कुछ और सहायता मिल गयी, और उसने अपनेको मुस्तफा कमालकी फौजी ताकतको दबा देने योग्य समझा, तब उसने फिर लडाई छेड दी।

इस बार मुस्तफा कमालने अपनी और भी ताकत लगाकर फ्रान्सीसियोंपर आक्रमण किया और सलेशियाका बहुतसा अंश खाली करा लिया। उनकी कितनीही तोपें भी राष्ट्रवादी तुर्कों ने छीन ली। अन्तमें फ्रान्सीसियोंको सलेशिया खाली कर देना पडा। इसपर फ्रान्स सरकारने मित्र राष्ट्रोंपर इस बातके लिये जोर दिया, कि सेवर्सकी सन्धि बदल दी जाये। इस

प्रकार फ्रांसीसियोंके साथ तुर्क राष्ट्रवादियोंकी लड़ाईका अन्त हुआ।

यूनानियोंसे युद्ध

यूनान और टर्कीके बीच बहुत दिनोंका पुराना शत्रु भाव था, पर यूरोपीय महासमरमें यूनानने भाग नहीं लिया था। उसने जब देखा, कि टर्की महा शक्तियों द्वारा पराजित होकर हतबल हो गया है, तब झटसे स्मर्नापर अधिकार कर लिया और तमाम मुसल्मान-जनतापर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया।

यूनानियोंके इन अत्याचारोंसे तमाम मुसल्मान-जगत्में बड़ी भयङ्कर खलबली मच गयी। यदि कोई विजेता राष्ट्र स्मर्नापर अधिकार कर लेता, तो मुसल्मान जगत् शायद इतना अन्दोलित न होता।

यूनानका यह अनुचित और अनधिकार आक्रमण भला मुस्तफा कमाल कैसे देख सकते थे? उन्होंने उसे खदेड़कर टर्कीकी सीमाके बाहर कर देनेका विचार किया और विचार स्थिर होते ही उन्होंने यूनानके विरुद्ध लोहा उठा लिया।

२४ जून १९२० के एक तारसे ज्ञात होता है, कि राष्ट्रवादी तुर्कोंने यूनानियोंपर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया है। कई स्थानोंपर तुर्क फौजोंने यूनानियोंको हौलनाक शिकस्तें दी हैं। दो दिनोंतक तुर्क फौजने अङ्गोरा सरकारके वीर सेनापति इस्मत बे के नेतृत्वमें यूनानियोंपर ऐसा भयङ्कर आक्रमण किया है, कि

यूनानी बदहवास होकर बराबर भागते गये हैं। इस आक्रमणमें यूनानियोंकी कितनीही तोपें, बन्दूकें, गोले बारूद आदि युद्ध-सामग्री तुर्कों के हाथ लगीं।

तुर्कों का कहना है, कि यूनानियोंके चार हज़ार सैनिक इस युद्धमें मारे गये और चार हज़ार तीन सौ जवान घायल हुए।

तुर्क इस प्रकार सफलता प्राप्त करते, यूनानियोंकी फौजोंको शिकस्तें देते और उनके भाग जानेपर उनकी युद्ध सामग्रियां इकट्ठी करते हुए आगे बढने लगे।

इसी बीचमें लण्डन कानफरेन्सके कारण कुछ दिनोंके लिये लडाई बन्द रही। परन्तु कानफरेन्सका परिणाम आशा प्रद न होनेके कारण तुर्कों ने फिर यूनानियोंपर आक्रमण किया।

४ अप्रेल १९२१ के कुस्तुनतुनियाके एक तारसे मालूम होता है, कि यूनानियोंपर तुर्कों की एक बहुत बडी सेनाने आक्रमण किया है। इस सेनामें प्राय बीस हज़ार तुर्क सैनिक हैं। इनके पास गोले बारूद वगैरह लडाईके सामान भी यथेष्ट परिमाणमें हैं। १६ इञ्च गोलाईकी तोपें भी बहुत हैं।

इसी तारीखके एक और तारसे जाना जाता है, कि यूनानी पीछे हटते चले जा रहे हैं और तुर्क उनको खदेड़ते जा रहे हैं।

२४ अप्रेलके तारसे मालूम होता है, कि यूनानियोंने खेत छोड दिया और वे बिलकुल बदहवासीकी हालतमें [illegible]

सितम्बरके महीनेमें यूनानके [illegible]

[illegible] राष्ट्रोंकी सहायता मिल[illegible]

बार १७ दिन व्यापी बडी गहरी लडाई हुई। इस युद्धमें यूनानी हताहतोंकी संख्याका अनुमान ६५००० किया जाता है। इस बार अङ्गोरा सरकारके सेनापति नूरुद्दीन पाशा, इस्मी पाशा और काज़िम पाशाकी अधीनतामें तुर्क फौजने यूनानियोंपर हमला किया था। और इस बार यूनानियोंको और भी बुरी तरह शिकस्त खाकर भागना पडा।

परन्तु यूनान इतनेपर भी शान्त न हुआ। वैसे तो वह कभीका शान्त हो गया होता, पर उसके पिट्ठुओंने अपना मतलब गाँठनेके लिये उसे बार-बार उसकाया किया और वह भी उनकी हवा-पट्टीमें आ आकर अपनाही नुकसान करता गया।

यही सिलसिला बराबर जारी रहा। ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल उधर यूनानियोंकी सहायता करनेका वचन देता और इधर अंगोरा सरकारको सन्धि करनेके लिये कहता, मित्र राष्ट्रोंकी सन्धि परिषद्ें करता रहा। पर उनमें मित्र राष्ट्रोंकी ओरसे जो शर्तें पेश होतीं, उन्हें अंगोरा सरकार नहीं मानती। इसी झगडेमें एक वर्षका समय निकल गया। अन्तमें इस वर्षके सितम्बर महीनेमें उसे मुस्तफा कमालने नाकाम बनाकर छोड दिया और इस प्रकार सेवर्सकी सन्धिकी शर्तों को भी तोड दिया।

अङ्गरेज़ोंसे युद्ध

मुस्तफा कमाल पाशाकी बढती हुई ताक़तको देखकर और उसे इस प्रकार अबाधित गतिसे समस्त विजयी राष्ट्रोंपर

अपना प्रभाव जमाते देखकर भी अंगरेजोंकी ओरसे खुलम-खुला कोई घोर-घमासान नहीं किया गया!

इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला कारण सम्भवत यह है, कि लगातार ५ वर्षोंके यूरोपीय महासमरमें उसने अपनी अपरिमित शक्ति और सम्पत्ति खर्च कर डाली थी। इस अवस्थामें इङ्गलैण्डसे फौज लाकर सुदूर एशियामें युद्ध करना उसके लिये कोई साधारण काम न था। दूसरा कारण यह हो सकता है, कि महासमरके समाप्त होतेही ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत कई स्थानोंमें हल चलसी मच गयी थी। आयर्लैण्ड और मिश्र अपनी-अपनी स्वतन्त्रताके लिये यदि अपना गला कटानेको तैयार हो गया था, तो भारतवर्षमें भी खिलाफत और पञ्जाबके हत्याकाण्डोंसे एक नया झगडा खडा हो रहा था। तीसरा कारण यह हो सकता है, कि विलायतमें टर्कीके प्रश्नोंपर दो प्रकारके मत वाले हो गये थे। एक मत वाले टर्कीके पक्षमें थे और दूसरे यूनानियोंके पक्षका समर्थन करते थे। सम्भव है, इन्हीं कारणोंसे ब्रिटिश अधिकारी लडनेको तैयार न हुए हों।

यद्यपि राष्ट्रवादी तुर्कोंके साथ अँगरेजोंका कोई विशेष युद्ध नहीं हुआ, तथापि समय-समयपर जहाँ कहीं दोनोंका सामना होगया है, उनका तारोंसे इस प्रकार मालूम होता है —

१ मार्च १९२० के लन्दनके एक तारसे जाना जाता है, राष्ट्रवादी तुर्कोंने कुस्तुनतुनियासे ५५ मील पश्चिम अँगरेज फौजको हट जानेकी धमकी दी है।

१५ मार्च १९२० के एक तारसे मालूम होता है, कि 'टाइम्स' पत्रको समाचार मिला है,'राष्ट्र वादी तुर्कोंकी एक जमायतने अस्म इके पासकी रेलवे लाइनके एक पुलको डिनामाइटसे उडा दिया है। इस पुलके उडा दिये जानेके करीब-तीन चार मिनट पहले एक गाडी गुजरी थी, जिसपर अंगरेज सैनिक अफसर और सेना थी।

२० मार्चका एक तार है, कि ब्रिटिश कण्ट्रोल-अफसर कैप्टेन फारेस्ट मुस्तफा कमाल पाशाके हुक्मसे गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

२८ मईके लन्दनके एक तारसे जाना जाता है, कि मुस्तफा कमाल पाशाके हुक्मसे कर्नल रालिनसन अभी तक अर्जेरूममें नजरबन्द हैं। कैप्टेन कैमेल भी अर्जेरूम शहरमें रखे गये हैं। दोनों अच्छी तरहसे हैं। शहरमें सैर कर सकते हैं। एक और अंग-रेज लेफ्टिनेण्ट मि० मण्टको भी कौम परस्तोंने अदावाजा स्थानमें रोक रखा था, पर पीछे इन्हें छोड दिया है।

३ जनवरी १९२१ को कलकत्तेके 'स्टेट्समैन' पत्रका एक संवाददाता लिखता है, कि "राष्ट्रवादी तुर्क कुस्तुनतुनिया और उसके आस पासकी फौजोंसे ऐसा बर्त्ताव करने लगे हैं, कि रुण्डनके मन्त्रि मण्डल और समर-विभागके अधिकारियोंको पुन उनकी ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता जान पडने लगी है। साथही तुर्कों के द्वारा यूनानी फौजका एशियाए कोचकमें खातमा होनेका करीना है।

"मुस्तफा कमाल पाशा दिन दिन अपना सैनिक और

आर्थिक बल बढाते तथा अपने मोर्चोंको जबर्दस्त किये चले जारहे हैं।

"खबर मिली है, कि ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलके कुछ सदस्य मित्र-राष्ट्रोंपर यूनानी फौजकी मदद करनेके लिये जोर दे रहे हैं। परन्तु बहुमत इस पक्षमें है, कि मित्र राष्ट्र शायद फिर इस नयी एशियाई लडाईमें शामिल होनेको तैयार नहीं होंगे। इन्हीं लोगोंका मत है, कि सेवर्सकी सन्धिकी शर्तों पर फिरसे विचार किया जाये। थ्रेस और स्मर्नाको यूनानके हवाले करनेकी जो शर्त है, वह बिल्कुल निकाल दी जाये।

"खबर है, कि लार्ड कर्जन सुप्रीम कौन्सिलकी ओरसे एक कानफरेन्स करानेका विचार कर रहे हैं, और ऐसा इन्तज़ाम कर रहे हैं, जिसमें यूनानी तथा तुर्क प्रतिनिधि भी वहाँ उपस्थित हों तथा उनका एक मेल-मिलाप हो जाये।"

सेवर्सको सन्धिपर लोकमत

इस समय विलायतका लोकमत सेवर्सकी सन्धिके विषयमें क्या खयाल करता था, यह वहाँके सुप्रसिद्ध पत्र "डेली एक्सप्रेस" की उस टिप्पणीसे मालूम हो सकता है, जो इसने इसी समय लिखी थी।

"डेली एक्सप्रेस" कहता है, कि—"सेवर्सकी सन्धिकी शर्तें निकट पूर्वमें सदा एक न एक लडाइ पैदा करती रहेंगी। वे शर्तें एक प्रकारसे निकट पूर्वमें (अर्थात् यूरोपकी पूर्वीय सीमाके

देशोंमें) सदा लडाईकी आग सुलगाते रहनेका एक स्थायी कारण हो रही है।

"इनसे जो आग धधकेगी, वह बढते-बढते तमाम बलकानमें फैल जायेगी। अतएव इस बातकी अत्यन्त आवश्यकता है, कि यह सन्धि-पत्र एक रद्दी कागजका पुर्जा समझकर फाड डाला जाये। टर्कीके विषयका फिरसे नया बन्दोबस्त करनेकी कोशिश की जाये। इस विषयका स्थायी रूपसे निर्णय होना तभी सम्भव है, जब कि यूनानके द्वारा अधिकृत टर्कीके स्थान टर्कीको लौटा दिये जायें। यूनान उन स्थानोंपर न तो अपना अधिकार रखनेके योग्य है और न न्यायत उन स्थानोंपर उसका कोई अधिकारही है।"

अङ्गोरा सरकार मित्र-राष्ट्रोंकी किसी कानफ्
होनेके लिये अपने प्रतिनिधि तभी भेजनेका विचार कर सकती है, जब कि वे स्वय प्रत्यक्ष रूपसे हमारी सरकारको निमन्त्रण देंगे और अपने यहाँसे प्रतिनिधि तभी भेज सकती है, जब वे नीचे लिखी शर्तें मञ्जूर कर लेंगे —

(१) टर्कीके जिस प्रान्तमें या जिन स्थानोंमें गैर तुर्क सरकारोंने अपना अधिकार कर रखा है, उसे वे फौरन खाली करदें।

(२) उसमानिया सरकार किसी राष्ट्रको लड़ाईकी क्षति पूर्तिके रूपमें कोई रकम देनेके लिये बाध्य न की जायेगी।

(३) कुस्तुनतुनियाका मन्त्रिमण्डल फौरन इस्तीफा दे दे, क्योंकि वह मनुदमुख्तारी कर रहा, और उच्छृङ्खल हो रहा है।

(४) सुल्तानके रहनेका स्थान स्तम्बोल हो।

(५) टर्कीसे तमाम गैर-मुल्कोंकी फौजें हटाली जायें।"

युद्ध स्थगित

मुस्तफा कमाल खामखाह खूँरेजी करना नहीं चाहते। वे शान्तिप्रिय हैं, परन्तु अत्याचारियोंका अत्याचार उनसे सहा नहीं जाता है। वे स्वयं जैसे स्वतन्त्र विवेकके आदमी हैं, स्वतन्त्रताके लिये जैसे वे अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेको तैयार रहते हैं, वैसे ही वे दूसरोंकी स्वतन्त्रताको भी कायम रखना चाहते हैं। इसी लिये अब उन्होंने देखा, कि हमारे स्वत्वोंकी रक्षा यदि सद्भावसेही हो जाये, तो झगडा बढानेसे क्या लाभ? यही सोचकर उन्होंने

सन्धिका आरम्भ

टर्की को निमन्त्रण

जनवरी १९२१ को २१ ता० को लन्दन कानफरेन्समें अपने प्रतिनिधि भेजनेके लिये टर्कीको निमन्त्रण दिया गया।

" ३० जनवरीको टर्की सरकारने इस निमन्त्रण पत्रका यह जवाब दिया, कि 'हमें यह निमन्त्रण स्वीकार है, परन्तु राष्ट्रवादी तुर्कोंसे परामर्श किये विना प्रतिनिधियोंका चुनाव नहीं हो सकता है। आशा है, अङ्गोरा सरकार और कुस्तुनतुनियाके वीच तार समाचारोंके आदान प्रदानकी व्यवस्था शीघ्रही हो जायेगी और वहाँसे जवाब आनेपर आपको खबर दी जायेगी।'

टर्कीकी सरकारने इस विषयमें अङ्गोरा सरकारको जो पत्र लिखा था, उसका जवाब देते हुए मुस्तफा कमालपाशाने राष्ट्रवादी तुर्कों की इस नवस्थापित सरकारके सभापतिकी हैसियतसे लिखा —

"अङ्गोराकी यह सरकारही इस समय तमाम टर्कीकी एक मात्र स्वतन्त्र और सर्वजन सम्मत सरकार है। मुझे टर्कीके राष्ट्रने—तुर्क कौमने—इस सरकारका सभापति होनेका गौरव प्रदा नकिया है।

अङ्गोरा सरकार मित्र-राष्ट्रोंकी किसी कानफ्र
होनेके लिये अपने प्रतिनिधि तभी भेजनेका विचार कर सकती है, जब कि वे स्वयं प्रत्यक्ष रूपसे हमारी सरकारको निमन्त्रण देंगे और अपने यहाँसे प्रतिनिधि तभी भेज सकती है, जब वे नीचे लिखी शर्तें मञ्जूर कर लेंगे —

(१) टर्कीके जिस प्रान्तमें या जिन स्थानोंमें गैर तुर्क सरकारोंने अपना अधिकार कर रखा है, उसे वे फौरन खाली करदें।

(२) उसमानिया सरकार किसी राष्ट्रको लड़ाईकी क्षति पूर्तिके रूपमें कोई रकम देनेके लिये बाध्य न की जायेगी।

(३) कुस्तुनतुनियाका मन्त्रिमण्डल फौरन इस्तीफा दे दे, क्योंकि वह खुदमुख्तारी कर रहा, और उच्छृङ्खल हो रहा है।

(४) सुल्तानके रहनेका स्थान स्तम्बोल हो।

(५) टर्कीसे तमाम गैर-मुल्कोंकी फौजें हटाली जायें।"

युद्ध स्थगित

मुस्तफा कमाल खामखाह खूँरेजी करना नहीं चाहते। वे शान्तिप्रिय हैं, परन्तु अत्याचारियोंका अत्याचार उनसे सहा नहीं जाता है। वे स्वयं जैसे स्वतन्त्र विवेकके आदमी हैं, स्वतन्त्रताके लिये जैसे वे अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेको तैयार रहते हैं, वैसे ही वे दूसरोंकी स्वतन्त्रताको भी कायम रखना चाहते हैं। इसीलिये अब उन्होंने देखा, कि हमारे स्वत्वोंकी रक्षा यदि सद्भावसेही हो जाये, तो झगड़ा बढ़ानेसे क्या लाभ? यही सोचकर उन्होंने

राष्ट्रवादी तुर्कों को हुक्म देदिया, कि जबतक सन्धिकी यह बात चीत चल रही है, तबतक सलेशियामें फान्सीसियोंके साथ और इराके अरबमें अँगरेजोंके साथ किसी प्रकारकी लड़ाई भिड़ाई न की जाये। इस प्रकार उन्होंने अपनी तमाम फौजको लड़ाई करनेसे रोक दिया।

६ फरवरी १६२१ को अङ्गोरा सरकारके पर-राष्ट्र सचिव बक्र समी वेने सुलतानके पास इस आशयका एक पत्र भेजा, कि यदि मित्र राष्ट्रोंको तथा टर्कीकी सरकारको हमारी शर्त्त स्वीकार हों, तो हम अपने यहाँसे प्रतिनिधि भेज सकते हैं। हमारी सरकारकी ओरसे जो प्रतिनिधि जायेंगे, वे तमाम तुर्क कौमके प्रतिनिधि-स्वरूप भेजे जायेंगे और लण्डनकी कानफरेन्समें वे अपने खयाल कौमकी भलाई और स्वत्वोंकी रक्षाके लिये प्रकट करेंगे।

प्रतिनिधियोंकी बिदाई

मित्र राष्ट्रों और कुस्तुनतुनियाकी सरकारोंने मुस्तफा कमाल की सरकारकी उपर्युक्त शर्तों मेंसे अधिकाश शर्तों को स्वीकार कर लिया और अङ्गोरा सरकार भी इस कानफरेन्समें स्वतन्त्र रूपसे निमन्त्रित की गयी।

७ तारीखको टर्कीकी सरकारने अपने यहाँसे तीन प्रतिनिधियोंको कानफरेन्समें सम्मिलित होनेके लिये भेज दिया। मुस्तफा कमाल पाशाकी अङ्गोरा सरकारने भी अपने प्रतिनिधि भेजनेकी सूचना कानफरेन्सको देदी।

१ फरवरी १९२१ को जब राष्ट्रवादियोंके प्रतिनिधि अङ्गोरासे विदा होने लगे, उस समय नगरका दृश्य अत्यन्त मनोमोहक होरहा था। तमाम इमारतों और बुर्जों पर राष्ट्रीय विजय-पताकाएँ खड़ी की गयी थीं। नागरिकोंकी बड़ी भारी भीड़, जिसमें स्त्री पुरुष, बूढ़े-जवान सभी शरीक थे, उन्हें बिदाई देनेके लिये एकत्र हुई थी।

"अलविदा" कहते समय मुस्तफा कमाल पाशाने प्रतिनिधियोंसे कहा,—"भाइयो! तुम जिस कामके लिये जा रहे हो, वह तुम्हारा अपना नहीं, कौमका है! तुम्हारे ऊपर अपने देश, जाति और राष्ट्रके स्वत्वोंकी रक्षा करनेका भार दिया गया है। तुमसे मेरा अन्तिम वक्तव्य केवल यही है, कि तुम अपने मुल्कको आजादीको कायम रखनेके लिये अपनी बातोंपर पहाड़की तरह अटल रहना

प्रतिनिधियोंके चले जानेपर सन्ध्याकी नमाज पढ़ी गयी और प्रतिनिधियोंकी सफलताके लिये ईश्वरसे प्रार्थनाएँ की गयीं।

लण्डन कानफरेन्स

सन् १९२१ के फरवरी महीनेमें अन्तके मित्र राष्ट्रोंकी एक परिषद् हुई थी। इस परिषद्में मुख्य विचारणीय विषय दो थे। उनमें पहला यह था, कि जर्मनोसे हर्जाना कैसे वसूल किया जाये और दूसरा विषय यह था, कि टर्कीके साथ जो सन्धि हुई है, उसमें किन किन बातोंका सुधार किया जाये।

इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और इटलीके प्रधान मन्त्री अपने अपने साम-

रिक तथा साम्पत्तिक परामर्श दाताओंके साथ परिषद्में उपस्थित थे। यूनानके प्रधान मन्त्री और नीति निपुण एम० वेनिजेलीस भी वहाँ मौजूद थे। कुस्तुनतुनियाके सुल्तानके वजीर और अङ्गोरा सरकारकी ओरसे भेजे गये प्रतिनिधि सभी ये आदि भी उप स्थित थे।

इस कानफरेन्समें मित्र राष्ट्रोंकी ओरसे अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंका विशेष आदर-सत्कार किया गया। मित्र राष्ट्रोंने पृथक् पृथक् अपनी खास बातें भी कीं। इटलीकी सरकार तथा फ्रांसकी सरकारोंने इनसे एक प्रकार समझौता भी कर लिया। परन्तु ब्रिटिश सरकारके प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्ज यूनानको सम्हाले रखनेका बन्दोबस्त कर चुके थे। इसलिये उनकी परिस्थिति डाँवाडोल थी। परन्तु लायड जार्ज जैसे राज नीतिज्ञ भला ऐसे मौकोंपर कैसे चूक सकते थे!

कई दिनोंतक इस कानफरेन्सकी बैठकें होती रहीं। यूनानके मुख्य मन्त्रीने कहा, कि सेवर्सकी सन्धिकी जो शर्तें निश्चित हुई हैं, वे ज्योंकी त्यों रहें। कोई परिवर्त्तन नहीं हो। परन्तु फ्रान्सके प्रधान मन्त्री इसके विपरीत थे। उन्होंने कहा, कि यह ठीक नहीं है, कि तुर्कों के स्थानोंपर यूनानी अपना अधिकार जमायें। तुर्कों के अधिकृत प्रदेश उसे लौटा दिये जायें। इटली के प्रतिनिधिने भी ऐसीही राय दी।

फलत स्थिर हुआ, कि कुस्तुनतुनियाके आस-पासके प्रदेश यूनानको न सौंपकर सार्व-राष्ट्रीय बनाये जायें और कुस्तुनतुनिया-

में एक बड़ी सेना रखनेके लिये तुर्कों को अनुमति दे दी जाये, इधर केवल स्मर्ना नगरपर ग्रीसका अधिकार कायम रखकर शेष प्रान्त तुर्कों को वापस कर दिये जाये। परन्तु स्मर्ना नगर से तुर्कों का स्वामित्व निम्कुल नष्ट न किया जाये। अर्थात् उसका बन्दरगाह तुर्की व्यापारके लिये खुला रहे। ८० से ६० हजारतक सेना कुस्तुनतुनियामें रखनेको आज्ञा दी जाये और विदेशी लोग तुर्की न्यायालयकी सत्तामें रहें।

सेवर्सकी सन्धि शर्तों में इसी प्रकारके कई और परिवर्त्तन करनेके लिये मित्र-सरकारें तैयार हुइ, परन्तु अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंने उसके उत्तरमें यही कहा, कि 'हम अङ्गोरा जाकर वहाँकी सरकारसे पूछेंगे, कि शर्त्तें उसे स्वीकार हैं या नहीं।'

इसके बाद अँगोरा सरकारके प्रतिनिधि मार्चके तीसरे सप्ताहमें वहाँसे अँगोरेके लिये रवाना हुए और ११ अप्रेलको अँगोरा पहुँचे। अँगोरा सरकारने मित्र-राष्ट्रोंकी उक्त शर्तोंको स्वीकार नहीं किया।

मित्र राष्ट्रोंका रङ्ग-ढङ्ग देखकर राष्ट्रवादी तुर्कों के सर गरोह—अँगोरा सरकारके सभापति—मुस्तफा कमालपाशा खूब अच्छी तरह समझ गये, कि अनातूलियाके इस मसलेका फैसला मेल मिलाप और सौजन्य सद्भावसे नहीं हो सकता।

तलवारसे होगा

इसी समय मुस्तफा कमाल पाशाके सभापतित्वमें राष्ट्रवादी तुर्कोंकी पार्लमेण्टकी एक विशेष बैठक आगेका कार्यक्रम निश्चित

था और वह चौमुखी लड़ाई हुई थी। जिसका हाल पिछले प्रकरणमें आचुका है। इसवार कमालके लोहा उठानेका जो परिणाम हुआ वह भी पाठक ऊपरही पढ़ चुके हैं, कि १९२१ के अन्ततक फ्रान्स, इटाली और अर्मेनियोंने एक प्रकारसे सन्धि करली। परन्तु यूनान अबतक ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलके इशारेसे फुदक रहा था और तुर्कीके कई स्थानोंपर अधिकार किये बैठा था।

इस समय फिर मित्र राष्ट्रोंने और खासकर ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलने अत्यन्त उत्सुकताके साथ निकट पूर्वीय कानफरेन्सका अधिवेशन करनेकी सूचना दी और अङ्गोरा सरकारको फिर निमन्त्रण दिया गया। १९२२ के फरवरी और मार्च महीनोंमें यह सन्धि परिषद् हुई। अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंने फिर वेही शर्तें पेश कीं, जो उन्होंने पहले की थीं मित्र राष्ट्रोंको उनकी शर्तें स्वीकार न हुई। अँगरेज फौजें अबतक टर्कीमें अपना डेरा डाले पड़ी थीं। मुस्तफा कमालने उन्हें कईवार हटनेको कहा, इसपर कुछ दिनों बाद जिनोवा कानफरेन्सकी बातचीत चली; पर उसका भी कुछ फल नहीं हुआ। यदि कुछ फल हुआ, तो यही, कि मुस्तफा कमालकी उद्देश्य सिद्धिमें बेतरह विलम्ब होने लगा। यह विलम्ब मुस्तफा कमालको असह्य मालूम हुआ अन्तमें उन्होंने फिर अपनी रण दुन्दु भी फूँक दी।

करनेके लिये हुई। मुस्तफा कमालने अपने भाषणमें कहा,—
"अनातूलियाके मसलेका फैसला तलवारसे होगा। मेल मिलापसे जो होना था, सो हो चुका। अब इस तरह काम न चलेगा।

"हमने जब मित्र-राष्ट्रोंद्वारा की गयी कानफरेन्समें अपने प्रतिनिधि भेज दिये, तभी मित्र राष्ट्रोंको समझना चाहिये था, कि तुर्क कौमपरस्त मिल्लतसे काम लेना चाहते हैं और वे यूनानियोंके साथ न्याय-संगत तथा उचित समझौता कर लेनेके लिये भी तैयार हैं; परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं समझा। यूनानियोंने हमसे बिना कुछ कहे-सुने, बिना हमारे साथ युद्धकी घोषणा किये स्मर्ना और थ्रेसपर अपना अधिकार कर लिया है।

"यूनानियोंने मित्र राष्ट्रोंकी बात न मानकर, मानो दुनियाके आगे यही सिद्ध कर दिया है, कि तुर्कोंका पक्ष न्यायपूर्ण और उचित है।

"हम तुर्कोंमें जितना स्वदेश प्रेम है, उसकी प्रेरणासे हम अपना सर्वस्व अर्पण करसकते हैं। साथही हमारे पास जितनी युद्ध सामग्री है, उससे हम बहुत दिनोंतक युद्ध कर सकते हैं।

"भाइयो! आप सब तुर्क कौमपरस्तोंको चाहिये कि इस ऐतिहासिक अवसरपर—इस परीक्षाके समयपर—सब लोग एक राय और एक दिल होकर संग्रामके लिये लोहा लेलें और यह विश्वास रखें, कि अन्तमें विजय भी आपके चरणोंके तलेही लोटेगी।"

अन्तिम युद्ध-घोषणा

इसी समयसे फिर मुस्तफा कमालने लोहा उठा लिया

था और वह चौमुखी लड़ाई हुई थी। जिसका हाल पिछले प्रक-रणमें आचुका है। इसप्रकार कमालके लोहा उठानेका जो परिणाम हुआ वह भी पाठक ऊपरही पढ़ चुके हैं, कि १९२१ के अन्त तक फ्रान्स, इटाली और आर्मेनियोंने एक प्रकारसे सन्धि करली। परन्तु यूनान अबतक ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलके इशारेसे फुदक रहा था और तुर्कीके कई स्थानोंपर अधिकार किये बैठा था।

इस समय फिर मित्र-राष्ट्रोंने और खासकर ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलने अत्यन्त उत्सुकताके साथ निकट पूर्वीय कानफरेन्सका अधिवेशन करनेकी सूचना दी और अङ्गोरा सरकारको फिर निमन्त्रण दिया गया। १९२२ के फरवरी और मार्च महीनोंमें यह सन्धि परिषद् हुई। अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंने फिर वेही शर्तें पेश कीं, जो उन्होंने पहले की थीं मित्र राष्ट्रोंको उनकी शर्तें स्वीकार न हुईं। अँगरेज फौजें अबतक टर्कीमें अपना डेरा डाले पड़ी थीं। मुस्तफा कमालने उन्हें कईबार हटनेको कहा, इसपर कुछ दिनों बाद जिनोआ कानफरेंसकी बातचीत चली, पर उसका भी कुछ फल नहीं हुआ। यदि कुछ फल हुआ, तो यही, कि मुस्तफा कमालकी उद्देश्य सिद्धिमें बेतरह विलम्ब होने लगा। यह विलम्ब मुस्तफा कमालको असह्य मालूम हुआ अन्तमें उन्होंने फिर अपनी रण दुन्दुभी फूँक दी।

विजयी कमाल पाशा

यूनानियोंपर आक्रमण

बस, फिर क्या था? मुस्तफा कमालके सैनिकों, सेनापतियों और सेना-नायकोंमें चौगुना जोश आ गया। मुस्तफा कमालकी आज्ञा पाकरही वे अबतक लड़ाईमें हाथ खींचे हुए बैठे थे। उनके दिलोंमें यूनानियोंको उनके कियेका बदला देनेकी प्रबल क्रोधाग्नि तो पहलेसेही प्रज्ज्वलित थी। अतः अब उनकी आज्ञा पातेही उनकी छाती दूनी-चौगुनी हो गयी।

विजयी सेना-दल लेकर मुस्तफा कमाल फिर एक बार यूनानियोंका ध्वंस करने और अँगरेजोंको टर्कीसे हटानेके लिये निकल पड़े। इनकी विजयी सेना बे-रोक भागते यूनानियोंकी ओर बढ़ी। यूनानी सेनाएँ बुरी तरह शिकस्त खा-खा कर मैदान छोड़ भागतीं और भागीं।

इसी समय अँगरेजी फौजके अफसर कैप्टेन थेसिगारने तुर्क सेनाध्यक्षोंको सूचना दी,—"यूनानी स्मर्नासे निकलकर भाग गये हैं। आप लोग अब अगर शान्तिसे स्मर्नाके अन्दर दाखिल होंगे, तो प्रजावर्गमें किसी प्रकारका आतङ्क या डर नहीं छायेगा, वे शान्तिसे रहेंगे।"

यूनानियोंकी दुष्टता

मुस्तफा कमालके विजयी सेना दलने कैप्टेन थेसिगारकी बात मान ली। वे बड़ी शान्तिके साथ स्मर्नामें प्रवेश करने लगे। रास्तेमें उनके सेनापतिपर किसी आर्मेनियनने एक बम फेंक दिया। उससे वे बुरी तरह घायल हुए, परन्तु इतना होनेपर भी उनका सैनिक दल शान्तिभाव धारण किये रहा,—कहीं किसी प्रकारका गोलमाल नहीं हुआ।

दो दिनोंतक तुर्क सैनिक दलोंने स्मर्नामें शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित रखी। इसके बाद शहरमें आग दिखाई दी। देखते देखते उस अग्निने महा प्रचण्ड रूप धारण किया। नगर वासी आर्मेनियों और यहूदियों आदिको जान और मालपर आफत आ गयी। वे जान बचानेके लिये शहरसे बाहर निकलकर भागने लगे।

साथ ही साथ सब दोष तुर्कोंके मत्थे मढनेकी चेष्टा की गयी। इस महाभयङ्कर अग्नि काण्डके दोही दिन बाद [illegible] यतके "टाइम्स" पत्रके सम्वाद दाताने लिखा,—"The t[illegible]

was given over to fire, Billage and massacre" ऐसी भी अफवाहें उडायी गयीं, कि हवा मुताबिक न होनेके कारणही दो दिनोंतक तुर्कोंने शहरमें आग न लगायी—लूट मार नहीं की और न कत्लेआम मचाया।

एथेन्ससे अफवाह उडी, कि करीब १ लाख ८० हजार आदमी मार डाले गये हैं। एक अमेरिकन जहाजपर भागकर १ हजार ८ सौ यूनानियों और आर्मेनियोंने अपनी जानें बचायी हैं। यह भी बताया गया, कि इस महान्‌अग्निकाण्डमें २२ करोड ५० लाख रुपये मूल्यकी वस्तुएँ जलकर भस्म हो गयीहैं। 'रूटर' का अधिकार केवल संवाद देनेका है, पर उसने अपने अधिकारकी बात भूलकर उसपर अपनी ओरसे यह टिप्पणी भी जोड दी,—"The Turk is unfit to govern any one but himself" अर्थात्—"तुर्क केवल अपनेही देशपर शासन कर सकता है, दूसरोंपर शासन करनेकी योग्यता उसमें नहीं है।"

परन्तु साँचको आँच कहाँ? अन्तमें जो सच्ची बात थी, वह निकलही आयी। दुनिया जान गयी, कि स्मर्नाके अग्निकाण्डके लिये कमाल पाशाका सेना दल जिम्मेवार नहीं है। यूनानीही भागते समय शहरमें आग लगाते गये थे और आरमेनियोंने भी शहरमें आग लगानेमें उनकी मदद की थी। पीछेसे यही बात स्पष्ट शब्दोंमें यह कहकर स्वीकार की गयी,—

"burning towns and villages in theire retreat."

अँगरेज आगे बढ़े

अँगरेज लोग चौंक पड़े, क्योंकि स्मार्नामें अंगरेजोंकी जिस पूँजीसे कारवार होते हैं, उनका परिमाण ७·५ करोड़ रुपया है। जिस साकरी जल प्रणालीके ऊपर गैलीपोलीमें महा समरके समय अँगरेजोंको बुरी तरह मुँहकी खानी पड़ी थी, फिर उसी प्रणालीके भीतर उन्हें तटस्थ देशोंकी रक्षा करनी पड़ेगी। अँगरेज लोग अब चुप न रह सके। उन्होंने अन्यान्य देशों और राष्ट्रोंकी सम्मतिकी भी प्रतीक्षा नहीं की। लड़ाईके लिये पुन ब्रिटिश साम्राज्यको तैयार होनेकी घोषणा कर दी गयी। एक विज्ञप्ति निकली —

"Great Britain is prepared to do her part in maintaining the freedom of the Straits and the existence of the neutral zones"

अर्थात्—"ग्रेट ब्रिटन अपने उपनिवेशोंकी रक्षा और देख भाल करने तथा निरपेक्ष देशवासियोंका अस्तित्व कायम रखनेके लिये तैयार होगया है।"

इसीलिये जेनरल हैरिङ्गटनकी सेना बढानेकी व्यवस्था की गयी। भूमध्य सागरमें बेड़ोंपर हुक्म जारी किया गया। भारत-के सिवा ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत और सब देशोंको लड़ाईके लिये तैयार होनेको कहा गया।

इसका कारण 'टाइम्स' पत्रके सवाददाताके मुँहसेही

लीजिये। वह कहता है,—"मुस्तफा कमाल जब विजयी हुए हैं, तब बहुत सम्भव है, कि वे मित्र राष्ट्रोंको दर्रेदानियालके उस पार चले जानेको कहेंगे और कुस्तुनतुनियाकी रक्षाके लिये जब वे मार्मोरा समुद्रमें अपनी नौ सेना रखेंगे, तो प्रणालीके अन्दर मित्र राष्ट्रोंके बेड़े न रहने देंगे।"

१६ वीं सितम्बरको अँगरेज सरकारकी फिर एक विज्ञप्ति निकली। इसके बादसेही रङ्ग-ढङ्ग बदलने लगा। फ्रान्स सरकारने बिना सलाह परामर्श कियेही इस विज्ञप्तिसे अपनी उदासीनता प्रकट की। यह देख, मामला गड़बड़ाया समझकर फ्रान्सको अपने पक्ष समर्थनके लिये मिलानेके उद्देश्यसे लार्ड कर्जन पैरिस भेजे गये। वहाँ फिर एक परामर्श-परिषद् की जानेकी बात तय पायी।

अँगरेज़ नर्म पड़े

टर्कीके विषयमें कितनीही बार, कितनीही तरहकी अफवाहें उड़ायी गयी हैं, यह सभी जानते हैं। यूरोपकी पेटीके भीतर एक एशियाई जातिको—तुर्कों को—रहने देना यूरोपीय राष्ट्रोंको पसन्द नहीं है यह भी किसीसे छिपा नहीं है। शायद इसी उद्देश्यसे तुर्कों के ऊपर स्मर्नाके कत्ले-आम और उस महान् अग्निकाण्डका इल्ज़ाम लगाया गया हो, तो कोई आश्चर्य नहीं।

मित्र राष्ट्रोंकी पैरिसकी परिषद् भी व्यर्थ थी। मुस्तफा कमाल शान्तिके मार्गसेही अपना अपहृत राज्य वापस पाना

चाहते थे। उन्होंने वाध्य होकरही तलवार उठायी थी। अङ्गरेज सरकारने कहा था, कि एशिया माइनर, थ्रे स और कुस्तुनतु-निया तुर्कोंको लौटा दिये जायेंगे; पर उन्होंने ऐसा नहीं किया।

ब्रिटिश सरकारके प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्ज और लार्ड कर्जनने अपनी उन वार्तोंको कायम ने रखकर यह समझा होगा, कि हमने अपने देशकी—अपनी जातिकी भलाईही की है, पर वास्तवमें भलाईके बदले उन्होंने अपनी जातिके ऊपर कलङ्क ही लगाया है। बहुत लोगोंका तो यह खयाल है, कि मि० लायड जार्जके इशारेसेही यूनानियोंने इस प्रकार उपद्रव करनेकी हिम्मत की थी और यहांतक कहा था, कि हम कुस्तुनतुनियातक दखल कर लेंगे, जो विल्कुल असम्भव था।

जो हो, फ्रान्स और इटालीने ग्रीसका साथ देना और उसकी ओरसे तुर्कोंके साथ लडाई करना स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार फ्रान्सीसियों और इटालियनोंके पीछे पाँव खींच लेनेपर अँगरेजोंने शान्तिका मार्ग अवलम्बन करनाही अपने लिये मङ्गल-जनक समझा।

मुस्तफा कमाल जबर्दस्ती लडाई छेडना नहीं चाहते, यह भी मालूम होगया। उन्होंने सर्वाधिकृत देशोंपर हस्तक्षेप न करनेकी अपनी सम्मति प्रकट की। साथही उन्होंने यह भी कह दिया, कि हमारी फौजोंने सर्वाधिकृत भूमिपर कभी पैर नहीं रखा, ऐसा कहना भी नहीं कह सकते।

तुर्क सैनिकोंने चानकके पास सर्वाधिकृत प्रदेशमें ढुँ

तीन स्थानोंपर आक्रमण किया। इसके बाद तुर्कों ने ब्रिटिश सेनाध्यक्षोंको सूचित किया, कि मुस्तफा कमाल नहीं चाहते, कि खामख़ाह अँगरेज़ोंके साथ लड़ाई करें।

उस समय भी बारूदके अम्बारपर आगकी चिनगारियाँ दिखाई दे रही थीं—युद्ध या सन्धि करना तोपोंके गोलोंके चलने या बन्द हो जानेपर निर्भर करता था। तो भी इसी बीचमें मि० लायड जार्जने मन्त्रि-मण्डलकी ओरसे लार्ड कर्ज़नको पेरिसकी परिषद्में कृत कार्य होनेके लिये बधाइयाँ भेज दीं, मानों उन्होंने किसी किलेपर फतहयाबीही हासिल कर ली है।

उसी समय वचन दिये गये, कि अङ्गोरा सरकारको कुस्तुनतुनिया, आड्रियोनोप्ल और थ्रेस दे दिये जायेंगे।

२५ सितम्बरके तारोंसे जाना जाता है, कि तुर्क घुड़ सवार फौजें चानकके पास सर्वाधिकृत प्रदेशोंमें प्रवेश कर गये हैं और जेनरल हैरिङ्गटनने तुर्क सेनापतिसे अपनी फौजें हटा लेनेका अनुरोध किया है—"has requested their withdrawl"

जेनरल हेरिङ्गटन यदि चाहते, तो उस समय राष्ट्रवादी तुर्कों के साथ युद्ध करनेकी घोषणा कर सकते थे; परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि युद्ध न करनेकी ही चेष्टा की।

इसी समय यूनानियोंने जेनरल हरिङ्गटनके इस व्यवहारके विषयमें कहा,—"The Entante s capitulation to Kamal Pasha" अर्थात् मित्र-राष्ट्रोंने कमाल पाशाके आगे आत्म समर्पण कर दिया है।" परन्तु जेनरल हैरिङ्गटनने स्थिर भावसे

कहा,—"जब तक हम तुर्कों को फौजके पीछे-पीछे तोपोंका ले जाना न देखेंगे, तबतक हम उनपर आक्रमण नहीं कर सकते।" उन्होंने मुस्तफा कमालको सूचना दी, कि बिना हमारी आज्ञाके ब्रिटिश सैनिक तुर्क फौजपर आक्रमण नहीं कर सकते। साथ ही उन्होंने यह भी कहा, कि मुस्तफा कमालके साथ हम इन विषयोंपर बात-चीत करनेको तैयार हैं। मुस्तफा कमाल पाशाने उनकी बात मञ्जूर कर ली।

इस समय मुस्तफा कमालकी सरकारने अपने पुनरधिकृत स्थानोंमें शराबकी खरीद-फरोख्त बन्द करा दी थी। इसीपर "डेली टेलीग्राफ"के एक सम्वाददाताने ब्रिटिशोंको उभाड़नेके लिये लिख भेजा था,—"Kamal desires to force humiliation on Britain, disgracing us in the eyes of the world" अर्थात्—"कमालकी सरकार हम अङ्गरेजोंको दुनियाके सामने अपमानित करके हमें नीचा दिखाना चाहती है।"

मुदानिया कानफरेन्स

ऐसेही अवसरपर जब कि युद्धकी पूरी पूरी सम्भावना दिखाई देती थी, मुस्तफा कमालने फ्रान्सीसी दूतके कहने-सुननेसे मुदानियाकी सन्धि परिषद्में उपस्थित होना स्वीकार किया ३ री अक्तूबरको इस मुदानिया सन्धि परिषद्की बैठकका आरम्भ होना स्थिर हुआ। तुर्कों ने अब सर्वाधिकृत प्रदेशमें आगे बढ़ना बन्द कर दिया।

अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंके इस कानफरेन्समें सम्मिलित होनेके पहले मित्र राष्ट्रोंमें यह प्रश्न उठा, कि सका क्या होगा? वहाँ अब यूनानियोंके रहनेका कोई उपाय न देखकर मित्र राष्ट्रोंने यह निश्चय किया, कि सन्धि परिषद्का निर्णय प्रकाशित होने तक तुर्क सर्वाधिकृत प्रदेशपर आक्रमण न करें। यदि तुर्क यह बात स्वीकार कर लेंगे, तो यूनानियोंको थ्रेस छोडकर चला जाना पडेगा, इसके पहले वे ही थ्रेसपर अधिकार किये रहेंगे।

उस समय तुर्कों के विरुद्ध दो भिन्न भिन्न शक्तियों द्वारा काम लिया जा रहा था। एक तरफ 'डेलीमेल' आदि अँगरेजी पत्र कहते,—"तुर्कों की माँगें बहुत जियाद हैं। "दूसरी तरफ यूनानके भूतपूर्व मन्त्री वेनिजेलिस 'टाइम्स' पत्रमें अपनी चिट्ठियाँ प्रकाशित कर यह कह रहे थे, कि 'अगर तुर्क लोग अभी थ्रेसपर अधिकार कर पायेंगे, तो वे वहाँकी ईसाई आबादीको नष्ट कर डालेंगे।' यही नहीं, वे तो यहाँतक कहते थे, कि 'यूनान थ्रेस पर अपना अधिकार कायम करनेके लिये युद्धकी तैयारियाँ कर रहा है', जो बिल्कुल असम्भव था। इसी समय विलायतमें अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधिने वेनिजेल्सिकी बातोंको असत्यताको प्रमाणित कर दिया।

इधर मित्र शक्तियोंकी ओरसे यह तय पाया, कि तुर्कोंको थ्रेस दे दिया जाये और कुस्तुनतुनियाकी शासन सभामें राष्ट्रवादी तुर्कों को भी अधिकार दिया जाये। तुर्क लोग सर्वाधिकृत [illegible] छोड दें। परन्तु कमाल पाशाकी सरकारके प्रति-

निधियोंने कहा, कि सन्धि-परिषद्में रूसकी सोवीट सरकारके प्रतिनिधिका आना भी आवश्यक है।

अन्तमें बहुत वाद विवादके बाद अँगरेज फ्रान्स और इटालियन सबकी सम्मतिसे निश्चय हुआ —

(१) यूनानी लोग थ्रेस छोड़कर चले जायें और मित्र राष्ट्र उसपर अपना अधिकार कर ले।

(२) इसके बाद एक महीना बीत जानेपर उसपर टर्की सरकार अधिकार करेगी।

इसके बाद भी इसी प्रकारकी कितनीहो बाते होती रहीं। इसी समय जेनरल हैरिङ्गटनने अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधिसे लडाइ बन्द करनेके लिये धन्यवाद देते हुए कहा था —

"Your goal is with in your reach and it will be entirely within your hands in 45 days and your administration will be established satisfactorily

अर्थात्—"आपका अभोष्ट आपको प्राप्त हो गया और आजसे ४५ वें दिनसे आपका शासन सन्तोष-जनक रीतिसे स्थापित हो जायेगा।"

इसके बाद अन्तिम सन्धिका शर्तें ये रखी गयीं —

(१) यूनानी एक पक्षके भीतर थ्रेस छोड़कर चले जायें।

(२) टर्कोंकी जो फौज वहाँ रहेगी, उसकी संख्या ८ हजार से अधिक नहीं हो।

(३) मरितुजा नदीके पश्चिम किनारे मित्र राष्ट्रोंकी सैनिक छावनी (Covering force) रहेगी।

(४) सर्वाधिकृत स्थानोंकी सीमा पहलेकी तरह नहीं रहेगी, नयी बाँधी जायेगी।

११ वीं अक्तूबर १६२२ के दिन मुदानियामें शामके ६॥ बजे अस्थायी सन्धिकी उपर्युक्त शर्तोंपर हस्ताक्षर हो गये। रण-चण्डीका विसर्जन हुआ। तुर्क वीरोंके शरीरमें जिस वीर भावका संचार हुआ था, वह आगे न बढ़कर वहीं स्थिर रह गया। बिना युद्धकेही विजयश्री उनके पाँवपर लोट गयी।

मुदानियाकी सन्धि परिषद्के निश्चयके अनुसार यूनानियोंने थ्रेस प्रान्त छोडना शुरू कर दिया। १५ तारीखकी आधी रातको यूनानी सेनाने थ्रेसको अन्तिम प्रणाम किया, जिसपर दो वर्षोंसे वह अधिकार जमाकर बैठी थी।

इसी समय तुर्क पुलिसके दल प्रवेश करने लगे। ज्यों ज्यों यूनानी सेना प्रदेश खाली करके जाने लगी, त्यों त्यों तुर्की सेना अपना अधिकार प्रसारित और स्थापित करती हुई आगे बढ़ने लगी। इस प्रकार स्थायी सन्धि परिषद्का मार्ग थ्रेस खाली करके साफ कर दिया।

इस प्रकार यूनानियोंके चले जानेपर और तुर्कोंके अपने अपहृत देश पुन प्राप्त करनेपर ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलको मुँहकी खानी पडी। मि० लायड जार्जने प्रधान मन्त्रीके पदसे इस्तीफा दे दिया और अब हम देखते हैं, कि आज समस्त एशिया माइनर,

स्मर्ना, थ्रेस और कुस्तुनतुनिया तकपर मुस्तफा कमाल पाशाका विजयी झण्डा फहरा रहा है।

लासेन कानफ़रेन्स

अब यह प्रश्न उठा, कि सन्धिकी शर्तोंका स्थायी रूपसे निश्चय करनेके लिये परिषद्‌की बैठक कहाँ हो? इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और रूस अपने अपने देशोंमें परिषद्‌की बैठक करनेके लिये जोर देने लगे। अन्तमें यह निश्चय हुआ, कि अब जिन बातोंपर परिषद्‌को विचार करना है, वह कोई विशेष विवाद ग्रस्त प्रश्न नहीं है, इसलिये किसी निरपेक्ष देशमें इस बारकी बैठक हो। इस प्रकार स्विजरलैण्डके लासेन नगरमें परिषद्‌की बैठक निश्चित हुई।

इसी बीचमें ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलका निर्वाचन कार्य आरम्भ हुआ। मि० लायडजार्जने प्रधानमन्त्रीके पदसे इस्तीफा देदिया। इसी कारण परिषद्‌की बैठकें ६ नवम्बरसे न होसकीं। उधर इटलीमें भी विद्रोह हुआ। वहाँ नया पक्ष अधिकार पानेके लिये व्याकुल होने लगा। यूनानमें राज विप्लव हुआ। इन्हीं कारणोंसे सन्धि परिषद्‌की बैठकमें देर होने लगी, अन्तमें फ्रान्सने बैठक आरम्भ होनेकी तारीख २५ नवम्बर निश्चित की।

एक और प्रश्न अभी बाकी रह गया। वह यह, कि इस परिषद्में किन किन राष्ट्रोंके प्रतिनिधि आमन्त्रित किये जायें। यह प्रश्न भी विवाद-ग्रस्त था। कमाल पाशा पहलेसेही इस विषयपर जोर देते आते थे, कि रूसकी सोवीट सरकारके प्रतिनिधि

अवश्य बुलाये जायं, पर सोवोट सरकारको मित्र राष्ट्र निमन्त्रित करना नहीं चाहते थे। उन्होंने उसे स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया था, कि तुम्हें केवल जल प्रणालियोंके निपटारेके विषयमें किसी परिषद्‌में सम्मिलित होनेकी अनुमति मिल सकती है।

इस समय टर्कीके विजित प्रदेशोंपर अङ्गोरा सरकार पुनरधिकार प्राप्त करती और शासन स्थापित करती हुई आगे बढ़ती जारही थी। उसके शासनसे लोग सन्तुष्ट होरहे थे। तथापि भेद नीतिका बीज डालनेके अभिप्रायसे ब्रिटिशोंने इस परिषद्‌में मृतप्राय टर्कीकी सरकारको भी स्वतन्त्र रूपसे सम्मिलित होनेका निमन्त्रण दे दिया।

इसपर अङ्गोरा सरकारने कहा, कि यदि सन्धि परिषद्‌में टर्कीकी पुरानी सरकारके प्रतिनिधि जायेंगे, तो हम समझेंगे, कि हमारा अपमान किया जारहा है और ऐसो अवस्थामें हम परिषद्‌में अपनी ओरसे प्रतिनिधि नहीं भेजेंगे। अन्तमें कुस्तुनतुनियाके वजीरके हार माननेपर इस प्रश्नका भो अन्त हो गया।

इसके बाद ब्रिटिशोंने एकबार और टाँग अडायी। उन्होंने कहा, कि तुर्कों को इस लडाइ भिडाईमें हमारा ७॥ करोडका खर्च तुर्कोंको देना चाहिये। कमाल पाशाकी चतुर सरकारने ब्रिटिशोंकी इस चालको भी कारगर न होने दिया। उसने अपना तमाम खर्च युद्ध दण्ड-स्वरूप यूनानियोंपर लाद दिया। साथही उसने कुस्तुनतुनियाका सरकार द्वारा लिया गया पुराना कर्ज भो देनेसे अस्वीकार कर दिया।

इस प्रकार बार बार गोलमाल और नयी नयी अडचनोंको उठते देखकर अङ्गोरा सरकारने मुदानिया कानफरेन्सके बादसे जो समय मिला, उसमें अपनी सेनाकी संख्या बढाना शुरू कर दिया। यह बात सुनतेही मित्र-राष्ट्रोंके सवादपत्रोंने फिर "काँव काँव" मचाया।

इन बातोंसे कोई नया नतीजा नहीं निकला। वही पुरानी बात फिर याद करनी पडी, कि ब्रिटिश अधिकारियोंकी बातें हाथीके दाँतोंकीसी हुआ करती हैं। वे कहते कुछ हैं और करते कुछ और ही हैं।

अस्तु, लासेनीकी इस परिषद्‌की बैठकें अभी हो रही हैं। अबतकके समाचारोंसे ऐसा जान पडता है, कि लासेनो कानफरेन्समें अङ्गोरा सरकारकी ओरसे भेजे गये प्रतिनिधिने स्थायी सन्धिके लिये नयी शर्तें पेश की हैं। यदि मित्र राष्ट्र इन शर्तों को स्वीकार कर लेंगे, तो समझना चाहिये, कि शान्ति हो जायेगी और यदि वे स्वीकार नहीं करेंगे, तो फिर एकबार महा समराग्नि प्रज्वलित होकर पृथ्वीको ध्वस करेगी—सभ्यताके इस प्रगति शील युगमें रुकावटें डाल देगी।

परन्तु इस कानफरेन्सका परिणाम अभी भविष्यके गर्भमें है। अभी इस विषयमें कुछ भी निश्चित रूपसे कहा नहा जा सकता।

कमाल और बोलशेविक

मित्रताका प्रारम्भ

सन् १६२० के आरम्भसेही रूटरके तारों तथा बाहरी समाचार पत्रोंसे मालूम होने लगा, कि रूसकी सोवीट सरकार और राष्ट्रवादी तुर्कों में मेल मिलाप होने लगा है।

४ फरवरी १६२० को विलायतके 'टाइम्स' पत्रका एक संवाद दाता लिखता है —

"सिवासमें राष्ट्रवादी तुर्कों की एक विराट् सभा हुई। इसमें बाहरी मुल्कोंके भी कई प्रतिनिधि आये थे। सभापतिका आसन राष्ट्रवादी तुर्कों के प्रधान मुस्तफा कमालपाशाने ग्रहण किया था।

"इस सभामें रूसकी सोवीट सरकारकी ओरसे भी एक प्रति निधि आया था। सभाकी बैठकमें राष्ट्रवादी तुर्कों और सोवीट सरकारके बीच मित्रता स्थापित करनेका प्रस्ताव उपस्थित किया गया। बोलशेविक पहलेसेही राष्ट्रवादी तुर्कों के साथ सहानुभूति रखते थे, यह बात रूसी प्रतिनिधिके भाषणसेही मालूम हो गयी। उसने कहा,—"मैं रूसकी सोवीट सरकारकी ओरसे प्रति निधि होकर आपकी सभामें उपस्थित हुआ हूँ। सोवीट सरकार राष्ट्रवादी तुर्कों के साथ हार्दिक सहानुभूति रखती है। हमारी

सरकार समझती है, कि टर्कीमें आपलोग जसी सरकार स्थापित और सगठित करना चाहते हैं, उससे तमाम मुसल्मान सल्तनतें एकताकी एक मजबूत डोरीसे बँध जायेंगी और रूसने, यूरोपकी पूँजी सत्तावादी सरकारोंके विरुद्ध जो आन्दोलन आरम्भ किया है, उसमें उसे सहायता मिलेगी।

"इसके बाद उस रूसी प्रतिनिधिने मुस्तफा कमाल पाशाके सम्मुख यह प्रस्ताव उपस्थित किया, कि यदि राष्ट्रवादी तुर्क मित्रराष्ट्रोंकी फौजोंसे लडनेको तैयार हों, तो सोवीट सरकार उनकी मदद करनेको तैयार हो सकती है।"

मुस्तफा कमालने तुर्कोंकी ओरसे सोवीट सरकारको धन्यवाद दिया और कहा,—"सोवीट सरकारने केवल रूसकी जारशाहीकोही नष्ट भ्रष्ट नहीं किया है और न केवल रूसमेंही प्रजासत्ताका आदर्श कायम किया है, बल्कि उसने तमाम संसारके साम्राज्यवादी राष्ट्रोंके लिये एक आतङ्कका कारण उपस्थित कर दिया है।" इसके बाद मुस्तफा कमालने अपने प्रतिनिधि मास्कोमें भेजकर सोवीट सरकारसे स्थायी रूपसे मेल कर लिया है।

कई महीनेके बाद ६ नवम्बर १९२० के एक तारसे मालूम हुआ, कि बोलशेविक आर्मेनियाकी ओर बढ रहे हैं और सम्भव है, वे राष्ट्रवादी तुर्कों की ओरसे आर्मेनियोंपर आक्रमण भी करें।

राष्ट्रवादी तुर्कों द्वारा स्थापित अङ्गोरा सरकारके सभापतिकी हैसियतसे मुस्तफा कमाल पाशाने सोवीट सरकारके

कामोंको प्रकट कर दूँ, जो मित्रराष्ट्रोंने युद्ध समाप्त होनेके बाद किये हैं और जो हम मुसलमानोंकी दृष्टिमें हमारे धार्मिक और राष्ट्रीय अपमानके द्योतक हैं। कुस्तुनतुनिया हमारा धार्मिक पीठस्थान है। उसे हम गैर मुसल्मानोंके द्वारा अधिरत होते नहीं देख सकते हैं।

"मित्र-राष्ट्रोंकी पुलिस और सेनाने राष्ट्रीय तुर्क नेताओंको खींच खींचकर कुस्तुनतुनियासे निकाला। तुर्क फौजी अफसरों, न्यायालयके विचारकों, सवाद पत्र सम्पादकों, लेखकों और व्याख्यान दाताओंको गिरफ्तार कर लिया और उनके हाथोंमें हथकडियाँ और पैरोंमें बेडियाँ डालकर उन्हें अपने घर और नगरसे बाहर निकाल दिया।

"हमारी सरकारी और सार्वजनिक इमारतोंपर सङ्गीनके जोरसे अधिकार कर लिया गया।

"तुर्कों ने अपने स्वत्वोंको इस प्रकार अपहृत और अपनी कौमकी इतनी लाञ्छना होते देख इसका प्रतिकार करनेके लिये एक कार्यकारिणी सभाका सगठन किया है। यह सस्था राष्ट्र वादी तुर्कों की पार्लमेंएटको कार्यकारिणी सरकार है।

"राष्ट्रवादी तुर्कों ने मुझे इसी कार्यकारिणी सरकारका सभा पति निर्वाचित कर मुझे सम्मानित किया है।

"उपर्युक्त बातोंको तथा राष्ट्रवादी तुर्कों ने २६ जून १९२० को अपने जो विचार प्रकट किये हैं, उन्हें मैं आपके सामने प्रका करना चाहता हूँ। वे इस प्रकार हैं—

"(१) राष्ट्रवादी तुर्क रूम साम्राज्यकी राजधानी कुस्तुनतुनियाको गैर-मुसलमान राष्ट्रोंके पजेमें जकडा हुआ समझते हैं, इसलिये वहाँसे जितने आज्ञा पत्र आते हैं, उन्हें वे धर्मत और न्यायत पालन करने योग्य नहीं समझते और न टर्की सरकारके सन्धि शर्तों को स्वीकार करनेकाही राष्ट्रवादी तुर्कों की दृष्टि में कुछ मूल्य है।

"(२) तुर्क राष्ट्रवादियोंने यह निश्चय कर लिया है, कि वे चाहे जैसे हो— अपने स्वत्वोंकी रक्षा करेंगे और वे केवल ऐसी ही सन्धिको स्वीकार करनेको तैयार हैं, जिसमें सम्मान और समानताका पूरा पूरा खयाल रखा जायेगा।

"(३) तुर्की कौम अपनी इस संस्थाके प्रतिनिधिके सिवा और किसी गैरको मित्र राष्ट्रोंके साथ सुलह करनेका कोई भी अधिकार देना नहीं चाहती।

"(४) ईसाई, यहूदी या कोई दूसरे देशवासी अथवा दूसरी जातिके लोग जो रूम साम्राज्यके अन्तर्गत रहते हैं उन्हें तुर्क राष्ट्रकी सत्ता स्वीकार करनी होगी और वे ऐसा कोई भी काम नहीं कर सकेंगे, जिससे राष्ट्रका अहित हो। आशा है, तुर्क कौमकी इन माँगोंको आप न्याय सङ्गत और उचित समझेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि मैं आपका अनुगृहीत सेवक हूँ।

[तुर्क राष्ट्र सङ्घकी स्वीकृति तथा उसके सभापतिकी आज्ञा से प्रेषित]

(हस्ताक्षर) "—मुस्तफा कमालपाशा।"

कामोंको प्रकट कर दूँ, जो मि
किये हैं और जो हम मुसल्म
राष्ट्रीय अपमानके द्योतक हैं।
पीठस्थान है। उसे हम गै
नहीं देख सकते हैं।

"मित्र-राष्ट्रोंकी पुलिस और सेन
खींच खींचकर कुस्तुनतुनियासे
न्यायालयके विचारकों, सवाद
व्याख्यान दाताओंको गिरफ्तार कर
हथकडियाँ और पैरोंमें बेडियाँ डालकर
नगरसे बाहर निकाल दिया।

"हमारी सरकारी और सार्वजनिक
जोरसे अधिकार कर लिया गया।

"तुर्कों ने अपने स्वत्वोंको इस प्रकार
कौमकी इतनी लाञ्छना होते देख, इसका प्रतिकार
एक कार्यकारिणी सभाका सगठन किया है। यह र
वादी तुर्कों की पार्लमेण्टको कार्यकारिणी सरकार है।

"राष्ट्रवादी तुर्कों ने मुझे इसी कार्यकारिणी सरकारका
पति निर्वाचित कर मुझे सम्मानित किया है।

"उपर्युक्त बातोंको तथा राष्ट्रवादी तुर्कों ने २६ जून
को अपने जो विचार प्रकट किये हैं, उन्हें मैं आपके सामने
करना चाहता हूँ। वे इस प्रकार

अङ्गोरेका भाषण

कुस्तुनतुनिया सरकारके सन्धिकी शर्तो पर अपनी स्वीकृतिका हस्ताक्षर कर देनेके बाद, राष्ट्रवादी तुर्कोंकी एक महती सभामें, जो अङ्गोरेमें हुई थी, मुस्तफा कमाल पाशाने जो व्याख्यान दिया था, वह इस प्रकार है —

"मेरे प्यारे भाइयो।

हमारी जातिके सिवा संसारमें कोई भी ऐसी दूसरी जाति नहीं है, जिसे इस बातका गौरव हो, कि उसने दूसरे धर्मके अनुयायियोंके स्वत्वोंकी रक्षा की है। हमारे पूर्वजोंने अन्य देशोंपर बहुत-बार विजय पायी है, परन्तु अधिकृत देशोंके निवासियोंके धार्मिक स्वत्वोंकी उन्होंने सदा रक्षाही की है। सुल्तान मुहम्मद फातेह जब कुस्तुनतुनियामें आये, तब उन्होंने यहाँके निवासियोंके धर्मपर, उनके धार्मिक भावोंपर आघात नहीं पहुँचाया, बल्कि पराजित देशवासियोंके धर्म गुरुओंको सपूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी थी और इस प्रकार इस बातको प्रमाणित कर दिया था, कि हम तुर्क जिस प्रकार अपने धर्मका खयाल रखते हैं, उसी प्रकार अन्य धर्मावलम्बियोंके धर्मका भी सम्मान करते हैं। हम उन्हीं तुर्कोंकी सन्तान हैं, जो सदा अपनी तरह दूसरोंको समझते थे।

"सन्धि परिषद्ने शायद हमारे दुश्मनोंकी बातोंपर विश्वास कर लिया है, जिनमें हमपर निरर्थक दोष लगाये गये हैं—कितनीही झूठी बातें उड़ायी गयी हैं; लेकिन, प्यारे भाइयो! याद

रखिये, कि सच—सचही है और वह कभी छिपकर नहीं रह सकता। सच्ची बातको कोई दबाकर नहीं रख सकता!

"फरीद पाशाने अपने सरकारी बयानमें आर्मेनियाके विषयमें बातें करते हुए पैरिसमें कहा है, कि पश्चिममें कोहिस्तान-तारसमें हमारी सरहद्द मानी जा सकती है, लेकिन उन्हें शायद यह बात याद नहीं रही, कि तारसकी पश्चिमी सीमातक—तारससे अनाताकियातककी अर्बी बोलनेवाली आबादीमें एक हजार वर्षोंसे तुर्की का खून दौड रहा है।

"हमारे ऊपर यह तोहमत लगायी गयी है, कि तुर्कों का भूतकाल ऐसा अन्धकारपूर्ण है, कि इनके वर्त्तमान और भविष्यका कुछ भी पता नहीं लगाया जा सकता। ऐसीही तोहमतें लगा कर हमारे स्वत्वोंका अपहरण किया जारहा है।

"परन्तु, भाइयो! उन लोगोंको याद रखना चाहिये, कि वीर तुर्क जाति स्मर्नापर किये गये अत्याचारोंको देखकर भी चुप होकर बैठी नहीं रह सकती। हमें अब चाहिये, कि हम अपनी कमर कसकर खडे हो जायें, तलवारके जोरसे अपने स्वत्वोंकी रक्षाके लिये निकल पडे। शान्ति और मेल माफकतसे अब काम निकलनेकी कोई आशा नहीं दिखाई देती।

एक और भाषण

इसके कुछ दिनों बाद राष्ट्रवादी तुर्कों की एक और सभा हुई, उसमें भाषण करते हुए मुस्तफा कमाल पाशाने कहा—

"प्यारे भाइयो ! अर्जेरूम और सिवासमें हमारे जो कौमी जलसे हुए थे, उनका मकसद यही था, कि दारुल खिलाफतकी आजादी कायम रखनेकी किसी भी कोशिशसे हम बाज नहीं आयेंगे।

"जो जाति अपने प्राणोंपर खेलकर अपने देशके गौरव और अपने राष्ट्र सिद्ध अधिकारोंकी रक्षा नहीं करता, वह वास्तवमें एक निहायत जलील कौम कहलाने योग्य है।

"जब किसी देशके आदमी पृथक् पृथक् रहकर अपने स्वत्वों की रक्षा और प्रबन्ध करने योग्य नहीं रहते हैं, तब वहाँ जमायत कायम होती है और वह जमायत जिधर चाहती है, उधर भिन्न भिन्न आदमियोंको लगाकर काम कराती है। उस समय सब लोगोंका भविष्य उस जमायतके हाथोंमें आ जाता है। इस प्रकार वह जमायत अपना अभीष्ट पृथक् पृथक् व्यक्तियोंकी शक्तियोंको सग्रह करके सब लोगोंका कल्याण साधन करती है। हमें भी चाहिये, कि अपनी इस जमायतको, अपनी अपनी भिन्न भिन्न शक्तियाँ प्रदान कर इसे पूर्णत शक्ति सम्पन्न बनायें और इसीके द्वारा अपना उद्धार-साधन करें।

"सज्जनो ! हमारी इस जमायतकी भूत और वर्त्तमान अव स्थाओंमें बहुत बडा अन्तर हो गया है, शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित हो गयी है। यह बात हमारी एकताके कारणही हुई है। हमारे ऐक्य और सङ्गठित शक्तिकाही यह परिणाम है, कि आज विजेत्री मित्र शक्तियाँ भी अब हमारे बलको स्वीकार करने लगी हैं और हमें तहस-नहस करनेकी पहले जो लम्बी-चौडी

बातें हाँका करती थीं, उन्हें छोड चुकी हैं। उन्हें अब अपनी बडी बडी आशाओंपर पानी फिर जानेका भय होने लगा है।

"मित्रो! यह परिणाम है— हमारे स्वदेश प्रेमका! उसीकी प्रेरणासे हम अपमानित होकर जीना नहीं चाहते। इस समय हमारा कर्त्तव्य है, कि हम अपने मार्गपर बेधडक, बेखौफ होकर चलते जायें और हमारे रास्तेमें जो रोडे मिलें उन्हें पीसकर धूल करदें।

"अङ्गोरा सरकारकी पार्लमेण्टको भी चाहिये, कि वह अपने काम खूब सावधानतापूर्वक करती रहे; क्योंकि योग्य शासकों और सैनिक अधिकारियोंपर ही हमारी सफलता निर्भर करती है और वेही कौमकी भलाई या बुराईके लिये जिम्मेवार हैं।

"मेरी बातोंका साराश यह है, कि हम शान्ति और धैर्यसे च्युत न हों, अपनी स्वतन्त्रताको हाथसे जाने न दें और तुर्क कौमको गुलाम न बनने दें।

"मुझे ईश्वरकी सहायताका पूरा भरोसा है। मेरा दृढ विश्वास है, कि हम तुर्क अवश्यही अपनी अभीष्ट सिद्धिमें सफलता प्राप्त करेंगे। परन्तु क्या अपने देशको स्वतन्त्र बना लेने और शान्ति तथा सुशासन करलेनेसेही हमारा काम खत्म हो जायेगा? नहीं; भविष्यमें हमें बहुत बडे बडे उत्तरदायित्वपूर्ण काम करने हैं। हाँ, यह जरूर है, कि अभी हमें अपनी अन्तरङ्ग परिस्थितिको ही पहले सम्हालना है, ताकि दुनियापर रौशन हो जाये, कि हम एक जिन्द कौम हैं।

"सज्जनो! मेरा सम्पूर्ण विश्वास है, कि जब हम अप मनके मुताबिक सन्धि कर लेंगे और हमारी अन्तरङ्ग परिस्थिति भी सुधर जायेगी, तब हम पहलेसे भी बहुत अच्छी अवस्थामें पहुंच जायेंगे; क्योंकि वे समस्त मुस्लिम कौमें, जो किसी समय हमारे साम्राज्यके अन्तर्गत थीं और जिनसे हमारी उस्मानी कौमियत बनी था, फिर एक हो जायेंगा। हमारे शाम, ईराक आदि तमाम बिखरे हुए अङ्ग फिर मिल जायेंगे।

"सज्जनो! मेरा सम्पूर्ण विश्वास है, कि जब हम अपने मनके मुताबिक सन्धि कर लेंगे और हमारी अन्तरङ्ग परिस्थिति भी सुधर जायेगी, तब हम पहलेसे भी बहुत अच्छी अवस्थामें पहुँच जायेंगे, क्योंकि वे समस्त मुस्लिम कौमें, जो किसी समय हमारे साम्राज्यके अन्तर्गत थीं और जिनसे हमारी उस्मानो कौमियत बनती थी, फिर एक हो जायेंगी। हमारे शाम, ईराक आदि तमाम बिखरे हुए अङ्ग फिर मिल जायेंगे।

"भाइयो! क्या आप मुसल्मान धर्मावलम्बियोंके उस उज्ज्वल प्रशान्त भविष्यका अनुमान कर सकते हैं, कि जब संसारकी तमाम मुसल्मान सल्तनतें एक हो जायेंगी? मैं जब कभी अपने कल्पना नेत्रोंके आगे उस आकाशके समान विस्तृत मुसल्मान साम्राज्यका चित्र अङ्कित करता हूँ, तब मेरा मन एक अपूर्व आनन्द-स्रोतमें बहने लगता है और मुझे वह खुशी होती है, जिसको मैं शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकता।

"अब मैं देख रहा हूँ, कि मुसल्मान-जगत्की परिस्थिति सुदृढ़ हो चली है। अन्तमें मैं आप सज्जनोंकी मङ्गलकामना करता हुआ अपना व्याख्यान समाप्त करता हूँ।"

मुस्तफा कमालका एक पत्र

लण्डनसे निकलनेवाले "डली एक्सप्रेस" नामक दैनिकपत्रमें प्रकाशनार्थ मुस्तफा कमाल पाशाने इस आशयका एक पत्र तुर्क राष्ट्रीय सङ्घकी नींव दृढ़ होचुकनेके कुछ दिनों बाद भेजा था —

"मैं किसी प्रकारकी सन्धि करने या न करनेके लिये जिमेवर नहीं हूँ। प्रत्येक विषयका निश्चय अङ्गोरेकी राष्ट्रीय सभा करती है। यह राष्ट्रीय संस्था उन अन्यायोंपर विचार करनेके लिये स्थापित हुई है, जो यूरोपीय साम्राज्यवादी राष्ट्रोंने तुर्क कौमके साथ उसका अस्तित्वतक लोप कर देनेके लिये किये हैं।

इस सभाके सङ्गठन और उद्देश्यके विषयमें समय समयपर सूचनाएँ और विज्ञप्तियाँ प्रकाशित करा दी गयी हैं। सभाका स्पष्ट उद्देश्य यह है, कि यह कौमी सरहदके अन्दर कौमी आजादी की पूरी तरह हिफाजत करे और खलीफेकी सल्तनत मुसल्मानों-के हाथमेंही रहे। बस, इससे अधिक इसका और कोई उद्देश्य नहीं है।

"तुर्क जाति केवल इतनाही चाहती है, कि उसके स्वत्वोंकी रक्षामें कोई गैर कौम हस्तक्षेप न करे।

"इस सभाका विश्वास है, कि वह यूरोपीय साम्राज्यवादी सरकारोंके पञ्जेसे तुर्कों को छुडा लेगी और उसे स्वतन्त्र बनाये रखेगी और राष्ट्रीय सरकारकी फिरसे स्थापना करेगी।

"इसी सभाके नियमों और आदेशोंके अनुसार एक सुसंगठित सेना तैयार की गयी है, जो कौमको हर तरहके अत्याचार-उत्पीडनोंसे रक्षा करेगी और जो तुर्कों के मार्गमें रोडे अटकाये गे, उन्हें दण्ड देगी।

"यह सभा एक नयी सरकारकी स्थापना करके अपनी कौमकी हिफाजत करनेका बन्दोबस्त करेगी।"

उज्ज्वल भविष्य

मुस्तफा कमालने मित्र राष्ट्रोंके अन्यायोंको प्रमाणित करनेके लिये राष्ट्रवादी तुर्कोंकी एक सभामें भाषण करते हुए कहा —

"भाइयो ! प्रेसिडेण्ट विलसनकी १४ शर्तोंमें १२ वीं शर्त टर्कों की सेना कम करनेके विषयमें थी। हम इस बातको कुछ अंशों में स्वीकार भी करते थे; परन्तु मित्र राष्ट्रोंने "राष्ट्र संघ," (League of Nations)के निर्माता और कर्ता धर्ता होते हुए भी अपनी प्रतिज्ञाओं और शर्तों को इस प्रकार भुला दिया, मानों उन्होंने कभी कोई प्रतिज्ञा या शर्तही नहीं की हो। उन्होंने हमारे प्रदेशोंपर जबर्दस्ती अधिकार करके आगे बढना शुरू कर दिया।

"यूनानने, जो एक दिनके लिये भी युद्ध क्षेत्रमें उतरा नहीं था, बिना कुछ कहे-सुने स्मर्नापर अधिकार कर लिया। इस प्रकार कितनोही बातें क्षणिक सन्धिकी शर्तों के विरुद्ध की गयीं।

"मित्र राष्ट्रोंने तो उन शर्तों को सबसे पहलेही भुला दिया। उन्होंने झट हमारे साम्राज्यको आपसमें बाँटना शुरू कर दिया। यही नहीं, उन्होंने दो और नयी बातें भी गढ लीं। पहली यह, कि तुर्क कौम ईसाइयोंपर शासन करनेकी योग्यता नहीं रखती और दूसरी यह कि हमारी कौममें सभ्यता नहीं है।

"ये दोनोंही बातें बिल्कुल गलत और मकडीके जालेसे भी कमजोर है। इतिहासके पुराने पन्ने आज भी इस बातकी गवाही देनेके लिये मौजूद हैं, कि हममें वैसी योग्यता है।"

"इतिहास कहता है,—एक दिन हम एक छोटेसे राज्यके अधिकारी थे ; परन्तु ससारने देख लिया, कि हमने कितनी बडी सल्तनत कायम कर दी और यूरोपके भीतर घुसकर किस तरह उसकी छातीपर अपने विजयी झण्डे गाड दिये। दुनियाने यह भी देखा, कि हमारा शासन ६०० वर्षोंतक किस इज्जत और शराफ़तके साथ कायम रहा है। जो जाति ऐसा सुदृढ शासन कर सकती है, उसमें शासन करनेकी योग्यता भला कैसे विद्यमान् न होगी, क्योंकि सिर्फ तलवारके जोरसेही सल्तनत कायम नहीं रह सकती है।"

"दुश्मन हमें जालिम बताते हैं, पर हम अपनी-जातिके इतिहाससेही प्रमाण देना चाहते हैं, और दावेके साथ पूछ सकते हैं, कि हमारे सिवा आजतक किस जातिने अपने पराजित शत्रुओंके साथ हमसे अच्छा व्यवहार किया है ? साथही हम यह बात कह देना उचित समझते हैं, यदि किसी निरपेक्ष राष्ट्रको हमारी तरफसे तकलीफ पहुँची है, तो उसका कारण यह है, कि उसने हमारी रिआयतोंसे अनुचित लाभ उठाना शुरू कर दिया था।

"महासमरने हमारे बहुतसे अंश हमसे पृथक् कर दिये हैं। अतएव आवश्यकता है, कि हम अपनी एक निश्चिन्त सीमा स्थिर कर लें, ताकि हमारे बाकी सूबे हमसे निकलने न पायें। उसमानिया सल्तनतके अन्दर रहनेवाले हम ईसाई, यहूदी और मुसल्मान भाइयोंको मिलकर रहना चाहिये। हमारे ईसाई भाइयोंको ऐसी हरकतें न करनी चाहिये, जिनसे उसमानिया

सल्तनतकी स्वतन्त्रतामें वट्टा आये और न हमारे आपसकी बरा बरीमेंही फर्क आये।

"हमें तुर्क लोग अपने पादशाह या खलीफाको किसी गैर-मुसल्मानके अधीन देखना नहीं चाहते। साराश यह, कि हम अपनी कौमको गुलामीकी जिल्लतसे बचानेके लिये अपना सब कुछ कुर्बान करनेको तैयार हैं। तुर्क कौम जबतक अपना अभीष्ट सिद्ध न कर लेगी, तबतक वह चैन न लेगी।

"भाइयो! यह समय हमारी परीक्षाका है। हमें इस परीक्षा-के समय अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करके और अपने देशमें शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करके यह दिखा देना चाहिये, कि हम वास्तवमें शासक होनेके योग्य हैं या नहीं।"

विजयोत्सवपर खुदातालाकी इबादत करनेमें सुल्तान भी सम्मिलित हुए हैं

Burman Press Calcutta

सल्तनतकी स्वतन्त्रतामें धब्बा आये और न हमारे आपसकी बराबरीमेंही फर्क आये।

"हमें तुर्क लोग अपने पादशाह या खलीफाको किसी गैर-मुसल्मानके अधीन देखना नहीं चाहते। सारांश यह, कि हम अपनी कौमको गुलामीकी जिल्लतसे बचानेके लिये अपना सब कुछ कुर्बान करनेको तैयार हैं। तुर्क कौम जबतक अपना अभीष्ट सिद्ध न कर लेगी, तबतक वह चैन न लेगी।

"भाइयो! यह समय हमारी परीक्षाका है। हमें इस परीक्षाके समय अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करके और अपने देशमें शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करके यह दिखा देना चाहिये, कि हम वास्तवमें शासक होनेके योग्य हैं या नहीं।"

विजयोत्सवपर सहायताकी इमदाद करनेमें सुल्तान भी सम्मिलित हुए हैं।

कमालका सम्मान

तुर्कोंको जिस दिन अपने अपहृत स्मर्ना, थ्रेस आदि प्रान्त वापस मिले,उस दिन तमाम टर्कीमें महान् आनन्दोत्सव मनाया गया। जिन सुल्तान वहीद उद्दीनको विजयके बादसे शासनके कार्य भारसे मुक्त कर दिया गया था, वे भी इस राष्ट्रीय आनन्दोत्सवमें सम्मिलित हुए थे और उन्होंनेभी मसजिदमें जाकर ईश्वरको अपनी कौमकी सफलतापर धन्यवाद दिया था।

कुस्तुनतुनियाके लोगोंने जिस प्रकार गाज़ी मुस्तफा कमाल पाशाके प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धा प्रकट की है, वह वास्तवमें एक असाधारण बात है और कमालके लिये ऐसीही श्रद्धा शोभा भी पा सकती है। इस प्रकारकी श्रद्धा केवल वेही पाते हैं, जो अपनी जातिकी,अपनी मातृ भूमिकी दुर्दशाके समय उसके उद्धारके लिये कमर कसकर खड़े हो जाते हैं और उसके कल्याणके लिये अपना अस्तित्वतक उसीमें मिला देते हैं। कुस्तुनतुनियामें लोगोंने मुस्तफा कमालका एक बृहत् चित्र लेकर जुलूस निकाला। मसजिदके पास अपने देशके त्राता और रक्षकके प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धा और भक्ति प्रकट करने तथा उनके दीर्घ जीवन-

अधिकारोंके साथ मुसलमान-जगतके धर्माचार्य अर्थात् खलीफा बने रहें तो हमें कोई दुःख नहीं है। सुल्तानके साथ इस विषय-में परामर्श करने तथा इस विषयका निर्णय करनेके लिये अङ्गोरा सरकारकी ओरसे रिफत पाशा सुल्तानके पास भेजे गये थे। सुल्तान तथा रिफत पाशामें इस विषयमें करीब चार घण्टेतक बातें हुई और सुल्तानने रिफत पाशाकी बात मान ली।

इस प्रकार उनकी स्वीकृति लेकर उन्हें केवल धर्माचार्यका कार्य भार सौंपा गया था और यह भी स्थिर हुआ था, कि भवि-ष्यमें खलीफाकी गद्दीपर उसमानिया खानदानके लोगही बैठा करेंगे। सुल्तानने भी यह बात मान ली थी, परन्तु पीछे वे आप ही आप अङ्गरेजोंके शरणापन्न होनेके लिये देश छोड़नेका विचार करने लगे। अन्तमें अङ्गरेजोंने उन्हें अपने युद्ध पोतमें सवार कराकर माल्टा पहुँचा दिया।

इसके बाद अब तुर्कोंने सुल्तान अब्दुल मजीदको खलीफा निर्वाचित किया है। सुल्तान या खलीफाके इस निर्वाचन कार्यमें मुसलमान धर्मग्रन्थोंके आदेशोंका पालन भी किया गया है।

साराश यह, कि खिलाफतके लिये मुस्तफा कमाल और रिफत पाशाके हृदयमें बहुत सम्मान है। पर अभी अभी कायरकी तरह भाग छूटनेवाले सुल्तान वहीद् उद्दीनके विषयमें उनके हृद्-यमें ज़रा भी आदर नहीं है। उनका दृढ़ विश्वास है, कि उक्त सुल्ताननेही तुर्कों का सर्वनाश किया है। अतएव तुर्कों-का द्वेष खलीफा नामक व्यक्तिके विषयमें है—खिलाफतके

विषयमें जरा भी नहीं। यह बात उक्त विवेचनसे भली भाँति समझमें आ जाती है। खलीफाके हाथमें राजकीय सत्ता होनेके कारण वह धार्मिक सत्ताकी ओर ध्यान नहीं देता था। अतएव राजकीय सत्ता खलीफाके हाथोंमेंसे लेकर या उनके हाथसे राज्य सत्ता छुडवाकर, उनको उनके कर्त्तव्यका ज्ञान मुस्तफा कमालने करा दिया, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा। पहले खलीफा चुने जाते थे, खलीफाकी गद्दी वश परम्परागत नहीं है। ऐसी हालतमें कमालने किसी भी धार्मिक मर्यादाका उल्लंघन नहीं किया है, बल्कि खिलाफतकी धार्मिक सत्ताको अवाधित रूपसे चलानेके लियेही राष्ट्रकी तमाम जनताको तैयार किया है। तुर्क तो क्या, पर संसारपर जो जो इस्लामी राष्ट्र हैं, वे सब के सब खिलाफतकी रक्षाके लिये अपने अपने सैन्यके साथ, मौका आनेपर खडे हो जायेंगे। अत अन्य धर्मावलम्वी राष्ट्रोंको उसकी चिन्ता करनेका कोई प्रयोजन नहीं। इसमें सन्देह नहीं, कि कमालने दोनों सस्थाएँ अलग अलग करके, बडी समझ दारीका काम किया है। धार्मिक सत्ता चाहे जितनी पूज्य और पवित्र क्यों न हो, पर उसे राजकोय सत्ताके साथ जोड देना, सदा अनिष्टकर होता है। समयके अनुसार राजकीय आकाक्षा एकदम आगे बढना चाहती है, परन्तु धर्मकी दृष्टि अतीत कालकी ओर लगी होती है, अतएव दोनों सत्ताओंमें खींचा-तानी हुआ करती है।

इसके अतिरिक्त पाश्चात्य राष्ट्रोंके साथ चलनेके लिये पूर्वीय

राष्ट्रोंको अपने धार्मिक भावके कुछ अशको ताकपर रख देना पडता है। अभी अभी तुर्क राष्ट्रपर जो आफत आयी थी, उसका कारण भी उभय सत्ताओंका एक हाथमें रहनाही था। तुर्कोंने जिस प्रकार दोनों सत्ताओंको अलग कर दिया, उसी प्रकार वे राजधानीके नगर भी अलग कर देना चाहते हैं अर्थात राजकीय सत्ता अपने हाथमें लेकर अङ्गोरा सरकार अङ्गोराको अपनी राजधानी बनाये और खिलाफतकी गद्दी कुस्तुन-तुनियामेंही रहे। कुस्तुनतुनिया यूरोपके पासही होनेसे उसपर सरलतासे आक्रमण हो सकता है और वहाँपर तुर्कों की तमाम शक्ति एकत्र होनेसे उसकी नाडियाँ एकदम अकडसी जाती हैं। यह परिस्थिति भविष्यत्में न रहने पाये, इसलिये वहाँसे राज धानी उठा देना जरूरी है। कुस्तुनतुनियामें केवल खिलाफतकी गद्दी रहेगी। अतएव उसपर कोई यूरोपियन राष्ट्र आक्रमण करना चाहे, तो संसारके तमाम इस्लामी राष्ट्रोंको युद्धके लिये निमन्त्रित करनेकासा होगा। इस प्रकार धार्मिक और राजकीय सत्ताएँ अलग अलग हो जानेसे दोनोंकी भली भाँति रक्षा होगी और तुर्कों की भावी आकाक्षाओंको आगे बढनेका अवकाश भी मिल जायेगा। इस कार्यके होनेसे हिन्दुस्थान और अन्य राष्ट्रोंको धार्मिक दृष्टिसे कुछ भी हानि नही हुई है।

गाजी मुस्तफा कमालकी यह संक्षिप्त जीवनी तो क्या, तुर्कों की इस वर्तमान विजयकी कथा तथा उसके उद्धार कर्त्ताके महान् जीवनकी थोड़ीसी बातें, जो कहनी थीं, समाप्त हो चुकीं।

तुर्कों की इस विजयके साथही भारतकी भी एक विकट समस्या हल हो गयी। यह समस्या खिलाफत की थी। इस विषयमें हमारे सुप्रसिद्ध पत्र 'प्रताप' के सम्पादक महोदयने अपने अग्रलेखमें जो महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं, उसे हम नीचे उद्धृत कर देना आवश्यक समझते हैं —

"खिलाफतका भविष्य अन्धकारमें था; भारतके खिलाफत आन्दोलनपर ठण्ढा पानी डालनेके लिये ब्रिटिश सरकार यह विश्वास दिला दिया करती थी, कि खिलाफतकी समस्या जल्दी—बहुत जल्दी—सुलझा दी जायेगी, भारत सरकार इस सम्बन्धमें साम्राज्य सरकारपर दबाव डाल रही है, बहुतही कड़ी भाषामें लिखा पढ़ी कर रही है और साम्राज्य सरकार भी इस समस्याको टर्कीके पक्षमें सुलझानेके लिये भरपूर कोशिश कर रही है।"

"महीनों पर महीने बीतते चले जाते थे, परन्तु होता कुछ

नहीं था। ऐसा मालूम होता था, मानों ब्रिटिश सरकारने अपने मिनट, घण्टे और महीने बदलकर ब्रह्माके पल, घडी तथा महीनेके बराबर कर लिये हैं। खिलाफतकी समस्याके सम्बन्धमें लोगोंकी निराशा और उनका असन्तोष बढ रहा था। उधर ग्रीस और ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल मिलकर एक मजेदार नाटक खेल रहे थे। इसी समय कमाल पाशाने अपनी तलवार सम्हाली। ग्रीकोंको आगे बढते देख वह रणबाँकुरा रण क्षेत्रमें जा डटा। उसने अपनी नीली नीली तेज आँखोंसे देखा, शत्रुओंके पैर उखड गये—विजय उसके चरणोंपर आ लोटी। समस्त भू मण्डल गूँज उठा—"कमालपाशाने कमाल किया।" निस्सन्देह कमालपाशाके विषयमें यह कहावत अक्षरश चरितार्थ होती है, कि 'वह आया, उसने देखा और विजय प्राप्त की'।

*　　*　　*　　*

कमालने कुछही दिनोंमें खिलाफतकी समस्या सुलझा दी। इसके पहले जब हमारे कुछ मुसल्मान भाई यह कहा करते थे, कि खिलाफतकी समस्याको तो कमाल पाशाकी तलवारही सुलझायेगी, तब हमारे कुछ अन्य भाई उनकी हँसी उडाया करते थे, परन्तु आज वे यह देखें, कि कौन गलती कर रहा था। कमालपाशाकी तलवारने बडे बडे गुल खिलाये। उसकी धाकसे न केवल ग्रीक सैनिकही पीठ दिखाकर भागे, बल्कि समस्त यूनान थर्रा उठा! उसकी चमकसे ब्रिटिश नीतिका भण्डा फोड हुआ और मि० लायड जार्जका सारा खेल बिगड गया—उनकी शान धूलमें मिल गयी। गाजी मुस्तफा कमाल पाशाकी

तलवारने यह सिद्ध कर दिया, कि नैपोलियनके शब्दोंमें—ईश्वर भी उन्हींका पक्ष लेना है, जिनकी ओर सच्चे और अच्छे अतएव चलो सैनिक होते हैं। उसने यह भी सिद्ध कर दिया, कि आततायियोंके अत्याचारोंसे त्राण पानेके लिये अहिंसात्मक असहयोगके सिवा संसारमें और भी अनेक साधन मौजूद हैं; फिर चाहे उसके इस विजयी हिंसात्मक सत्याग्रहको 'हत्याग्रह' के नामसे-ही क्यों न पुकारा जाये! हम यह मानते हैं, कि देशकी वर्त्तमान अवस्थामें (As India is circumstanced) हमारे लिये अहिंसात्मक असहयोगका सच्चा और असली स्वरूपही एक मात्र अमोघ अस्त्र है, परन्तु हम यह माननेके लिये तैयार नहीं, कि अहिंसात्मक असहयोग या अहिंसात्मक सत्याग्रहके सिवा और सब साधन और समस्त मार्ग अवश्य ही, व्यर्थ और पापमय हैं। हमारे इस न माननेको कमाल पाशाके कमालने पूर्णतया प्रमाणित कर दिया है।—गाज़ी कमालपाशाका कमाल स्वराज्य सुधाके प्यासे भारतवासियोंके लिये अनेक शिक्षाओंसे भरा हुआ है।"

अन्तमें जगदीश्वरसे हमारी यह प्रार्थना है, कि वे तुर्कोंके त्राता गाज़ी मुस्तफा कमालपाशाको दीर्घायु करें तथा उनके जैसे वीर, धीर और गम्भीर विचारोंके पुरुषोंको उन देशोंमें जन्म दें, जहाँके लोगोंका कोई उद्धार-कर्त्ता न हो।

शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इस उपन्यासमें भारत-सम्राट "अकबर" के समयकी कितनी ही मर्म-स्पर्शी घटनाओंका सचित्र वर्णन किया गया है। सम्राट अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इस्कन्दर" का गुप्त भावसे "ईदलगढ़ दुर्ग" पर चढ़ाई करना भयानक अंधेरी रातके समय चुपचाप दुर्गपर अधिकार जमा कर दुर्गाधिपति 'सोहानी' को कैद करनेकी चेष्टा करना, सोहानी की वीर-पत्नी "गुलशन" के अपूर्व रूप लावण्यपर मुग्ध हो कर्तव्य विमुख होना, पतिव्रता गुलशनका इस्कन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, इस्कन्दरका पीछा करना, सोहानीका पहाड़से गिर कर प्राण त्याग करना,

गुलशनकी फरियाद पर अकबरके दरबारसे इस्कन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, गुलशनकी सहायतासे इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, बालवाधिपति "बाजबहादुर" का गुप्त घातकके आक्रमणसे बचाना, बाज बहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर लेजाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रूपिया" पर इस्कन्दरका आशिक होना दोनोंमें विवाह होना आदि बहुतसी अपूर्व घटनायें हो गयी हैं। मूल्य २), रेशमी जिल्द २॥) रु०

जासूसी कहानियां—यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें ५ उपन्यास दिये गये हैं—(१) माढ़ आठ खून, (२) सतीका बदला, (३) नीलाम घरका रहस्य (४) घुड़दौड़का घोड़ा (५) चोर और चतुर। दाम सिर्फ ॥=) आना।

पता—आर, एल, बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

❀ जासूसी कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास

पाठक! हम दावेके साथ कहते हैं, कि आजतक आपने ऐसा उपन्यास न पढ़ा होगा। इसमें भाडो नामक एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी कैसी करामातें दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "लार्ड" जैसे बड़े ओहदेपर पहुंचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। साथ ही इस उपन्याससे यह शिक्षा भी खूब मिल सकती है, कि मनुष्य [illegible] और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। हमारा एकान्त अनुरोध है, कि यदि आपको उपन्यासोंमें कुछ भी शौक न हो, तो भी आप इसे अवश्य पढ़ें, आपको पछताना न पड़ेगा, क्योंकि इसमें भाग्य-परिवर्त्तनका ऐसा सुन्दर चित्र अङ्कित किया गया है, कि पढ़कर निकम्मे मनुष्य भी कुछ दिनोंमें अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसमें फोटोके सुन्दर सुन्दर ३ चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥), रेशमी जिल्द २) है।

महेन्द्रकुमार

ऐय्यारी और तिलिस्मका अनूठा उपन्यास।

ऐय्यारी और तिलिस्मी खेलोंसे भरा हुआ आश्चर्य व्यापारों और लोमहर्षण घटनाओंसे छुआ हुआ यह अनूठा उपन्यास पढ़ने ही योग्य है। इस उपन्यासमें ऐसी ऐसी ऐय्यारियां खेली गयी हैं, कि पढ़कर पाठक फड़क उठेंगे। इस उपन्यासके पढ़ते समय पाठकोंका खाना, पीना, सोना, बैठना भूल जायगा। इतनेपर भी १०० पेजके बड़े पोथेका दाम, सिर्फ ५) है।

—, एल, बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

दुर्गादास

वीर-रस-पूर्ण सचित्र ऐतिहासिक नाटक।

बङ्ग साहित्यमें जिस नाटककी धूम मच गयी थी, बङ्ग-भाषामें जिस

नाटकके अनेकों संस्करण हाथो हाथ बिक गये थे, कलकत्तेके बङ्गला थियेटरोंमें जिस नाटकके खेलते समय दर्शकोंकी स्थान मिलना कठिन हो जाता था वही चुहचुहाता हुआ वीर-रस प्रधान ऐतिहासिक नाटक हिन्दीमें छपकर तय्यार है। वास्तवमें यह नाटक नाटकोंका 'मुकुट मणि' है। इसमें "औरङ्गजेब" महाराणा राजसिंह, भीमसिंह, राणा उदयसिंह, शिवाजीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति "शम्भाजी" और शाहजादे अकबर, आजम तथा कामबखश प्रभृतिके इतिहास-प्रसिद्ध भीषण युद्धोंका वर्णन बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें किया गया है। मुगल-रमणियों और राजपूत ललनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही बारीकीसे खींचा गया है। इसे पढ़ और खेलकर पाठक इतने खुश होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक खेलने और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे। पहलो बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी सज-धजसे छापा है और हाफटोन फोटोके छपे कितने ही सुन्दर सुन्दर रङ्गीन चित्र भी दिये हैं जिन्हें देखकर आप फड़क उठेंगे। दाम सिर्फ १॥), रेशमी जिल्द व धीका २) रुपया।

खूनी औरत

इसमें एक डाक्टरके मेसमेरिजम वा भौतिक विद्याका बयान ऐसी विचित्रतासे किया गया है कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ १।) रु०

डबल जासूस

- सचित्र जासूसी उपन्यास :-

इसमें नरेन्द्र और सुरेन्द्र नामक एक ही सूरत शक्लके दो नामी जासूसोंकी अनोखी आश्चर्यजनक कारवाइयोंका वर्णन किया गया है, जिसके पढ़नेसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह उपन्यास रहस्योंका खजाना, कौतुकका आगार और जासूसी करामातोंका भण्डार है। दोनों जासूसोंने किस बहादुरीसे चोरों, दगाबाजों और खूनियोंको गरफतार कर "सुशीला" और "मनोरमा" नाम्नी दो सम्भ्रान्त रमणियोंको बचाया है, कि मुंहसे 'वाह वाह' निकल पड़ती है। कलकतिया चोरोंके लक्ष्मी भण्ड का अद्भुत रहस्य, नाव पर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, कम्पनीबागमें भीषण तमंचे बाजी, एक वीरान खण्डहरमें दुष्टोंके

दलकी विचित्र गिरफतारी, मुर्दाघरमें बेनामी लाशका अनूठे ढङ्गसे पहचाना जाना, नदीके किनारे दो असली और दो नकली जासूसोंका द्वन्द युद्ध,— आदि बातें पढ़कर आप दङ्ग न रह जाय तो बात ही क्या है? इसमें सुशीला नाम्नी सुन्दरीका एक तिनरङ्गा चित्र देखने ही योग्य है! इसके अलावा और भी सुन्दर सुन्दर ३ चित्र दिये गये हैं। दाम १॥) जिल्द व धीका २) रु०

मायामहल

इसमें जो पुरुषोंकी अपूर्व ऐय्यारियाँ, आश्चर्यजनक तिलिस्मातों, भयावह लड़ाइयों और पवित्र प्रेमका बड़ाही सुन्दर चित्र खींचा गया है, दाम १)

आर०एल, बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

आदर्श चाची

शिक्षाप्रद सचित्र गार्हस्थ उपन्यास।

हिन्दी संसारमें यह पहला ही उपन्यास छपा है, जिससे समाज और देशका वास्तविक उपकार हो सकता है। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे सभी इस उपन्याससे मनोरञ्जनके साथ ही साथ आदर्श शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे। प्राय देखा गया है, कि स्त्रियोंको अनबनसे बड़े-बड़े सुखी, समृद्धिशाली परिवार तहस-नहस हो गये हैं, बाप बेटेसे छूट गया है, भाई भाईमें चिरशत्रुता हो गयी है चाचा भतीजेमें बैर हो गया है और बना बनाया लाखका घर खाकमें मिल गया है। यह उपन्यास इसी प्रकारकी घटनाओंको सामने रखकर लिखा

गया है। एकबार इस उपन्यासको पढ़ लेनेसे आपसके बैर भाव और दुराग्रह-द्वेषका नाश हो जाता है। मूल्य केवल १।) रेशमी जिल्द १॥)

इसमें ६ रंगीन चित्र हैं। **राजसिंह** सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इसमें वीर शिरोमणि महाराणा राजसिंह और सम्राट औरङ्गजेबके उस लोमहर्षण युद्धका वर्णन है, जिसमें असंख्य वीरोंकी प्राणाहुति हुई थी। इस महायुद्धमें राजसिंहने दुर्दान्त औरङ्गजेबको बड़ी बहादुरीसे परास्त कर 'रूप नगर' की राज कन्या "चञ्चल-कुमारी" की धर्म्म रक्षा की थी। इसमें बारह भाड़ी और राजपूती घरानोंकी बहू-बेटियोंके बहुरंगी चित्रोंको देखकर तबियत फड़क उठती है। दाम २) र गीन जिल्द २।) रेशमी जिल्द व बीका २।)

भीषण डकैती

यह उपन्यास बङ्ग साहित्यके गौरवस्तम्भ, जासूसी उपन्यासोंके एक मात्र कर्णधार श्रीयुत 'बाबू पांचकौड़ी दे'की विचित्र लेखनीका सजीव प्रतिबिम्ब है। इसमें "मिष्टर रोटलेण्ड" नामक एक अमेरिकन जासूसकी अपूर्व्व कार्रवाइयों का ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पुस्तक एकबार उठाकर फिर छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। इस उपन्यासके प्रत्येक परिच्छेद, प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक पैराग्राफ, प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्दमें दिलचस्पी और मनोरञ्जकता कूट कूटकर भरी गयी है। साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। इसमें इस उपन्यासकी प्रधान नायिका 'मिसस तोरावली' का एक ऐसा अपूर्व्व तिनरङ्गा चित्र दिया गया है, कि देखते ही मन हाथसे निकल जाता है। दाम सिर्फ १।) सजिल्द २) रु

डाक्टर साहब

सचित्र जासूसी उपन्यास

इसमें लण्डनके विख्यातनामा अस्त्र चिकित्सक, अद्भुत क्षमताशाली 'डाक्टर क्यू' की उस भीषण रसायन विद्याका चमत्कार है, जिसके द्वारा वह बातकी बातमें जिन्देको 'मुर्दा' और मुर्देको 'जिन्दा' बनाकर अपना इच्छित मतलब गांठ लेता था। इस डाक्टरके गुप्त अत्याचारोंसे सारा इङ्गलैण्ड दहल उठा था और इसे लोग "जादू विद्या" "भूत-विद्या" आदि समझने लगे थे। अन्तमें महाके विलक्षण शक्तिशाली सुप्रसिद्ध जासूस 'मिष्टर ब्लेक' ने जिस प्रकार उसका रहस्य-भेदकर उस 'डाक्टर क्यू' को गिरफ्तार किया है, वह पढ़नेही योग्य है। सुन्दर सुन्दर दो चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ १।)

पता—आर, एल, बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

जासूसी चक्कर

सचित्र जासूसी उपन्यास

लेखकने इस उपन्यासमें बम्बईको पारसी-समाजका बड़ा ही विचित्र रहस्य खोला है। कुछ दिन हुए बम्बईके 'हरमसजी' नामक एक धनाढ्य पारसी सज्जनके खजानेमें विचित्र रूपसे एक लाखकी चोरी हो गयी, साथ ही खुली सड़कपर भाड़ागाड़ीमें एक पारसी युवक जानसे मार डाला गया। इन दोनों घटनाओंको लेकर बम्बईमें बड़ी हलचल मच गयी। इस और चोरीके इलजाममें "रुस्तमजी" नामक एक पारसी गिरफतार हुआ। इन दोनों घटनाओंकी जांचके लिये सर्कारको ओरसे बड़े बड़े ४ जासूस छोड़े गये। जांच धूमधामसे होने लगी, फिर कैसे चार दफे जासूसोंने सुन्दरी 'रतनबाई'की सहायतासे पता लगाया, कैसे निरपराध रुस्तमजीने अदालतसे

छुटकारा पाया, कैसे नकली विवाहके समय, भीषण व्यक्ति बर्जोरजी गिरफ्तार किया गया, आदि घटनायें इस खूबीसे लिखी गयी हैं, कि बिना समाप्त किये पुस्तक छोड़नेको इच्छा ही नहीं होती। खून, चोरी, जाल, जुआ चोरी, सभी बातें दिखलाई गयी हैं। हाफटोमके ५ चित्र भी हैं। मूल्य २॥) सजिल्द ३,

सचित्र गो-पालन-शिक्षा

इसमें गो बछड़ोंकी पहचान, पालन, दवायें और दूध बढ़ाने तथा दूधसे बनानेवाले पदार्थोंकी बनानेके ऐसे सरल तरीके लिखे गये हैं, कि मनुष्य कुछ ही दिनोंमें मालामाल हो जा सकता है। गाय आदि पालनेवालोंको इसे अवश्य खरीदना चाहिये, २ चित्र भी दिये हैं। दाम केवल ।=) आना।

नराधम

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इसमें एक मित्रद्रोही डाकरको स्वार्थ परताका बड़ा ही सुन्दर खाका खींचा गया है। डाकरका मित्रकी स्त्रीसे गुप्त प्रेम कर अन्तमें उसका खून करना, अपनी दूसरी प्रेमिकासे दानकी बातचीत करते समय डाक्टरके मित्रका छिपकर सुनना और फिर उसे धमकाना, डाकर और उसकी प्रेमिकाका मित्रको धोखा देकर फांसीपर लटकाना, मित्रकी लाश का एकाएक गायब हो जाना, दो चोरोंका भेद खोल देनेका भय दिखा डाकर डाक्टरका धमकाना, डाकरको एकको भट्ठीमें फांककर मार डालना। मुरदा लाशका एकाएक जिन्दा हो जाना, आदि यहाँ आश्चर्यजनक बातें लिखी गयी हैं, दाम सिर्फ १=) जिल्द म धोका १॥=)
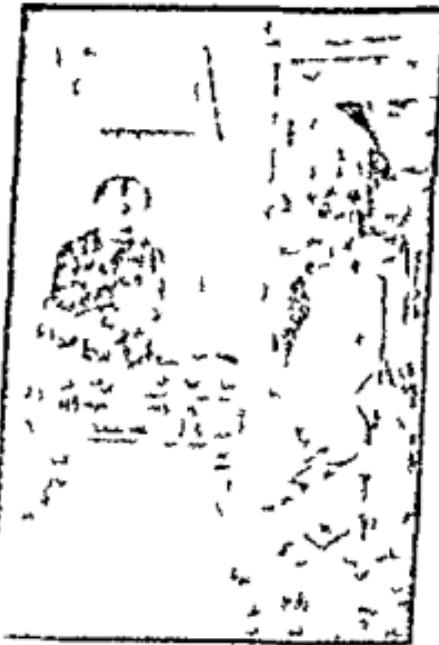
शशिबाला

शिक्षाप्रद जासूसी उपन्यास।

इसमें एक सच्चरित्रा स्त्रीने किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दूर-दर्शितासे अपने कुपथगामी स्वामी और कितनेही मनुष्योंको सुपथगामी बनाया है, वह पढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारस्वामीका तिलिस्मी मठ, जोगिनीकी अद्भुत चातुरी, वीरसिंहकी विलक्षण वीरता, शशिबालाकी अद्वितीय सुन्दरता आदिका हाल पढ़कर आप अवाक् रह जायगे। यह शिक्षाप्रद उपन्यास स्त्री, पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीके पढ़ने योग्य है। दाम सिर्फ ॥) आना।

जासूसी पिटारा--इसमें बड़े ही रहस्य जनक ५ जासूसी उपन्यास हैं—(१) गुलनारमहल, (२) फूल-बेगम, (३) विचित्र जौहरी, (४) असली हजारकी चोरी, (५) स्त्री है वा राक्षसी? दाम ॥)

पता—आर, एल, बर्म्मन एण्ड कों०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

१२ बहुरंगे चित्रों सहित बड़ी सज-धजसे छपकर तय्यार है।

सती-पार्वती—में शङ्कर प्रिया, गणेश-जननी सती शिरोमणि भगवती "सती पार्वती" के दोनों अवतारोंकी कथा बड़ीही सरल, सरस, सुन्दर और मधुर भाषामें लिखी गयी है।

सती-पार्वती—के पहले अवतारमें सतीका बाल्य-काल, सतीकी शिक्षा, सतीकी तपस्या, सतीका शिव-दर्शन, सतीका स्वयंवर, सतीका विवाह, दक्षप्रजापतिके यज्ञमें सतीका शरीर त्याग, शिवके दूतों द्वारा यज्ञ विध्वंस और शिवका शोक प्रकाश आदि कथाएं हैं।

सती-पार्वती—के दूसरे अवतारमें "पार्वती" का जन्म, पार्वतीका बाल्यकाल, पार्वतीका शिव पूजन, मदन भस्म, पार्वतीकी तपस्या, पार्वतीकी प्रेम-परीक्षा, शिव पार्वतीका विवाह और गणेश तथा कार्तिकेयकी उत्पत्ति आदि कथाएं विस्तार पूर्वक लिखी गई हैं।

सती-पार्वती—शिवपुराण, देवीभागवत कुमारसम्भव और पद्म-पुराण आदिके आधारपर लिखी गयी है और उत्तमोत्तम घटना पूर्ण १२ चित्र देकर इसकी शोभा सौगुनी बढ़ा दी गयी है।

सती-पार्वती—बालक बालिकाओं और बहू-बेटियोंको उपहारमें देने तथा कन्या-पाठशालाओंमें पढ़ाने योग्य अपूर्व पुस्तक है, क्योंकि इसके पढ़नेसे स्त्री धर्म्मकी पूरी शिक्षा मिलती है। मूल्य कवर ३), रंगीन जिल्द २।) और सुनहरी रेशमी जिल्द २॥) है।

पता—आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०,
३७१ अपर चीतपुर रोड कलकत्ता।

रमणी रत्न मालाका ७ वाँ रत्न

सती बेहुला

१२ रङ्ग-बिरङ्गे चित्रों सहित छपकर तैयार है।

इसमें भारतवर्षके भूतकालकी दो सतियोंके पवित्र चरित्र बड़ीही सुन्दरताके साथ लिखे गये हैं। इनमें पहली सती "मनसा देवी" हैं, जो देवादिदेव महादेवकी मानसिक पुत्री, महर्षि-जरत्कारुकी धर्म्म-पत्नी और नाग-लोककी शासन-कर्त्री हैं। इनकी कठिन तपस्या, प्रगाढ़ पति-भक्ति और अद्भुत-आत्म-त्याग देखकर अवाक् रह जाना पड़ता है। दूसरी सती—इस उपाख्यानकी प्रधान नायिका "सती बेहुला" हैं, जिनका जीवन-वृत्तान्त बड़ाही अनूठा, आश्चर्य्य-जनक, कौतूहल-वर्धक, करुणा-पूर्ण और चित्ताकर्षक है।

सती शिरोमणि "सावित्री"की भाँति बेहुलाने भी अपने मरे हुए पतिको जिला लिया था। परन्तु "सावित्री" और "बेहुला" की कार्य्य प्रणालीमें बहुत अन्तर है। "सावित्री देवी" ने अपने कठोर पातिव्रत धर्म्मके प्रतापसे एकही रातमें स्वयं यमराजको परास्तकर अपने पतिका प्राण-दान पाया था और "बेहुला" अपने मृत पतिका शरीर कदली-खम्भके बेड़ेपर रख, नदीमें बहती-बहती छ महीने बाद स-शरीर स्वर्गमें पहुंची थी और वहाँ उसने तेंतीस कोटि देवताओंको अपने अद्भुत नाच गानसे प्रसन्नकर पतिकी प्राण भिक्षा पायी थी! नदीमें बहते-बहते उसके पतिकी लाश सड़ गयी थी, उसमें कीड़े पड़ गये थे और अन्तमें मांस गल-गलकर गिर गया था! परन्तु इतनपर भी 'बेहुला'ने उसे न छोड़ा! उसने पतिकी हड्डियाँ धो धोकर आँचलमें बाधलीं और अन्तमें देव-लोकसे पतिको जिलाकर ही लौटी! यही नहीं, बल्कि वह अपने पहलेके मरे हुए छ जेठोंको भी जिला लायी। और इस प्रकार उसने अपनी छहों विधवा जिठानियोंको पुनः सधवा बना दिया! जिस स्त्रीने ऐसी महान सतीके सुविमल चरित्रसे कुछभी शिक्षा न ग्रहण की, उसका जीवनही व्यर्थ है। रंग बिरंगे १२ चित्र भी हैं, दाम २।), सुनहरी जिल्द २॥) रेशमी जिल्द ३॥)

इतिहास ग्रन्थ मालाका १ ला ग्रन्थ
वीर-विदुषी १२ मुसल्मान बेगमोंका चरित्रागार
मुस्लिम महिला-रत्न
रंग विरंगे १३ चित्रों सहित छपकर तय्यार है।
मुस्लिम-महिलारत्न सुन्दरियोंका स्वराज्य, अप्सराओंका अखाड़ा, वीराङ्गनाओंकी रंगभूमि सतियोंका समाज और भारतीय मुसल्मान-ललनाओंका लीला निकेतन है।
मुस्लिम-महिलारत्न में सुल्ताना रजिया बेगम मल्का चांद बीबी नूरजहाँ और बीदरकी बेगमके बड़ेही अनूठे चरित्र लिखे गये हैं, जिन्होंने अपने शौर्य, साहस, पराक्रम और वीरत्वसे सारे मुगल-साम्राज्यमें हलचल मचा दी थी।
मुस्लिम-महिलारत्न में वीर पत्नी गुलशन, रूपवती बेगम जहाँनआरा, रौशनआरा और जेबुन्निसा बेगमके ऐसे मनोरञ्जक चरित्र लिखे गये हैं, जिनकी पति भक्ति, पितृ भक्ति वि